

अर्पणपत्रिका.

स्वर्गस्थ श्रावक रत्न शेठ नरोत्तम-

दास नागजी.

जेनुं टुंकुं जीवन आदरणीय, अने अनुक-रणीय हतुं, अने लघु वयथीज जेनुं मन अनेक सद्गुणोथी भरपूर हतुं, जेओनी धर्म तरफनी श्रद्धा द्रढ हती, जिन आगमना जेओ अभ्यासी हता, अने जिन भगवाननी भक्तिमां जेओ घणा प्रेमी हता, पोताना श्रावक बंधुओमां धार्मिक ज्ञाननो प्रचार जोवाने जेओ हमेशां उत्सुक हता, एवा श्री मांगरोळ निवासी स्वर्गवासी श्रावक रत्न शेठ नरोत्तमदास नागजीने अमो आ पुस्तक सद्भावथी अर्पण करीए छीए.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

श्रेष्ठीवर्य शेठ नरोत्तम नागजी मोतीचंदनी जींदगीनो टूंक वृत्तांत.

आ वीर नरनो जन्म श्रीमुम्बापुरी मध्ये संवत १९३६ ना पोष वद १० ने दीवसे थयो हतो. शेठ मोतीचंद देवचंदना श्रीमान् कुटुंबमां लाड साथे उछरतां बीजना चंद्रनी पेठे वृद्धि पामतां पामतां तेमने ब्रह्मचर्यावस्था प्राप्त थइ. तेमना पूज्य पितामह तथा पिताश्रीनी खंत अने देखरेख नीचे गुजराती तेमज अंग्रेजी भाषानुं समयोचित ज्ञान मेळववामां तेओ फत्तेहमंद नीवड्या हता. जैन तत्त्व ज्ञानमां पण तेओ कुशळता धरावता हता. गीत वार्जीत्राकादिनुं ज्ञान पण तेओए संपादन करेलुं हतुं. आ ब्रह्मचर्यावस्थानो समय पुरो थतां संवत १९५१ ना वैशाख मासमां पोतानी ज्ञातिना रीवाज मुजब पोतानी व्यवहारिक आबरु प्रमाणे घणा आडंबर तथा धामधुमथी ज्ञातिमां उंच कुळमां गणाती कन्या नामे नंदकुंवर साथे तेमनां लग्न करवामां आव्यां हतां. एटले पंदर वरसनी उम्मरथी तेओए गृहस्थावासमां प्रवेश कर्यो हतो. आ समयथी तेओना गृहस्थ तरीकेना गुणो व्यक्त जणावा लाग्या हता. धार्मिक वृत्ति पण द्रढ थती जणाती हती. सत्संग पूज्य पूजन इत्यादि मार्गानुसारीना गुणो तेमां

छे. वळी [illegible] छा. [illegible] आवक
[illegible] तेने [illegible] नाम [illegible]
[illegible] छे. [illegible]
[illegible], [illegible] इत्यादि [illegible]
[illegible]
[illegible] छे.

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] छे.

[illegible]

देवनी नवांग भाव पूजा रचवामां पण तेओ पांडित्य धरावता हता, उपरांत भाव पूजाना जुदा जुदा भेदोमां पण तेओ पटुत्वने धारण करवा हता.

आवी उच्च प्रकारनी शुद्ध वृत्ति होवा उपरांत व्यवहारनां मुख्य साधनरूप द्रव्यने मेळववामां पण तेओ कुशळ हता. पोताना पितामह तथा पिताश्रीए ग्रहण करेला अर्थ शास्त्रना व्यवहारमांज तेओए पण एक न्यायोपार्जित द्रव्य मेळवनार तरीके शरुआत करी हती, अने धीमे धीमे एक बाहोश अर्थ शास्त्रना अनुभवी तरीके झळकी निकळवानां चिन्हो तेओमां जणातां हतां. आ रीते धर्मपूर्वक व्यवहार चलावतां लगभग अगीयार वरस थवा आव्या काळ पोतानुं काम कर्या करे छे. दरेक अवस्थानो अंत होय छे. एवा कुदरतना कानुनोने अनुसरी कर्म परिणामि महाराजाए पोतानी दाहक द्रष्टि आ कोमळ पुष्पाकार नर तरफ फेरवी, अने काळ परिणति राणीनी प्रेरणाथी स्वरसुंदरीओए करेला हावभाव अने कटाक्षथी प्रेमांतकग्रस्त थयो होय, तेम टुंक मुदतनी व्यथा अनुभवी, अमर स्त्रीओए करेला संकेतने अनुसरीने होयनी, जाणे, तेम आ युवान नर रत्न पोताना पितामह, मातामह, पिता, माता, भार्या, भगिनी, त्रण पुत्री, एक पुत्र, अने सगांसंबंधी तेमज मित्र मंडळोने शोक सागरमां डुबतां मुकीने सं. १९६२ ना भादरवा वद ७ ने मंगळवारनी पण अमंगळ रात्रिना दश वागे अंधकारने समये



प्रस्तावना.

श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी अमारा तरफथी सिद्ध थइ चुकी छे, तेनुं आ बीजुं पुस्तक " श्री जैन धर्मनी बीजी चोपडी " छे. पहेली चोपडीनी प्रस्तावनामां आ वांचनमाळा प्रसिद्ध करवानो अमारो हेतु स्पष्टपणे जणाव्यो छे, तेथी अत्र ते संबंधी पुनः विवेचन करवुं, ए काळक्षेपन करवा जेवुं छे, एम समजी ते करता नथी.

आ जैन धर्मनी बीजी चोपडी सुद्धां श्री जैन धर्म वांचनमाळानां अमारा तरफथी कुल ६ पुस्तको प्रसिद्ध थयां छे. प्रथमनां चार पुस्तको " श्री जैन धर्म प्रवेश पोथी " ए नामनां छे, अने पछीनां बे श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी अने बीजी चोपडी, ए मळी कुल ६ पुस्तको अमारी जैन वांचनमाळामां प्रसिद्ध थयां छे.

आधुनिक शाळाओमां विशेष करीने व्यावहारिक विषयोनुं

શિક્ષણ ભાગવાની મોજ છે, પણ ધાર્મિક શિક્ષણની યોજના કેળવણીમાં આવશ્યક નથી. ધંધા વ્યાવસાયિક શિક્ષણને ઉ[illegible] કરવો [illegible] શિક્ષણની [illegible] છે, એ [illegible] [illegible] કે, દરેક [illegible] [illegible] ભારતના [illegible] [illegible] શિક્ષણ [illegible] [illegible] [illegible] છે. [illegible] છે, પ [illegible] [illegible] ધર્મશિક્ષણ [illegible]

[illegible]

महानग्रंथो रच्या छे, तेनी पासे तो आ पुस्तको लेश मात्र पण नथी, तोपण ते महात्माओनां वचनोनेज अवलंबी चालु जमानाने अनुकुळ थाय, एवां पुस्तकोनी अमोए रचना करी छे, अने आ पुस्तक वांची श्रावक वर्ग धर्मनो बोध मेळववा शक्तिमान थशे, अने प्राचीन ग्रंथो वांचवा तेमनी अभिरुची वधशे, तो अमे अमारो श्रम सफळ थयो गणीशुं.

अमने कहेवाने हर्ष थाय छे के, आ वांचनमाळानां प्रसिद्ध थएलां पुस्तको जैन शाळाओमां घणे ठेकाणे चलाववां शरु थयां छे, अने विद्यार्थीओने ते द्वारा धार्मिक बोध सुगमताथी थइ शके छे, एवुं अनुभवमां आवेलुं छे. आ प्रमाणे घणे स्थळे शाळाओमां आ पुस्तको उपयोगी थइ पडवाथी तेमांनां केटलांक पुस्तकोनी पुनः आवृत्ति काढवानी जरुर पडी छे. आ प्रमाणे आ वांचनमाळा आपणी शाळाओमां उपयोगी थवाथी अमोने ते प्रसिद्ध कराववा संबंधी उत्साह वध्यो छे, अने अमो आशा राखीए छीए के, आ वांचनमाळानां बाकीनां पुस्तको पण जेम बने तेम जलदी तैयार करी, सद्गुणी श्रावको पासे अमे रजु करीशुं.

श्री जैन आगमना द्रव्यानुयोग, चरण करणानुयोग, कथानुयोग, अने गणितानुयोग, ए चार योगनुं मूळ तत्वरुप ज्ञान मेळववाने विद्यार्थीओने सुगम पडे, अने ते

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ए खंडमां कुल ५२ पाठो छे. तेमां नव तत्वनो संपूर्ण सार समावेलो छे. चोथा खंडमां कथानुयोगना पाठो आपेला छे, तेमां श्री अजितनाथ, सगर चक्रवर्ति वगेरेनां चरित्रो आपवामां आवेलां छे. चारे खंडमां कुल मळीने ८५ पाठो आवेला छे. आ पुस्तकनी पहेलांनां पुस्तकोमां आवेला कोइ कोइ पाठो वधारे विस्तारथी आ पुस्तकमां आपेला छे.

शिक्षक अने शिष्य बंनेने सुगम पडे, माटे प्रत्येक पाठने छेडे सारांश प्रश्नो आपेला छे. जो विद्यार्थीओ ते प्रश्नोना उत्तर यथार्थ आपी शके, तो पुस्तक मांहेनो सघळो विषय तेमना हृदयमां दृढ थाय एवी योजना छे. वळी शिक्षक वर्गने विद्यार्थीओना पाठ तैयार छे के नहीं, ते बाबतनी परीक्षा करवाने ए प्रश्नो घणा उपयोगी छे. पाठ रचवामां विद्यार्थीओथी केटलो विषय ग्रहण करी शकाशे, ते उपर खास लक्ष आप्युं छे, अने जे विषयो मोटा छे, तेना भागो पाडी बे त्रण के तेथी वधारे पाठो लखेला छे.

आ पुस्तक तैयार करवामां ते शुद्ध अने सरल थाय, तेने माटे अमोए खास ध्यान आपेलुं छे. विद्वान मुनि महाराजो अने श्रावक गृहस्थो पासे शोधावी दोष रहित थाय, तेने माटे प्रयत्न करेलो छे, छतां पण धर्मतत्वनो विषय घणो गंभीर छे, एथी आ पुस्तकमां जे

[illegible] હોત [illegible] હોત. તે સંબંધી અમો [illegible] [illegible] અને [illegible] [illegible] હોત. [illegible] નિર્ણય [illegible] કે, આ પુસ્તકમાં [illegible] હોત [illegible] તો તે [illegible] જેથી અમો [illegible] અને બીજી આવૃત્તિ [illegible] છું.

આ [illegible] [illegible]

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां मांगरोळवाळा शेठ नागजी मोतीचंदे पोताना स्व० पुत्ररत्न नरोत्तमदास, के जेमनुं जीवनचरित्र आ पुस्तक साथे अमोए प्रसिद्ध कर्युं छे, तेमना स्मरणार्थे रु. ३००) नी सहाय आपेली छे, जेथी आ पुस्तक प्रसिद्ध कराववाने अमो शक्तिवान थया छीए. अमो उक्त श्रावकरत्न शेठ नागजीभाइनो आ प्रसंगे आभार मानीए छीए, अने अन्य श्रावक गृहस्थोने उक्त शेठनो दाखलो लइ अमारा पुस्तक प्रसिद्धीना खाताने सहाय आपवाने माटे विज्ञप्ति करीए छीए.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

अनुक्रमणिका.

खंड १ ला.

खंड ४ थो.

श्री जैन धर्म बीजी चोपडी.

खंड १ लो.

पाठ १ लो.

सम्यक्त्व भाग १ लो.

सम्यक्त्व ए आत्मानो शुभ परिणामरुप गुण छे. ते सम्यक्त्व एवी वस्तु छे के, जे छद्मस्थ विगेरेने प्रत्यक्ष थइ शके तेम नथी. सम्यक्त्व आत्मानो शुभ परिणाम छे. सम्यक्त्वनो प्रभाव अलौकिक छे, जैन धर्मनी वधी महत्ता सम्यक्त्वने आश्रीने रहेली छे, जैन तत्त्वज्ञान संपादन करवानो उत्तम अधिकार सम्यक्त्वथी प्राप्त थाय छे. जो हृदयमां सम्यक्त्व होय तो ते जैन धर्मना रहस्यने जाणी शके छे. कुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनो परित्याग करी शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी आस्था राखवी, ते सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप छे. ते सम्यक्त्व ओळखवाने माटे सम्यक्त्वना जुदाजुदा सडसठ प्रकार छे. ते जैन संप्रदायमां 'समकितना सडसठ बोल' एवा नामथी ओळखाय छे. सम्यक्त्वनुं बीजुं प्राकृत नाम समकित छे, अने प्राये करीने जैन प्रजामां

ते नामथी ते वधारे प्रख्यात छे. समकितना सडसठ बोलनी गणना आ प्रमाणे थाय छे. सद्दहणाना चार भेद छे, लिंगना त्रण भेद छे, विनयना दश भेद छे, शुद्धिना त्रण प्रकार छे, दूषणना पांच प्रकार छे, प्रभावक आठ कहेवाय छे, भूषण पांच छे, लक्षणना पांच भेद छे, छ प्रकारे यतना कहेवाय छे, छ आगार कहेवाय छे, छ भावना अने छ स्थान कहेवाय छे. आवी रीते समकितना आश्रयी कुल मळीने सडसठ बोल थाय छे. दरेक श्रावकनां संताने आ सडसठ बोल बराबर समजीने याद करवा जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व ए शुं छे ? २ सम्यक्त्व प्रत्यक्ष थइ शके तेवी वस्तु छे के केम ? ३ सम्यक्त्वथी शो लाभ थाय छे ? ४ हृदयमां सम्यक्त्व होवाथी शुं थाय छे ? ५ सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप शुं छे ? ६ सम्यक्त्वना केटला प्रकार छे ? अने ते जैन संप्रदायमां केवा नामथी ओळखाय छे ? ७ सम्यक्त्वनुं बीजुं नाम शुं छे ? ८ सम्यक्त्वना सडसठ बोल गणावो. ९ स्थान अने आगार केटला छे ? १० भूषण अने लक्षण केटलां छे ? ११ विनय, लिंग अने दूषणना केटला प्रकार छे ? १२ शुद्धि अने

प्रभावक केटला छे ? १२ सद्दहणा अने यतनाना केटला प्रकार छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ परिणाम, छद्मस्थ, अलौकिक, महत्ता, रहस्य, अधिकार, आस्था, सद्दहणा, लिंग, शुद्धि, दूषण, प्रभावक, यतना, आगार, भावना, स्थान.

पाठ २ जो.

सम्यक्त्व भाग २ जो.

शुद्ध देव, गुरु, अने धर्म—ए त्रण तत्व उपर जे निश्चल परिणामरुप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. कदि कोइ जीवने उपरनां त्रण तत्त्वनो बराबर बोध न होय, पण जो ते जीव कदि पक्षपात छोडी दइने मनमां एवुं धारे के, "जिनेश्वर भगवाने जे अर्थ कह्या छे, ते बधा निःशंकपणे सत्य छे." आवी तेनी तत्त्व उपरनी जे श्रद्धा, ते पण सम्यग् दर्शन कहेवाय छे, तेनाथी जे विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. वळी मिथ्यात्वनो त्याग करवो, ते पण सम्यक्त्व कहेवाय छे.

देव, गुरु, अने धर्मना स्वरुपने जाणीने निश्चय करवो, ते पण सम्यक्त्व कहेवाय छे. चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त्व मोह, मिश्र मोह, अने मिथ्यात्व मोह—आ सात प्रकृतिनो जे जीव उपशम करे, तथा क्षयोपशम करे, ते जीवने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे. ए सम्यक्त्व प्रत्यक्ष ज्ञाननो विषय नथी. " आ जीवने सम्यक्त्व छे, " एवुं केवळी जाणी शके छे. जे जीवने सम्यक्त्व प्रगट थाय छे, ते जीवने नरक तथा तिर्यंच आ बन्ने गतिना आयुष्यनो बंध थतो नथी.

ए सम्यक्त्वना पांच अतिचार छे. १ शंका अतिचार, २ आकांक्षा अतिचार, ३ वितिगिच्छा अतिचार, ४ मिथ्या दृष्टि प्रशंसा अतिचार, अने ५ मिथ्या दृष्टि परिचय अतिचार—आवां तेनां नाम छे.

जिन वचनमां शंका करवी नहि. जो शंका करवामां आवे तो, शंका नामे पहेलो अतिचार छे. बीजा मतवाळाओनां अज्ञान कष्ट देखी, कोइ पाखंडीना विद्या मंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्व जन्मनां अज्ञान कष्टथी फळ पामेला अन्य मतवाळाओने सुखी, तेमज धनवान् देखी, पोताना मनमां ते मतनी प्रशंसा करे, अने तेने अंगीकार करवानी आकांक्षा राखे, ते आकांक्षा नामे बीजो अतिचार लागे छे. तेथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. पोताना पूर्व जन्मनां करेलां पापना उदयथी दुःख

भोगवतो जीव एवो विचार करे के, " हुं धर्म करुं छुं, तेनुं फळ मने शुं मळशे ? अथवा मळशे के नहीं ? वळी जेओ धर्म करता नथी, तेओ सुखी छे, अने हुं धर्म करुं छुं, तथापि दुःखी थाउं छुं. " आ प्रमाणे विचारवुं, ते वितिगिच्छा नामे त्रीजो अतिचार छे, तथा जैन साधुनां मलिन शरीर तथा मलिन वस्त्र देखीने मनमां दुगंछा करे के, " आ साधु गंदा छे. आवा मलिन साधु शी रीते संसारने तरी शके ? " आवो विचार करवाथी पण वितिगिच्छा नामे त्रीजो अतिचार लागे छे, माटे उपर प्रमाणे दुगंछा न करवी.

जिन भणित आज्ञाथी जे बाहेर छे, ते मिथ्या द्रष्टि छे. कारण के तेओ सर्वज्ञनां वचनोने मानता नथी, अने असर्वज्ञनां वचनोने सत्य माने छे. आवा जिनाज्ञानी बाहेर अज्ञान कष्ट करनारा मिथ्यात्वीओनी प्रशंसा करवी, तेओनां तप, व्रत, अने पर्वोत्सवनां वखाण करवां, ते मिथ्या द्रष्टि प्रशंसा नामे चोथो अतिचार छे, तेथी सम्यक्त्ववाळा भविजनोए मिथ्या द्रष्टिनी प्रशंसा न करवी.

मिथ्या द्रष्टिनी साथे बहुज मेळाप राखे, खानपान करे, अने वास करे, ते मिथ्या द्रष्टि परिचय नामे पांचमो अतिचार छे, एवा अनेक प्रकारे सहवास करवाथी मिथ्या द्रष्टिनी वासना लागी जाय छे, अने तेम करतां छेवटे धर्मभ्रष्ट थइ जवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व एटले शुं? २ सात प्रकृति कइ कइ? ३ आ जीवने सम्यक्त्व छे, एवुं कोण जाणी शके? ४ सम्यक्त्वना पांच अतिचार गणावो. ५ पांच अतिचारनी समजुती आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

श्रद्धा, सम्यक्त्व, अनंतानुबंधी कषाय, उपशम, क्षयोपशम, आकांक्षा, वितिगिच्छा, पर्वोत्सव, धर्मभ्रष्ट.

पाठ ३ जो.

श्रद्धा अथवा सद्दहणा.

आस्तिकपणानी जे बुद्धि ते श्रद्धा अथवा सद्दहणा कहेवाय छे. ते सद्दहणानो संबंध समकितनी साथे रहेलो छे. ते सद्दहणाना चार प्रकार छे. जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करवो, ते संबंधी सारो विचार करवो, ए श्रद्धानो पहेलो प्रकार छे. जीव विगेरे नव तत्वो श्री जिन भगवंते कहेला छे, अने तेमां जे जे कहेवामां आव्युं छे, ते बराबर छे. तेमज तेनी अंदर जे जे कहेलुं छे,

ते सत्य छे. आ प्रमाणे विचार करी ते नवतत्वनुं ज्ञान यथार्थ मेळववुं, ते श्रद्धानो पहेलो प्रकार छे.

गुरुसेवा ए श्रद्धानो बीजो प्रकार छे. साधु मुनिराजनी शुद्ध बुद्धिथी सेवा करवी, तेमनुं निर्मळ चारित्र जोइ उत्तम प्रकारे तेमनी भक्ति करवी, ए श्रद्धाना बीजा प्रकारमां आवे छे. जे समकितथी भ्रष्ट होय, तेमनो संग करवो नहि, ए श्रद्धानो त्रीजो प्रकार छे. पासथ्था, कुशीलिआ अने वेपविडंवक, एवा लोको धर्मथी भ्रष्ट होय छे. जेओ धर्मीपणाना डोळघालु होय, तेमज खोटा आडंबरथी धर्मनो विपरीत बोध आपनारा होय, ते पासथ्था कहेवाय छे. जेमनामां शीलगुण न होय, ते कुशीलिआ कहेवाय छे, अने खोटो वेप धरी बीजाने ठगनारा होय, ते वेपविडंवक एवा नामथी ओळखाय छे, ते पासथ्था, कुशीलिआ अने वेपविडंवक ए बधा समकितथी भ्रष्ट होय छे, तेवाओनो संग करवो नहीं, ते सद्दहणाना त्रीजा भेदमां आवे छे.

मिथ्यात्वीनो संग न करवो, ते श्रद्धानो चोथो प्रकार छे. मिथ्यात्वी एटले अन्य दर्शनी–जे बीजा दर्शन–(मत)ने माननारा होय, तेवाओनो संग न करवो. कारण के तेवाओनो संग करवाथी समकितनो नाश थाय छे.

आ चार श्रद्धाना प्रकार छे. जे भव्य मनुष्यने

समकित उपर श्रद्धा होय, ते जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करे छे, अने सर्वदा तेनोज विचार करे छे. समकितनी श्रद्धावाळो मनुष्य साधु-मुनिराजनी सेवा करे छे. पासथ्था, कुशीलिआ अने वेष विडंबक एवा समकितथी भ्रष्ट थयेलानो तेमज मिथ्यात्वीनो संग करता नथी, ए समकितनी श्रद्धानो प्रभाव छे.

सारांश प्रश्नो.

१ श्रद्धा अथवा सद्दहणा एटले शुं ? २ सद्दहणाना केटला प्रकार छे ? ३ जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास अने तेनो विचार करवो, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार छे ? ४ पासथ्था, कुशीलिआ विगेरेनो संग करवो नहीं, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार ? ५ साधु मुनिराजनी सेवा करवी, ते क्यो प्रकार छे ? ६ मिथ्यात्वीनो संग न करवो, ते क्यो प्रकार छे ? ७ खोटा वेषधारी बीजाओने ठगनारा होय, ते केवा कहेवाय छे ? ८ पासथ्था अने कुशीलिआ एटले शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

भ्रष्ट, पासथ्था, कुशीलिआ, वेषविडंबक, आडंबर, विरागीत, मिथ्यात्वी, अन्य दर्शनी, दर्शन, भव्य मनुष्य.

पाठ ४ थो.

त्रण लिंग.

जेनामां समकित होय, तेवा माणसने ओळखावनारां जे चिन्ह ते लिंग कहेवाय छे. ते समकितनां लिंग त्रण प्रकारे छे. सिद्धांत एटले श्री वीतराग प्रभुनी वाणी, तेने सांभळवानी अति अभिलाषा थाय, ते समकितनुं पहेलुं लिंग छे. कहेवानो आशय एवो छे के, जे मनुष्यने सिद्धांत सांभळवानी अभिलाषा थती होय, ते चिन्ह उपरथी एम समजवुं के, तेनामां समकित छे.

चारित्र धर्म एटले व्रत पचखाण करवानी जेने अति अभिलाषा थाय, ते समकितनुं बीजुं लिंग छे. जे मनुष्य व्रत पचखाण करवानी अति अभिलाषा राखतो होय, तो समजवुं के, ते मनुष्यमां समकित छे.

देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां सावधान रहेवुं, ते समकितनुं त्रीजुं लिंग छे. जे माणस देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां सावधान रहेतो होय, तो तेनामां समकित छे, एम समजवुं.

उपर कहेलां त्रण लिंगो ते समकितने ओळखवानां खरेखरां चिन्हो छे. जो हृदयमां समकित होय, तो माणसने सिद्धांत सांभळवानी अभिलाषा थाय छे. व्रत

पचखाण करवानी इच्छा थाय छे, अने तेनाथी देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां सावधान रहेवाय छे. संक्षेपमां एटलुंज समजवानुं के, सिद्धांत श्रवणाभिलाष, चारित्र धर्माभिलाष, अने देव, गुरु सेवा ए त्रण सम्यक्त्वनां लिंगो छे.

सारांश प्रश्नो.

१ लिंग एटले शुं ? २ व्रत–पचखाण करवानी अभिलाषा ते समकितनुं कयुं लिंग छे ? ३ वीतरागनी वाणी सांभळवानी इच्छा ते कयुं लिंग छे ? ४ चारित्र धर्म एटले शुं ? अने ते कयुं लिंग ? ते कहो. ५ त्रण लिंगोनां संक्षेपथी नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

चिन्ह, लिंग, वीतराग, वैयावच, सावधान.

पाठ ९ मो.

दश प्रकारना विनय.

सम्यक् ज्ञान अने दर्शन विगेरे सघळा गुणोनुं मूळ विनय छे. तेनाथी आठ प्रकारनां कर्मने वि एटले वि-

प्रतिरुप विनयना त्रण प्रकार छे. १ कायिक प्रतिरुप विनय, २ वाचिक प्रतिरुप विनय, अने ३ मानसिक प्रतिरुप विनय.

तेमां पहेला कायिक प्रतिरुप विनयना आठ प्रकार छे. १ अभ्युत्थान, २ अंजलिबंध, ३ आसन प्रदान, ४ अभिग्रह, ५ कृति कर्म, ६ शुश्रूषा, ७ अनुगमन, अने ८ संसाधन—एवां तेमनां नाम छे. गुणवान् जननी तरफ उठी सामा जवुं, ते अभ्युत्थान, तेनी सामे हाथ जोडी उभा रहेवुं, ते अंजलिबंध, तेमने आसन आपवुं, ते आसन प्रदान, तेमनी चीज—वस्तु लइ, ठेकाणे राखवी, ते अभिग्रह, तेमने वंदन करवुं, ते कृति कर्म, तेमनी आज्ञा सांभळवा तैयार रहेवुं, ते शुश्रूषा, तेमनी पाछळ जवुं, ते अनुगमन, अने तेमनी पगचंपी करवी, ते संसाधन कहेवाय छे. आ प्रमाणे कायिक विनयना आठ प्रकार थाय छे.

वाचिक प्रतिरुप विनयना चार प्रकार छे. १ हित, २ मित, ३ अपरुष, अने ४ अनुपाति-एवां तेनां नाम छे. हित एटले हितकारी बोलवुं, मित एटले माप पूरतुं बोलवुं, अपरुष एटले मधुर बोलवुं, अने अनुपाति एटले अनुसरतुं बोलवुं. आवी रीते वाचिक प्रतिरुप विनयना चार भेद छे.

मानसिक प्रतिरुप विनयना बे भेद छे. १ अशुभ

मनोनिरोध, अने २ कुशळमन ऊदीरणा-आवां तेनां नाम छे. अकुशळ मननो निरोध करवो, एटले कोइनुं भुंडुं चिंतववुं नहि, ते अकुशळ मनोनिरोध कहेवाय छे, अने सर्वेनुं भलुं चिंतववुं, ते कुशळमन ऊदीरणा कहेवाय छे. आ प्रतिरुप विनय बीजानी अनुवृत्ति करवारुप छे, एटले बीजाने अनुसरीने ते विनय थइ शके छे, तेथी केवलज्ञानी प्रतिरुप विनय करता नथी, तेओ अप्रतिरुप विनय करे छे.

औपचारिक विनयनो बीजो भेद जे अनाशातना विनय छे, तेना बावन प्रकार थाय छे. तीर्थंकर, सिद्ध, कुल, गण, संघ, क्रिया, धर्म, ज्ञान, ज्ञानी, आचार्य, स्थविर, उपाध्याय अने गणी ए तेर पदनी आशातना करवाथी दूर रहेवुं, ते तेर पदनी भक्ति करवी, ते तेर पदनुं बहु मान करवुं, अने ते तेर पदनी प्रशंसा करवी, ए चार प्रकारे तेर पद गणतां बावन प्रकार थाय छे.

आवो विनय गुण सर्वथी उत्तम छे. विनयथी ज्ञान प्राप्त थाय छे, ज्ञानथी दर्शन प्राप्त थाय छे, दर्शनथी चारित्र प्राप्त थाय छे, अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्त थाय छे, एथी सर्व गुणोनुं मूळ विनयज छे.

सारांश प्रश्नो.

१ विनय ए शब्दनो अर्थ शो थाय ? २ विनयनां कयां लक्षणो छे ? ३ विनयना मूळ केटला भेद छे ? तेनां नाम गणावो. ४ देवनी अने गुरुनी केटली केटली आशातना कहेवाय छे ? अने ते आशातना टाळवी, ते शेमां गणाय छे ? ५ विनयना बीजा केटला प्रकार थइ शके छे ? ते गणावो. ६ तपविनय अने दर्शनविनय शुं छे ? ते समजावो. ७ पदार्थनुं ज्ञान मेळववुं, अने क्रिया करवी, ते कया विनय कहेवाय छे ? ८ औपचारिक विनयना केटला भेद छे ? ९ प्रतिरुप विनयना केटला भेद छे ? तेनां नाम आपो. १० कायिक प्रतिरुप विनयना केटला भेद थाय ? ते गणावो. ११ संसाधन, अभ्युत्थान अने अनुगमन, ए केवा विनयमां आवे छे, अने तेनो शो अर्थ थाय छे ? ते समजावो. १२ गुणवान् जननी सामे हाथ जोडी उभा रहेवुं, ते केवो विनय ? १३ मोटा जननी आज्ञा सांभळवा तैयार रहेवुं, ते केवो विनय ? १४ मोटाओने आसन आपवुं, ते केवो विनय ? १५ अभिग्रह अने कृतिकर्म विनयमां शुं करवानुं छे ? १६ वाचिक प्रतिरुप विनयना केटला प्रकार छे ? १७ हित तथा अनुलोम ए केवां वचन कहेवाय ? १८ मित पूरतुं बोलवुं, अने मधुर बोलवुं, ते केवा विनयमां गणाय छे ? १९ मानसिक प्रतिरुप विनयना केटला भेद छे ? २० अकुशल मनोनिरोध अने कुशलमन उदीरणा एटले

शुं ? ते समजावो. २१ अनाशातना विनयना केटला भेद छे ? २२ तेर पद कयां ? ते गणावो. २३ तेर पदने केवी रीते गणतां बावन प्रकार थाय छे ? २४ सर्व गुणोनुं मूळ विनय छे, ते केवी रीते ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

लय, बहुमान, श्रुतधर्म, चतुर्विध संघ, द्रव्य, हित, मित, अपरुप, अनुपाति, निरोध, उदीरणा, अनुवृत्ति, स्थविर, गणी.

पाठ ६ ट्ठो.

त्रण शुद्धि.

सम्यक्त्व मेळववामां त्रण प्रकारनी शुद्धिनी जरुर छे. ते शुद्धि ते सम्यक्त्वनी शुद्धि कहेवाय छे. ए शुद्धिना त्रण प्रकार छे. १ मनःशुद्धि, २ वचनशुद्धि अने ३ कायशुद्धि, एवां तेनां नाम छे.

" आ संसारमां श्री वीतरागनो कहेलो धर्मज सार छे. बीजुं कांइ सार नथी. " आ प्रमाणे मनमां भाववुं, ते मनःशुद्धि कहेवाय छे.

" जिन धर्मनुं आराधन करवाथी कल्याण न होय,

तो बीजा कोनाथी होय ? कल्याण तो श्री वीतरागना ध
थीज छे, बीजाथी नथी." आ प्रमाणें वचनथी कहे
ते वचनशुद्धि कहेवाय छे.

"कदि कोइ आवीने मारो, छेदो, भेदो अने अ
नेक प्रकारनी पीडा उपजावो, पण वीतराग विना बीज
नी आगळ कायाथी मस्तक न नमाववुं, एवी द्रढता,
कायशुद्धि कहेवाय छे.

आ त्रणे प्रकारनी शुद्धि, ते खरेखरी समकितनी
शुद्धि गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ शुद्धि एटले शुं ? २ शुद्धिना केटला प्रकार
छे ? ३ जिन धर्मनुं आराधन करवाथीज कल्याण थाय
छे, बीजाथी थतुं नथी—आवां वचन केवी शुद्धिमां
गणाय छे ? ४ मनःशुद्धि अने कायशुद्धि विषे
समजावो.

शिक्षक: नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

मारो, छेदो, भेदो, द्रढता.

पाठ ७ मो.

पांच दूषण.

सम्यक्त्वना पांच अतिचार, ते तेनां पांच दूषण कहेवाय छे. तेमनां १ शंका, २ कांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ प्रशंसा अने ५ संस्तव-एवां नाम छे. वीतरागे कहेलां वचनमां जे संशय करवो, ते शंका नामे पहेलुं दूषण छे. जिनमत विना बीजा मतनी वांछा करवी, ते कांक्षा नामे बीजुं दूषण छे. " धर्मनुं फळ मळशे के नहीं ? " एम संदेह करवो, ते विचिकित्सा नामे त्रीजुं दूषण छे. कुलिंगी एवा पाखंडी लोकोनी प्रशंसा करवी, ते प्रशंसा नामे चोथुं दूषण छे, अने उपर बतावेला पाखंडी लोकोनो परिचय करवो, ते संस्तव नामे पांचमुं दूषण छे.

समकितना आराधक एवा पुरुषे ए पांच दूषणनो सर्वथा त्याग करवो जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्वना अतिचार अने दूषणमां तफावत छे के नहीं ? २ सम्यक्त्वनां दूषण केटलां छे ? ते दरेकनां नाम आपी गणावो. ३ संस्तव अने प्रशंसा एटले शुं ? ते समजावो. ४ वीतरागनां कहेलां वचनमां संशय करवो,

अने बीजा मतनी वांछना करवी, ते कयां दूषण कहेवाय? ५ धर्मनुं फळ मळशे के नहीं ? एवो संदेह करवो, ते कयुं दूषण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कुलिंगी, संस्तव, आराधक.

पाठ ८ मो.

आठ प्रभावक.

सम्यक्त्वना आठ प्रभावक छे. जे पुरुष सम्यक्त्वना प्रभावने वधारे, ते प्रभावक कहेवाय छे. जे जिनमतनां अने परमतनां शास्त्रोनो जाणनार होय, ते पहेलो प्रभावक छे. जे धर्मनो उपदेश आपनार होय, ते बीजो प्रभावक छे. जे न्यायथी वाद करी वादीओनो पराभव करे, ते त्रीजो प्रभावक छे. जे निमित्त-शुकन तथा ज्योतिष शास्त्रने जाणनार होय, ते चोथो प्रभावक छे. जे तपस्वी निर्लोभी अने नम्र होय, ते पांचमो प्रभावक छे. जे विद्या मंत्रनो जाणनार होय, ते छट्ठो प्रभावक छे. जे सिद्धसंपन्न होय, एटले आकाशगामिनी विद्याए युक्त होय, ते सातमो प्रभावक छे. जे कवि होय, एटले कविताना

गुणथी वर्णन करनारो होय, ते आठमो प्रभावक छे. आ आठ गुणथी मोटा मोटा राजाओने प्रसन्न करी जैनी बनावे, ते प्रभावक जाणवा.

आ आठ प्रभावक जिनमतने दीपावनारा छे. हमेशां एवा प्रभावक थवानो उद्यम करवो, के जेथी जिनमतने दीपावनार थइ शकाय, अथवा तेमना समकितवाळा गुण जोइने एवा प्रभावक पुरुषोनी सेवा करवी.

सारांश प्रश्नो.

१ प्रभावक केटला छे ? २ प्रभावक कोने कहेवाय ? ३ जे आकाशगामनी विद्याए युक्त होय, ते केटलामो प्रभावक कहेवाय ? ४ कवि होय ते केटलामो प्रभावक ? ५ जिनमत अने परमतनां शास्त्रोने जाणनार केटलामो प्रभावक ? ६ बीजो प्रभावक कयो ? ७ जे न्यायथी वाद करे, ते केटलामो प्रभावक ? ८ धर्मनो उपदेश आपनार केटलामो प्रभावक ? ९ क्षमावंत, निर्लोभी अने तपस्वी होय, ते केटलामो प्रभावक ? १० ज्योतिः शास्त्रने जाणनारो केटलामो प्रभावक ? ११ सिद्धसंपन्न एटले शुं ? १२ शुं करे तो प्रभावक कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रभावक, परमत, निमित्त, ज्योतिषशास्त्र, सिद्धसंपन्न, आकाशगामीनी.

पाठ ९ मो.

पांच भूषण.

समकितनां पांच भूषण कहेलां छे. भूषण धारण करवाथी जेम शोभा प्राप्त थाय छे, तेम आ पांच भूषण धारण करवाथी समकित शोभे छे. १ कुशळता, २ प्रभावना, ३ तीर्थ सेवा, ४ दृढता, अने ५ वैयावृत्त्य—ए पांच भूषणनां नाम छे. जिन धर्मने विषे कुशळता राखवी, ते पहेलुं भूषण छे. जिन शासननी प्रभावना करवी. एटले जिन शासनने दीपाववुं, अथवा वृद्धि थाय तेम करवुं, ते बीजुं भूषण छे. तीर्थ सेवा एटले गीतार्थ मुनिराज अने तीर्थनी सेवा करवी, ते त्रीजुं भूषण छे. दृढता एटले जिन धर्मने विषे स्थिरता राखवी, ते चोथुं भूषण छे. वैयावृत्त्य एटले देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय करवो—वैयावच्च करवी—ते पांचमुं भूषण छे.

समकितनां आ पांच भूषणो समकितने दीपावनारां

छे. तेना विना समकित जरा पण शोभतुं नथी, तेथी दरेक श्रावके ते पांच भूषण संपादन करवां जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भूषण एटले शुं ? २ ते भूषण केटलां छे ? तेनां नाम आपो. ३ देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय के वैयावच्च करवो, ते क्युं भूषण ? ४ तीर्थ सेवा अने कुशळता ए बे भूषण विषे समजावो. ५ जिन धर्मने विषे द्रढता राखवी, ते क्युं भूषण छे ? ६ प्रभावना एटले शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रभावना, कुशळता, गीतार्थ, द्रढता, स्थिरता.

पाठ १० मो.

पांच लक्षण.

समकितनां शुं लक्षण छे ? अने " आ जीवमां समकित छे, " एम शी रीते जणाय ? ए प्रत्येक श्राव-

के जाणवुं जोइए. ते जाणवाने माटे समकितनां पांच लक्षणो कहेलां छे. ए पांच लक्षणोथी समकितनुं खरेखरुं स्वरुप जणाइ आवे छे. ए पांच लक्षणोनां १ उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, अने ५ आस्तिक्य एवां नाम छे. क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए चार कषायनो त्याग, ते उपशम नामे समकितनुं पहेलुं लक्षण छे. जे जीवमां अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभनो उपशम देखाय, एटले अपराध करनार उपर पण जेने क्रोध विगेरे तीव्र कषाय उत्पन्न न थाय; जो कदि उत्पन्न थाय, तो तेने निष्फळ करी दे, एवी शमता जेनामां जोवामां आवे, ते जीवमां समकित छे, एम जाणवुं. जेना हृदयमां मोक्षना सुखनी अभिलाषा राखवाने लीधे संसार उपर वैराग्य थाय, ते संवेग नामे समकितनुं बीजुं लक्षण छे. जे जीवने तेवो वैराग्य उत्पन्न थतो मालम पडे, ते जीवमां सम्यक्त्व छे, एम जाणवुं. संसारना दुःखथी कंटाळो पामी उदास रहेवुं, ते निर्वेद नामे समकितनुं त्रीजुं लक्षण छे. जे जीव संसारना सुख उपर द्वेष करे, कुटुंब विगेरेनी परतंत्रताना दुःखरूप गृहस्थाश्रममां रहेतां, पण मोक्षनी अभिलाषा करे, ते निर्वेद लक्षणथी जीवमां सम्यक्त्व छे एम जाणवुं. बीजा जीवने दुःखथी निवारण करवानी इच्छा, अर्थात् परे जीव उपर दया धारण करे, ते अनुकंपा नामे समकितनुं चोथुं लक्षण छे. जेना हृदयमां दुःखी जीवने देखी अनुकंपा उत्पन्न थाय,

दुःखी जीवनां दुःख दूर करवानी इच्छा थाय, तेमज बीजा जीवने दुःखी जोइ, पोताना मनमां दुःखी थाय, अने पोतानी शक्ति प्रमाणे दुःखी जीवनां दुःखने दूर करे, तेवां अनुकंपानां लक्षणथी समजवुं के, ते जीवमां समकित छे. " श्री वीतराग प्रभुए कह्युं, ते सत्य छे, तेमां कंइ पण जुठुं नथी. " आवी द्रढ आस्था राखवी, ते आस्तिक्य नामे समकितनुं पांचमुं लक्षण छे. जे जीवमां एवी द्रढ आस्ता जोवामां आवे, ते जीवमां सम्यक्त्व छे, एम जाणवुं.

ए प्रमाणे उपशम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, अने आस्तिक्य—ए पांच लक्षण उपरथी जीवमां रहेलुं सम्यक्त्व ओळखाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समकितनां लक्षणो शुं छे, अने ते केटलां छे? तेनां नाम गणावो. २ श्री वीतरागनां वचन उपर द्रढ आस्था राखवी, ते समकितनुं कयुं लक्षण ? ३ उपशम एटले शुं ? ते समजावो. ४ बीजा जीवने दुःखथी निवारण करवानी इच्छा, ए कयुं लक्षण ? ५ संवेग एटले शुं ? ते विषे समजावो. ६ संसारनां दुःखथी कंटाळी उदास रहेवुं, ते कयुं लक्षण ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

उपशम, संवेग, निर्वेद, आस्तिक्य, अनंतानुबं[illegible] निष्फळ, अनुकंपा, शक्ति.

पाठ ११ मो.

छ यतना.

समकितने शुद्ध रीते राखवा यत्न करवो, ते सम[illegible]कितनी यतना कहेवाय छे. जो बराबर यतना करवामां आवी होय, तो समकित नाश पामतुं नथी. ए यतनाना छ प्रकार छे. १ परतीर्थिकादि वंदन, २ परतीर्थिकादि नमस्करण, ३ परतीर्थिकादि आलापन, ४ परतीर्थिकादि संलापन, ५ परतीर्थिकादि अशनादि दान अने ६ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि प्रेषण [illegible] यतना छ प्रकारनां नाम छे.

बीजा धर्मवाळाओने, तेमना देव [illegible] दान [illegible] वंदन [illegible] आदि [illegible] परतीर्थिकादि वंदन [illegible] परतीर्थिकादि नमस्करण [illegible]

ळानी साथे प्रथम बोलवुं नहीं, ते परतीर्थिकादि आ-
लापन नामे त्रीजी यतना छे. तेमनी साथे वारंवार
बोलवुं नहि, ते परतीर्थिकादि संलापन नामे चोथी
यतना छे. तेमने धर्म बुद्धिए खावा पीवानुं आपवुं नहि,
ते परतीर्थिकादि अशनादिदान नामे पांचमी यतना
छे. तेमने माटे गंध तथा पुष्प मोकलवां नहि, ते पर-
तीर्थिकादि गंध पुष्प प्रेषण नामे छट्ठी यतना छे.

आ छ प्रकारनी यतना राखवाथी समकित द्रढ
थाय छे, अने तेना गुणमां वधारो थाय छे. बे हाथ
जोडीने नमवुं, ते वंदन, अने माथुं नमाववुं; ते नमस्कार
कहेवाय छे. प्रथम बोलवुं, ते आलापन, अने वारंवार
बोलवुं, ते संलापन कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समकितनी यतना एटले शुं ? २ यतनाथी शो
लाभ थाय छे ? ३ यतना केटला प्रकारनी छे ? तेना
बधा भेदनां नाम आपो. ४ परतीर्थिकादि गंध पुष्प प्रे-
पण—एटले शुं ? अने ते केटलामी यतना छे ? ५ बी-
जा मतवाळाओने, तेमना देवने, अने तेमणे ग्रहण करेली
प्रतिमाने वंदन करवुं नहि, ए कइ यतना ? ६ परतीर्थि-
कादि अशनादि दान—ए केटलामी यतना, अने तेनो
अर्थ शुं ? ७ बीजा मतवाळाने नमस्कार करवो नहीं,

ते कइ यतना ? ८ परतीर्थिकादि संलापन ए यतनानो अर्थ शुं ? ९ बीजा मतवाळानी साथे प्रथम बोलवुं नहि, ते कइ यतना ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यतना, परतीर्थिकादि, वंदन, नमस्करण, आलापन, संलापन, अशनादि दान, गंध पुष्पादि, प्रेषण, धर्म पुद्धि, इ.

पाठ १२ मो.

छ आगार.

कोइ मुश्केलीने लइने श्रावकने कांइ पण अनुचित काम करवुं पडे, ते वखते जे कांइ पण न चालतां छूट मूकवी, ते आगार कहेवाय छे. तेने संस्कृतमां आकार (अपवाद) कहे छे. ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आदरवानो होय छे, त्यारे गुरु तेने आगार बतावे छे, ते आगारना छ प्रकार थाय छे. ते वखते गुरु तेने जणावे छे के, आ छ कारणोथी कदापि कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तो आ छ आगार राखी शकाय, जेथी करीने तमारुं सम्यक्त्व कलंकित थशे नहि.

राजाना कहेवाथी करवुं पडे, ते राजाभियोग नामे पहेलो आगार छे. कदि राजा जोरावरीथी अनुचित काम करावे, तेथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे नहीं.

गण एटले ज्ञातिनो समूह अथवा पंच, तेमना कहेवाथी करवुं, ते गणाभियोग नामे बीजो आगार छे. ज्ञाति के पंच अनुचित काम करवानी फरज पाडे, तेवे प्रसंगे जो ते काम करवुं पडे, तो तेथी करीने सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

बळ एटले सैन्य अगर कोइ बळवान् चोर के म्लेच्छ, तेमनी जोरावरीथी करवुं, ते बलाभियोग नामे त्रीजो आगार छे. कोइ चोर के म्लेच्छना ताबामां आवी पडतां, तेओनी जोरावरीथी काम करवुं पडे, तो तेथी सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

देव एटले क्षेत्रपाळ, व्यंतर विगेरे कोइ दुष्ट देवता शरीरमां प्रवेश करी, अनुचित काम करावे, ते देवाभियोग नामे चोथो आगार छे. दुष्ट देवता के व्यंतर शरीरमां प्रवेश करी, अनुचित काम करावे, तथा कोइ देवता मरणांत दुःख आपे, तेथी मनमां धैर्य न रहे, अने तेने लइने विरुद्ध काम करवुं पडे, तो सम्यक्त्वमां अतिचारनो भंग थतो नथी.

गुरु एटले मातापिता अथवा धर्माचार्य के जिन प्रतिमा, तेमने लइने अनुचित काम करवुं पडे, ते गुरू

निग्रह नामे पांचमो आगार छे. माता पिताना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तथा धर्माचार्यने कोइ दुष्ट संकट आपतो होय, तथा जिन प्रतिमानुं खंडन करतो होय, के जिन मंदिर तोडतो होय, तेओनी रक्षाने माटे जो कांइ अनुचित काम करवुं पडे, तो सम्यक्त्वमां दूषण लागतुं नथी.

• वृत्ति एटले आजीविका तेने माटे कांइ विरुद्ध काम करवुं पडे, ते कांतारवृत्ति नामे छट्ठो आगार छे. दुकाळ विगेरे आपत्ति आवी पडे, त्यारे आजीविकाने माटे मिथ्या दृष्टिने अनुसारे चालवुं पडे, अथवा कांइ विरुद्ध आचरण करवुं पडे, तेथी करीने कांइ दूषण लागतुं नथी.

आ छ वस्तुना आगारने छ छींडी पण कहे छे. पोतानी मरजी न छतां बीजाओना कहेवाथी लाचारीथी आ छ आगार सेववाथी सम्यक्त्वने कांइ पण दूषण लागतुं नथी.

आ छ आगार सिवाय बीजा चार आगार पण जुदा गणेला छे. कोइ प्रकारना पच्चखाण लेती वखते तेओनो उच्चार करवामां आवे छे, ते नीचे प्रमाणे छे—

कोइ विरुद्ध वस्तु अजाणपणे उपयोग आव्या विना मां जाय, ते पहेलो आगार छे. तेने माटे " अन्नत्थणाभोगेणं " एवो उच्चार थाय छे.

कोइ विरुद्ध काम अकस्मात् थइ जाय, मनमां जाणतां छतां योगनी चपळताथी अथवा निरंतरना अभ्यासथी थइ जाय, तो ते बीजो आगार छे. तेने माटे " सहस्सागारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

जे काम करवाथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे छे, पण तेमां घणोज मोटो लाभ रह्यो होय, अथवा कोइ मोटानी आज्ञाथी खास करवुं पडे तेम होय, तो ते त्रीजो आगार छे. तेने माटे " महत्तरागारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

जे काम सर्व समाधि व्यत्ययथी एटले मोटा सन्निपात विगेरे रोगोने प्रसंगे बावरा बनी जवाथी, तथा वृद्धावस्थामां स्मृतिनो भंग थवाथी, तथा सर्प विगेरेना डंशने लीधे असमाधि थइ जवाने प्रसंगे करवुं पडे, ते चोथो आगार छे. तेने माटे " सव्व समाहिवत्तिआगारेणं " एवो उच्चार थाय छे.

आ चार आगारथी व्रतनो तथा सम्यक्त्वनो भंग थतो नथी. तेवे प्रसंगे कदाग्रह राखी, आर्त्त ध्यानमां प्राणनो त्याग करवो, ते योग नथी. " गमे ते थाय, पण जे नियम लेवामां आव्युं, ते कदापि तोडवुं नहि. " एवो अति आग्रह राखवो न जोइए. कारण के जो पहेलेथी आगार राख्या होय, तो पछी व्रतनो भंग थतो नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ आगार एटले शुं ? ते समजावो. २ आगारने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ३ आगारना मुख्य केटला प्रका छे ? ४ छ आगारनां नाम आपो. ५ आजीविकाने मा विरुद्ध काम करवुं पडे, ते कयो आगार कहेवाय ६ गुरुनिग्रह आगार केवी रीते लागे ? ते कहो. ७ रा जाना कहेवाथी विरुद्ध करवुं पडे, ते कयो आगार ८ गणाभियोग आगार एटले शुं ? ते समजावो. ९ दे के व्यंतरना आवेशथी अनुचित काम करवुं पडे, ते कयो आगार ? १० बलाभियोग आगार विषे समजावो. ११ छ आगारने बीजा कया नामथी ओळखावे छे ! १२ छ आगार शिवाय बीजा आगार छे के नहिं ? जो छे तो ते केटला छे ? १३ मोटा रोगोने प्रसंगे थवरा पा जवाथी जे आगार लागे, ते केटलामो आगार, अने तेने माटे शो उच्चार छे ? १४ " अनत्थणा भोगेणं " ए उचार केवा आगारने माटे छे ? १५ जे काम विरुद्ध होय, पन तेमां घणो मोटो लाभ रयो होय, ते केटलामो आगार ? अने तेने माटे केवो उचार छे ? १६ " सह-स्सागारेणं " ए उचार केवा आगारने माटे छे ! १७ उपरना छ आगार अने आ चार आगारथी वंनो भंग न थाय ? १८ आगार राखवाथी शो लाभ थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अनुचित, कलंकित, गण, म्लेच्छ, क्षेत्रपाळ, व्यंतर, मरणांत, आजीविका, आपत्ति, छींडी, उचार, उपयोग, समाधि, व्यत्यय, स्मृति, असमाधि, कदाग्रह, आर्त्त ध्यान.

पाठ १३ मो.

छ भावना.

समकितने छ वस्तु साथे सरखाववानी भावना करवी, ते भावना कहेवाय छे. झाडनुं मूळ, पेसवानुं द्वार, महेलनो मूळ पायो, तत्वनो निधि (भंडार), जीवितनो आधार अने रसनुं पात्र, एवी छ उपमा चारित्रनी साथे आपीने ते भावना भाववामां आवे छे. " समकित चारित्र धर्मरुपी झाडनुं मूळ छे "—आ प्रमाणे भाववुं, ते पहेली भावना छे.

" समकित चारित्र धर्मरुपी नगरमां पेसवानुं द्वार छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते बीजी भावना छे.

" समकित चारित्र धर्मरुपी महेलनो मूळ पायो छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते त्रीजी भावना छे.

" समकित ज्ञान, चारित्र विगेरे गुणरुप तत्वनो

निधि-भंडार छे. " आवी रीते भाववुं, ते चोथी भावना छे.

" समकित चारित्ररुपी जीवितनो आधार छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते पांचमी भावना छे.

" समकित श्रुत चारित्ररुपी रसनुं पात्र छे. " आ प्रमाणे भाववुं, ते छट्ठी भावना छे.

आ समकितनी छ भावना, समकितनी वृद्धि करनारी छे; तेथी समकितधारी श्रावके हमेशां ते भावना भाववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भावना एटले शुं ? २ भावनाना केटला प्रकार छे ? ३ ते छ भावनाओने कइ कइ वस्तुनी साथे सरखावी छे. ते वस्तुओना नाम आपो. ४ समकितने केवा पायानुं रूपक आप्युं छे. ते कइ भावना छे ? ५ " समकित चारित्र धर्मरूपी झाडनुं मूळ छे. " ए केटलामी भावना ? ६ समकितने जीवितनो आधार कहेल छे, ते कइ भावना ? ७ चोथी भावनामां समकितने शेनुं रूपक आपेलुं छे ? ८ " समकित ज्ञान चारित्र विगेरे गुणरूप रत्नोनो निधि छे, " ए केटलामी भावना ? ९ त्रीजी कइ भावना छे ? १० आ समकितनी भावना भाववाथी शो लाभ छे ?

.શિક્ષકે નીચેના શબ્દોની સમજૂતી આપવી.

મૂળ, દ્વાર, નિધિ, જીવિત, સમકિતધારી.

પાઠ ૧૪ મો.

છ સ્થાન.

સમકિતમાં છ સ્થાન ગણાય છે. એ છ સ્થાન જીવને ઉદ્દેશીને કહેલાં છે. એ છ સ્થાનો આસ્તાપૂર્વક માનવાથી સમકિત ગુણને વધારે છે.

" જીવ છે, " એમ જે માનવું, તે પહેલું સ્થાન છે. જીવ કહો વા આત્મા કહો, એ બંને એકજ વસ્તુનાં નામ છે. તે જીવનું મુખ્ય લક્ષણ ચૈતન્ય છે.

" જીવ નિત્ય છે, " એમ જે માનવું, તે બીજું સ્થાન છે. જીવનો અત્યંત અભાવ થતો નથી, તેથી તેને નિત્ય કહ્યો છે.

" જીવ કર્મોનો કર્ત્તા છે, " એમ જે માનવું, તે ત્રીજું સ્થાન છે. જીવ સારાં અને નઠારાં કર્મોનો કર્ત્તા છે. મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, પ્રમાદ, અને યોગથી મલિન થઇને તે વેદનીયાદિ કર્મોનો કર્ત્તા છે.

" જીવ કર્મોનો ભોગવનાર છે, " એવી રીતે જે

मानवुं, ते चोथुं स्थान छे. जीव करेलां कर्मोनां सुख दुःख विगेरे फळनो भोक्ता छे.

" जीवने मोक्ष छे, " एम जे मानवुं, ते पांचमुं स्थान छे. सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, अने सम्यक् चारित्र—ए त्रण रत्नथी उत्कृष्ट पुरुषार्थ करी, कर्मना बंधने दूर करनारा जीवनो मोक्ष थाय छे.

" जीवने मोक्षनो उपाय छे, " एटले जीवने कर्म रहित थवानो उपाय छे, एम मानवुं, ते छठुं स्थान छे. ते उपाय सम्यग् ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र छे.

सारांश प्रश्नो.

१ स्थान केटलां छे ? २ स्थान कोने उद्देशीने करेलां छे ? ३ जीवने मोक्षनो उपाय छे एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ४ मोक्षनो उपाय शुं ? ५ 'जीव छे' एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ६ जीव अने आत्मा केवी वस्तु छे ? ७ जीवनुं मुख्य लक्षण शुं छे ? ८ " जीवनो मोक्ष छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान ? ९ मोक्ष केवा जीवने थाय छे ? १० त्रण रत्नो कयां ? ११ " जीव नित्य छे " एम मानवुं, ते कयुं स्थान छे ? १२ जीव नित्य शा माटे छे ? १३ " जीव कर्मनो भोगवनार छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान

छे ? १४ जीव कयां फळनो भोक्ता छे ? १५ " जीव कर्मोनो कर्त्ता छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान छे ? १६ जीव केवां कर्मोनो कर्त्ता छे ? १७ जीव शेनाथी मलिन थइने वेदनीयादि कर्मोनो कर्त्ता छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्थान; उद्देशीने, आस्तापूर्वक, चैतन्य, अत्यंत अभाव, अविरति, योग, वेदनीआदि, भोक्ता, पुरुषार्थ, अंश.

पाठ १५ मो.

समकितना सडसठ बोल विषे.

कविता.

सवैया एकत्रीशा.

भणे विचारे जे नव तत्वो करे भक्तिथी मुनिवर सेव,
पासथ्थादि भ्रष्ट तणी राखे नहीं संग कर्यानी टेव;
दूर रहे मिथ्या दृष्टिथी ए भेदो श्रद्धाना चार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १

मन इच्छा सिद्धांत श्रवणनी व्रत चारित्र तणो अभिलाप,
देव गुरु आदि उत्तमनी वैयावच्च करवानी आश;
ए त्रण छे समकितनां लिंगो धारण करवा धरता प्यार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. २

श्री अरिहंत सिद्ध जिन प्रतिमा चारित्रागम ने अनगार,
उपाध्याय आचार्य चतुर्विध संघ अने दर्शन सुखकार;
ए दसनो शुभ विनय करे ने ए दस राखे विनय प्रकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ३

मननी वचनतणी कायानी ए त्रण शुद्धि राखे आप,
शंका नहि राखे जिनवचने परमत वांछा न करे भाप;
धर्मतणा फळमां नव राखे हृदय विषे संदेह लगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ४

जे पाखंडी धर्म कुलिंगी लोको करता जगविख्यात,
देखे काइ न वखाणे तेनी मुखथी प्रेम धरी साक्षात;
नव राखे परिचय ए जननो ए पांचे दूषण दुःखकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ५

दाता जिनवर शासननो छे धर्म तणो उपदेशक भात,
स्याद्वाद वादी [illegible] श्रुतज्ञ ज्योतिषनो [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] आठ प्रभावक ए गुणकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ६

[illegible] जे [illegible] [illegible] शासन प्रभावना करनार,
[illegible] [illegible] [illegible] धर्म [illegible] [illegible] [illegible].

देव गुरु श्रुत विनय वधारे ए पांचे भूषण भवहार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ७

कषाय टाळे उपशम गुणथी शिवसुख इच्छे धरी संवेग,
उदास रहे भवथी निर्वेदे अनुकंपा धरवानो वेग;
जिनवचने आस्ता दृढताथी पांचे समकित लक्षण सार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ८

जे परतीर्थी देव अने परतीर्थीनी प्रतिमा कहेवाय,
वांदे नहि करजोडी तेने नहीं मस्तकथी नमन कराय;
तेनी साथे प्रथम न बोले वारंवार वदे न लगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ९

धर्मबुद्धिए परतीर्थिकने खानपान नव आपे लेश,
गंध पुष्प तेने नव अर्पे राखी धर्म तणो उद्देश;
ए यतना छे समकितनी छो राखो नित्ये समकित धार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १०

राजा ज्ञाति पंच अने बळवंत देवनो जे अभियोग,
आजीविकाने गुरु निग्रहथी विपरित करवानो संयोग;
होय अनिच्छा लाचारीथी करतां ए छे छो आगार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. ११

समकित छे चारित्र वृक्षनुं मूळ मनोहर जे सुखकार,
समकित छे चारित्र नगरमां प्रवेश करवानुं शुभ द्वार;
समकित छे चारित्र महेलनो दृढ पायो धरतो विस्तार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १२

जीव वस्तु छे जीव नित्य छे जीव कर्मनो छे करनार,
जीव कर्मनो भोगवनारो मोक्ष जीवने छे सुखकार;
मोक्ष तणो छे उपाय तेने ए छ स्थान तणोज प्रकार,
ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १३

दोहा.

सडसठ पूरा बोल ए, समकितना निरधार,
कंठ करे जे प्रेमथी, ते पामे भवपार. १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

सामथ्यादि, श्रद्धा, श्रवण, अभिलाष, चारित्रागम, परमत वांछा, गीतारथ (गीतार्थ), तीरथ (तीर्थ), भवहार, उवेख, समकितधार, अभियोग, गुरु निग्रह, विपरीत (काम).

पाठ १६ मो.

पचखाण भाग १ लो.

पचखाण ए प्राकृत भाषानो शब्द छे. तेने संस्कृत भाषामां प्रत्याख्यान कहे छे. प्रत्याख्यान ए शब्दमां त्रण पद रहेलां छे. पहेलुं पद प्रति, बीजुं पद आ, अने

त्रीजुं पद आख्यान-ए त्रण पद मळीने प्रत्याख्यान शब्द थयेलो छे. प्रति एटले तरफ, आ एटले मर्यादा—हद, अने आख्यान एटले कहेवुं, एवा तेना जुदा जुदा अर्थ थाय छे. ते बधानो भावार्थ एवो छे के, अविरतिपणा तरफ आगारनी मर्यादा करी कहेवुं, ते प्रत्याख्यान अथवा पचखाण कहेवाय छे. ते पचखाणना मूळ गुणरुप अने उत्तर गुणरुप एवा बे भेद छे. मुनिने पंचमहाव्रत लेवां, ते मूळ गुणनुं पचखाण छे, अने शुद्ध आहार लेवा विगेरे जे करवुं, ते उत्तर गुणनुं पचखाण छे. श्रावकने पांच अणुव्रतनां जे पचखाण, ते मूळ गुणनुं पचखाण छे, अने शिक्षाव्रत विगेरेनां जे पचखाण, ते उत्तर गुणनुं पचखाण छे. पचखाण हमेशां साधारण रीते अविरतिनुं विरोधी छे, अने अविरति दूर करवानोज तेनो हेतु अथवा उद्देश छे.

ते पचखाणनुं उपयोगीपणुं हमेशां उत्तर गुणरुपे रहेल छे. ते उत्तर गुण पचखाणना दश भेद पडे छे. ते दश प्रकारनां नाम आ प्रमाणे छे—

१ अनागत पचखाण, २ अतिक्रांत पचखाण, ३ कोटी सहित पचखाण, ४ नियमित पचखाण, ५ अनागार पच्चखाण, ६ सागार पच्चखाण, ७ निरवशेष पच्चखाण, ८ परिमाणकृत पच्चखाण, ९ सांकेतिक पच्चखाण, अने

१० अद्धा पच्चखाण. आ दशे प्रकारनां पचखाण, ते उत्तर गुणनां पच्चखाण कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पच्चखाण ए केवो शब्द छे ? २ पच्चखाणने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ३ प्रत्याख्यान ए शब्दमां केटलां पद छे ? ४ प्रति, आ, अने आख्यान ए त्रणे पदनो जुदो जुदो अर्थ कहो. ५ प्रत्याख्यान अथवा पच्चखाणनो भावार्थ शो ? ६ पच्चखाणना केटला भेद छे ? ७ पच्चखाणने मूळ तथा उत्तर गुणरूपे मुनि तथा श्रावकमां घटावो. ८ मुनि तथा श्रावकने मूळ गुणनुं पच्चखाण कयुं ? ९ मुनि तथा श्रावकने उत्तर गुणनुं पच्चखाण कयुं ? १० पच्चखाणनो हेतु अथवा उद्देश शो छे ? ११ उत्तर गुण पच्चखाणना केटला भेद छे ? १२ उत्तर गुण पच्चखाणना दश भेदनां नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

बाह्य, संस्कृत, मर्यादा, भावार्थ, आचार, मूळ गुण, उत्तर गुण, शिक्षाव्रत, उद्देश.

पाठ १७ मो.

पच्चखाण भाग २ जो.

पर्युपण विगेरे पर्व आव्यानी अगाउथी गुरुनी पासे पच्चखाण लइने जे तप करवामां आवे, ते पहेलुं अनागत पच्चखाण कहेवाय छे. पर्युपण विगेरे पर्व वीती गया पछी तेज कामना हेतुथी पाछळथी आठम विगेरेना तपने माटे जे पच्चखाण ले, ते बीजुं अतिक्रांत पच्चखाण कहेवाय छे. सवारे उपवास प्रमुख व्रत करीने वळी बीजे दिवसे सवारे तेज उपवास विगेरेनुं पच्चखाण करे, एम छट्ठ विगेरेनी कोटि मेळवे, एटले एक पच्चखाण पूरा थयानी वखते बीजा पच्चखाणनी संधि मेळवे, ते त्रीजुं कोटिसहित पच्चखाण कहेवाय छे. एकाशणा विगेरेना पच्चखाण पार्यां पहेलां आंबिल विगेरे करवां, एटले एकनो छेडो अने बीजानी शरुआत, ते पण कोटि सहित पच्चखाण थायछे. पोते तंदुरस्त अथवा रोगी होय, पण ते एवुं चिंतवे के मारे अमुक दिवसे छट्ठ के अट्ठम विगेरे तप करवुं, पछी गमे तेवुं कारण उपजे, तोपण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे, पण छोडे नहीं, ते नियंत्रित पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाण जे काळे वज्रऋषभ नाराच संहननवाळा तथा चौदपूर्वी, दशपूर्वी अने जिनकल्पी हता, ते काळे हतुं; हाल तेनो विच्छेद थइ गयो छे.

कहेवाय ? ७ जे पच्चखाणमां आगार होय, ते केवुं पच्चखाण कहेवाय ? ८ निरवशेष पच्चखाण कोने कहेवाय ? ९ जेमां दाति, कोळीया अने घरनी संख्या करवामां आवे, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पर्युषण पर्व, कोटि, वज्ररुषभ नाराच संहनन, चौदपूर्वी, दशपूर्वी, जिनकल्पी, उच्छेद, आगार, अशन, अनाहार वस्तु, चउविहार, अनशन, दाति, परिमाण.

पाठ १८ मो.

पचखाण भाग ३ जो.

(नवमा सांकेतिक पचखाणना आठ भेद.)

कांइपण संकेत एटले चिन्ह करीने पचखाण लेवुं, ते नवमुं सांकेतिक पच्चखाण कहेवाय छे. आ पच्चखाण घणुंकरीने गृहस्थने होय छे. कोइ श्रावक पोरसी विगेरेना पच्चखाण करीने बहार कोइ कामे गयो होय, अथवा घरमां बेठो होय, अने पोरसीनो वखत पूरो थइ गयो होय, परंतु भोजननी सामग्री तैयार थइ न होय, ते वखते एवो विचार करे के, आटलो वखत मारो प-

च्चखाण वगरनो रहेसे, ते वखते ते एवो संकेत-चिन्ह करे के, " ज्यां सुधी हुं मूठ वाळी नवकार न गणुं, त्यां सुधी मारे पच्चखाण छे; ते सांकेतिक पच्चखाणनो पहेलो भेद छे. वळी मुद्रिका धारी राखवा सुधीनो नियम ते बीजो भेद छे. गांठ बांधी राखवा सुधीनुं पच्चखाण धारे ते त्रीजो भेद छे. ज्यां सुधी घरमां होय, त्यां सुधी धारे, ते चोथो भेद छे.

ज्यां सुधी शरीरना परसेवानां टीपां नीकळे, त्यां सुधी धारे ते पांचमो भेद छे. ज्यां सुधी श्वास लेवाय, त्यां सुधी धारे ते छट्ठो भेद छे. ज्यां सुधी पात्र विगेरेने पाणीनां टीपां सुकाय, अथवा हाथ विगेरे सुकाय, त्यां सुधी धारे, ते सातमो भेद छे. ज्यां सुधी दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे, ते आठमो भेद छे.

आ प्रमाणे सांकेतिक पच्चखाणना आठ भेद कहेला छे. यदि दोरमां विगेरे पच्चखाण न करे, अने केवल अभिग्रह करे तो गांठ विगेरे न छोडे, त्यां सुधी तेने पच्चखाण थाय. तेथी आ सांकेतिक पच्चखाण जेम बीजा पच्चखाणोनी साथमां थाय छे, तेम अभिग्रहने लीधे पण थइ शके छे. माटे पण जो कोइ स्थानके ज्यां सुधी [illegible] विगेरे न वाळ्या होय, त्यां सुधी भवना सामायिक [illegible] कारण होय, त्यारे पण आ अभिग्रह संकेत पच्चखाण थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सांकेतिक पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ संकेत एटले शुं ? ३ आ पच्चखाण कोनाथी करी शकाय छे ? ४ आ पच्चखाणना केटला भेद छे ? ५ पहेला भेदमां शुं आवे छे ? ६ मुद्रिका पहेरी राखवा सुधीनुं पच्चखाण धारे, ते केटलामो भेद छे ? ७ सांकेतिक पच्चखाणनो त्रीजो भेद कयो ? ८ घरमां होय, त्यां सुधी धारे ते केटलामो भेद छे ? ९ सांकेतिक पच्चखाणनो पांचमो भेद कयो छे ? १० ज्यां सुधी श्वास लेवाय, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद छे ? ११ सांकेतिक पच्चखाणनो सातमो भेद कयो छे ? १२ दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद गणाय छे ? १३ सांकेतिक पच्चखाण अभिग्रहने विषे थइ शके के नहीं ? १४ आ पच्चखाण साधुने पण क्यारे थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संकेत, पोरसी, सामग्री, ज्योति, अभिग्रह, मुद्रिका.

पाठ १९ मो.

पचखाण भाग ४ थो.

(दशमा अद्धा पचखाणना दश भेद.)

जेमां बे घडी तथा पोरसी विगेरेना काळना प्रमाणथी पचखाण लेवामां आवे, ते दशमुं अद्धा पचखाण अथवा काळ पच्चखाण कहेवाय छे. ते अद्धा पचखाणना दश भेद छे. १ नोकारसी, २ पोरिसी, साढपोरसी, ३ पुरिमड्ढ, ४ एकासण, ५ एकलठाणुं, ६ आंबिल, ७ अभत्तार्थ, ८ चरिम, ९ अभिग्रह, अने १० विगइ, एवां तेनां नाम छे. जे नवकार कहीने पारवामां आवे, अने जेनुं बे घडीनुं प्रमाण छे, ते पहेलुं नोकारसी पचखाण कहेवाय छे. एक पोहोर दिवस सुधीनुं जे पचखाण ते बीजुं पोरसी पचखाण कहेवाय छे. साढपोरसी एटले दोढ पोहोरनुं पचखाण पण तेमां आवी जाय छे. बे पोहोरनुं पचखाण ते त्रीजुं पुरिमड्ढ पचखाण कहेवाय छे. पुरिमड्ढनुं बीजुं संस्कृत नाम पुरिमार्द्ध पण छे. एकासणुं एटले एकज वार खावानुं नियम ते चोथुं एकासणुं पचखाण कहेवाय छे. एकज वार अने एक आसन उपर [illegible] खावुं, ते पांचमुं एकलठाणुं पचखाण कहेवाय [illegible] आ एकलठाणामां पाणी पण एकज वार पीवाय छे.

[illegible]

जेमां विगय तथा निवीआता खवाय नहीं, अने लुखुं रांधेलुं अनाज पाणीमां धोइने खावुं, ते आयंबिल नामे छठ्ठुं पच्चखाण कहेवाय छे. जे उपवासनुं पच्चखाण ते अभक्तार्थ नामे सातमुं पच्चखाण कहेवाय छे, अभक्तार्थ पच्चखाणनुं मागधीमां नाम अब्भत्तट्ठे एवुं छे. दिवस चरिम अथवा भव चरिम विगेरेनुं जे पच्चखाण ते आठमुं पच्चखाण कहेवाय छे.

" ज्यारे अमुक कार्य कराय, त्यारेज अमुक वस्तु खावी, " एवो नियम धारीने जे पच्चखाण लेवुं, ते नवमुं अभिग्रह पच्चखाण कहेवाय छे. विगइ एटले विकार करे तेवां दुध, दहीं, घी, गोळ, तेल, विगेरे वस्तुओ खावानुं जे पच्चखाण करे, ते दशमुं विगइ पच्चखाण कहेवाय छे. आ दशे पच्चखाणोमा काळनी मुख्यता छे, माटे ते अद्धा पच्चखाण कहेवाय छे.

आ वधामां नोकारसी कर्या पछी आगळ पोरसी विगेरे पच्चखाण थइ शके, ते विना न थइ शके. जो कदि नोकारसी कर्या विना पोरसी विगेरे करे, तो ते फाळ संकेतरुप जाणवो. तेने माटे वृद्ध लोकोना संप्रदायमां एम पण कहे छे के, जे नोकारसी पच्चखाण छे, ते रातना चउविहार विगेरेना पच्चखाणनुं शिक्षारुप छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अद्धा पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ अद्धा पच्चखाणनुं बीजुं नाम शुं छे ? ३ अद्धा पच्चखाणना केटला भेद छे ते कहो, अने तेनां नाम आपो. ४ नोकारसी पच्चखाण कोने कहेवाय ? ५ एक पोहोर सुधीना पच्चखाणने शुं कहे छे ? ६ साड्ढपोरसी पच्चखाण केटलां गणाय छे ? ७ पुरिमड्ढ पच्चखाण एटले शुं ? ८ पुरिमड्ढनुं संस्कृत नाम शुं छे ? ९ एकासणानुं पच्चखाण केटलामुं कहेवाय छे ? १० एकलठाणुं पच्चखाण एटले शुं ? ११ आयंबिल पच्चखाण एटले शुं ? १२ अभत्तार्थ पच्चखाणनो अर्थ शो, अने तेनुं बीजुं नाम शुं छे ? १३ आठमुं पच्चखाण कयुं कहेवाय छे १४ अमुक कार्य कराय, त्यारेज अमुक वस्तु खावी, ए पच्चखाणनुं नाम शुं ? १५ विगइ पच्चखाण एटले शुं ? १६ आ दश पच्चखाणोमां मुख्यता कोनी छे ? १७ नोकारसी पच्चखाणने माटे शुद्ध लोकोनां शो संबंध छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजणी आपवी.

पच्चखाण, अद्धा, दिवस चरिम, भव चरिम, अभिग्रह, विगय, अंग, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]

पाठ २० मो.

पचखाण करवानुं फळ.

पच्चखाण करवाथी श्रावकने सारुं फळ मळे छे. कोइ पण काम आपणाथी स्वाभाविक रीते सारुं थइ जाय, पण जो ते पच्चखाणनो नियम लइने करवामां आव्युं होय, तो तेनुं फळ मळे छे, अने नहीं तो ते नकामुं थइ जाय छे. दाखला तरीके नोकारसीनुं पच्चखाण न कर्युं होय, तोपण आपणे अमुक वखत पछी स्वाभाविक रीते कांइ पण आहारपाणी वापरीए छीए, पण जो नोकारसीनुं पच्चखाण लइ, तेने नवकारथी पारीने ते वापरीए तो आपणने सारुं फळ मळे छे, माटे दरेक श्रावके पच्चखाण लेवानो उत्तम नियम राखवो जोइए.

पच्चखाण लेवाथी आलोक अने परलोक बन्नेनुं फळ मळे छे. आ लोकनुं पण धम्मिलकुमारे मेळव्युं हतुं, जेनी कथा धम्मिलना रासमां मख्यात छे, अने [illegible] फळ दामनक नामे एक वेपारीने मळ्युं हतुं. [illegible] नामे एक वेपारी राजगृह नगरमां थयो हतो. [illegible] आठ वर्षनो हतो, त्यारे मरकीना रोगथी [illegible] नाश पामी गयुं हतुं. पछी दामनक [illegible] एक सागरदत्त नामना वेपारीने घेर [illegible] फाइ पे साधु सागरदत्त वेपारीने [illegible]

चढ्या; त्यां दामनकने जोइ तेमांथी एक साधु बोल्या के, आ छोकरो आ घरनो धणी थशे. आ वात गुप्तरीते सागरदत्ते सांभळी, तेथी तेने दामनक उपर इर्ष्या उत्पन्न थइ, अने तेने छुपीरीते मारी नाखवा चांडालने सोंप्यो. वनमां एकांते चांडाल मारवा लइ गयो, पण तेने दया आववाथी तेनी टचली आंगळी कापी लइ सागरदत्तने एंधाणी तरीके आपी, अने दामनकने छोडी मूक्यो. दामनक भय पामीने त्यांथी नासी छुट्यो. फरतो फरतो ते सागरदत्तना वसावेला गोकुळ गाममां आवी चड्यो. गोकुळपतिए ते बाळकने स्वरूपवान् जोइ पोताना पुत्र तरीके राख्यो. अनुक्रमे बाळक युवान थयो, त्यारे सागरदत्त शेठ त्यां आव्यो; तेणे दामनकने ओळखी लीधो. पछी तेने कोइ कार्यनुं बहानुं करी एक पत्र लखी पोताना पुत्रनी पासे मोकल्यो, अने तेमां तेने विष आपवानुं लख्युं. दामनक चाल्यो, त्यां रस्तामां वाडीनी अंदर कामदेवनुं मंदिर आव्युं, तेमां तेणे विश्राम लीधो, अने ते त्यां सुइ गयो; त्यां सागरदत्तनी विषा नामनी दीकरी ते मंदिरमां वर मेळववाने कामदेवनी पूजा करवा आवी. आ सुंदर कुमारने सुतेलो जोइ तेनी उपर मोह पामी ता- [illegible] हवां न [illegible], तेमां पोताना पिताना अक्षर ओळख्या. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जागी उठयो. ते त्यांथी सागरदत्तने घेर आव्यो. सागरदत्तना पुत्रे ते पत्र वांची, तेनी साथे पोतानी बहेन विषाने परणावी. सागरदत्तना पुत्र साथे दामनकनी प्रीति थइ, ते वात जाणी सागरदत्त घणोज नाखुश थइ गयो. पछी कुळमातानुं पूजन करवा माटे दामनकने मोकल्यो, अने त्यां तेने ठार मारवाने चांडाल राख्या. कुळमातानुं पूजन करवानो वखत नठारो हतो, तेवी वेळाए नवा परणेलाने मातानुं पूजन करवा मोकलवो, ते योग्य न लागवाथी सागरदत्तनो पुत्र तेनीवती पूजन करवाने गयो, त्यां अगाउथी संकेत करी राखेला चांडालोए तेने मारी नाख्यो. आ वात सांभळी सागरदत्तनी छाती शोकथी फाटी गइ, अने ते मरण पामी गयो. पछी सागरदत्तना घरनो स्वामी दामनक थयो.

दामनकनुं आवुं पुण्य पच्चखाणना नियमथी थयुं हतुं. दामनक पूर्व भवे कुलकर हतो, तेणे जिनदास नामना कोइ श्रावकनी संगतथी साधु पासे जइ मच्छनुं मांस न खावानुं पच्चखाण लीधुं हतुं. एक वखते दुकाळ पडवाथी लोको मांसाहारी थया, एटले लोको ते कुलकरने बळात्कारे उपाडी माछलां पकडवाने पाणीना धरा पासे लाव्या. त्रण दिवस सुधी बळात्कारे ते काम कराव्युं, तेवामां एक माछलानी पांख तुटेली जोइ तेणे अनशन लीधुं. पछी ते मृत्यु पामीने आ दामनक थइने अवतर्यो हतो.

सारांश प्रश्नो.

१ पच्चखाण करवाथी शो लाभ छे ? २ दो
श्रावके केवो नियम राखवो जोइए ? ३ पच्चखाण लेवा
आ लोकनुं फळ कोने मळ्युं हतुं ? ४ पच्चखाण लेवा
परलोकनुं फळ कोने मळ्युं हतुं ? ५ दामनक कोण हतो
६ ते दुःखी थइने कया नगरमां कोने घेर रह्यो हतो
७ सागरदत्ते तेने माटे शुं कर्युं हतुं ? अने ते शामाटे क
हतुं ? ८ दामनकने विषानी साथे कोणे परणाव्यो हतो
अने केवी रीते परण्यो हतो ? ९ विषाए सागरदत्त
पत्रमां केवा शब्दनो शो फेर कर्यो हतो ? १० दामनकने
सागरदत्ते शेनुं पूजन करवा मोकल्यो हतो ? ११ दामन
कने बदले कोण पूजन करवा गयुं हतुं ? १२ सागरदत्त
छेवटे शाथी मृत्यु थयुं हतुं ? १३ दामनक पूर्व भवे कोण
हतो, अने तेणे शुं पुण्य कर्युं हतुं ? ते हकीकत समजावो.
१४ दामनक सागरदत्तना घरनो स्वामी कया पुण्यथी
थयो हतो ?

खंड २ जो.

पाठ २१ मो.

सदाचार भाग १ लो.

शिक्षक—छोकराओ ! आजे तमने सदाचार विषे शीखववानुं छे, माटे तेमां ध्यान आपजो.

छोकराओ—साहेब ! अमे बराबर ध्यान आपीशुं, आप कृपा करीने सदाचार विषे समजावो.

शिक्षक—छोकराओ ! आचार एटले आचरण, जे सारुं आचरण ते सदाचार कहेवाय छे. सदाचार राखवाथी धर्म सारी रीते जळवाय छे. जेनामां सदाचार होतो नथी, ते माणस धर्मने साधी शकतो नथी. धर्म साधवानी योग्यता शुचि एटले पवित्र रहेवाथी प्राप्त थाय छे. जेनामां अशुचि होय, तेनामां धर्म साधवानी योग्यता आवती नथी. शुचि-पवित्र रहेवानी रीत सदाचारथी मेळवाय छे. ज्यारे कायानी शुद्धि थइ, एटले हृदय निर्मळ थवाथी मन वचननी शुद्धि थइ जाय छे; माटे दरेक श्रावके सदाचार पाळवो जोइए. सदाचारने माटे एक विद्वान् लखे छे के, अनाचार राखवाथी मलिनता आवे

छे, अने अति आचार राखवाथी मूर्खता देखाय छे, [illegible] विचार अने आचार बंनेना योगने सदाचार कहेछे.

आ शरीर हमेशां अशुचिथी भरेलुं छे, तेथी [illegible] द्रव्यथी शुद्धि करवानी जरुर छे. लघुनीति तथा [illegible] नीतिए जइ आव्या पछी राख तथा जळथी हाथ [illegible] धोवा जोइए, खाते जवानां वस्त्र जुदां राखवां जोइए. [illegible] नतां मुधी तो जंगल जइ आव्या पछी न्हावुं जोइए. [illegible] छतां कदि तेम न बने, तो हाथ पग बराबर साफ [illegible] कोगळा करी, मोढुं धोई, बधी जातनी अशुचि [illegible] जोइए.

छोकराओ—साहेब ! हवे अमे सदाचारने [illegible] समज्या. हजु पण कांइ ते विषे बीजुं समजावो.

सारांश प्रश्नो.

१ आचार एटले शुं ? २ सदाचार एटले शुं ? ३ सदाचार राखवाथी शुं लाभ छे ? ४ [illegible] [illegible] नथी ? ५ [illegible] [illegible] छे ? ६ [illegible] [illegible] नथी ? ७ सदाचारथी [illegible] छे ? ८ [illegible] [illegible]

पाणीथी हाथ पग क्यारे धोवा जोइए ? ११ जंगल जइ आव्या पछी शुं करवुं जोइए ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आचरण, शुचि, अशुचि, निर्मळ, मलिनता, मूर्खता, ...घु नीति, वडी नीति.

पाठ २२ मो.

सदाचार भाग २ जो.

शिक्षक—छोकराओ ! तमे सदाचारने माटे थोडुं तो समज्या हशो, हवे ते विषे वधारे समजावुं, ते ध्यानमां राखजो.

सदाचारनो बीजो शब्द आचार छे, तेना त्रण भाग पडे छे. मननो आचार, वचननो आचार, अने कायानो आचार. हमेशां मन चोख्खुं राखवुं, ए मननो आचार कहेवाय छे. मननो आचार राखवाथी मन चोख्खुं रहे छे, अने ज्यारे मन चोख्खुं रहे, तो पछी तेमां नठारा विचारो आवता नथी.

छोकराओ—साहेब ! तमे कह्युं के, मन चोख्खुं ...राखवुं, त्यारे मन चोख्खुं न रहे, ए केवी रीते बनतुं

इशे ? वळी मन शेनाथी मेलुं थाय ? ते बधुं अमने सारी रीते समजावो.

शिक्षक—छोकराओ ! खोटुं ध्यान करवाथी, मनमां कपट राखवाथी, अने खराब विचार करवाथी मन मेलुं थइ जाय छे. ज्यारे मन मेलुं थयुं, एटले मनने आचार नाश पामे छे, तेथी करीने माणस अनेक प्रकारनां नठारां काम करे छे, माटे हमेश मनने चोख्खुं राखवुं. मनने चोख्खुं राखवुं, ए मननो आचार पाळ्यो कहेवाय छे.

छोकराओ ! बीजो वचननो आचार छे. सारां वचनो बोलवां, सत्य बोलवुं, सत्पुरुषनां वखाण करवां, बोलवामां नम्रता तथा विनय राखवो, ए वचननो आचार कहेवाय छे. वचननो आचार राखवाथी सारां वचनो बोलाय छे, अने सारां वचनो बोलवाथी सारां काम करी शकाय छे. जेओ वचननो आचार राखता नथी, तेओ नठारां वचन बोले छे. तेमना मुखमांथी वेरवचनो अने बीजानां निंदानां वचनो नीकळे छे, तेवां माणसो वचनना आचार विनाना गणाय छे.

छोकराओ ! त्रीजो कायानो आचार छे. [illegible] वचनो आचार ए सारां, अने कायानो आचार [illegible] करवो छे. शरीरनी अशुचि दूर करवी, शरीर [illegible] [illegible], शरीर [illegible] [illegible] [illegible]

मोढुं, हाथ, पग, बराबर संभाळीने धोवां. आंख, कान, अने नाकना मेल दूर करी, तेने साफ राखवां, ए बधो कायानो आचार कहेवाय छे. कायानो आचार राखवाथी वळी आलोकमां पण केटलाएक फायदा थाय छे. शरीर साफ राखनारने चामडीना के रुधिरना रोगो थता नथी, तेथी घणे भागे शरीरनी तंदुरस्ती सारी रहे छे, माटे दरेक श्रावकना छोकराए कायानो आचार साचववानी जरुर छे.

छोकराओ—साहेब ! हवे अमे सदाचारमां बराबर समजी गया. आपनी आ शीखामण प्रमाणे अमे हमेशां चालीशुं, अने आपनो आभार मानीशुं.

सारांश प्रश्नो.

१ सदाचारनो बीजो शब्द शो छे ? २ आचारना केटला भाग पडे छे ? तेनां नाम आपो. ३ मननो आचार एटले शुं ? ४ मन शाथी मेलुं थाय छे ? ५ वचननो आचार एटले शुं ? ६ वचननो आचार न होय, तो केवां वचनो नीकळे छे ? ७ कायानो आचार एटले शुं ? ८ भावथी अने द्रव्यथी कया कया आचार छे ? ९ कायानो आचार राखवाथी आ लोकमां शा शा फायदा थाय छे ?

८ जीववाळी भूमि उपर नहावुं नहि, तथा तेवी भूमि उपर मळ मूत्र करवां नहि.

९ जयणा राख्या विना हालवुं चालवुं नहि.

१० जीववाळा दाणा विगेरे दळवा, भरडवा तथा रांधवा नहि.

११ धर्मनां काम अनादरथी करवां नहि.

१२ देव, गुरु अने साधर्मिओनी निंदा तथा द्वेष करवो नहि.

१३ देरासरनुं द्रव्य खावुं नहि.

१४ देव, गुरु अने धर्मनी निंदा करनारनी संगत करवी नहि.

१५ धर्मी जीवोनी मश्करी करवी नहि.

१६ अति कषायवाळां काम करवां नहि.

१७ पंदर कर्मादाननां आचरण करवां नहि.

१८ पापवाळी नोकरी करवी नहि.

आ अढार न करवानां काम हुं करीश नहीं, कोइनी पासे करावीश नहीं, अने करता होय तेमने अनुमोदीश नहीं.

हमेशां आ प्रमाणे याद करवाथी विवेक एक सारो उत्तम श्रावक थयो हतो, अने तेनुं विवेक एवुं नाम जगतमां सार्थक थयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ धर्मदास केवो श्रावक हतो ? २ तेने केटला दीकरा हता ? ३ विनय अने विवेकने ते शा शा शिख शीखवतो हतो ? ४ विवेक हमेशां शुं याद करतो हतो ? ५ न करवानां काम केटलां गणाव्यां छे ? ६ ते न करवानां काम याद करवाथी विवेकने शो लाभ थई हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

धरमी, ईंधणां, तांबुल, मद्य, पंदर कर्मादान.

पाठ २८ मो.

करवा योग्य काम.

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

मनमां ठसावी दीधुं हतुं. तेथी विनय हमेशां सवारे तेने याद करतो हतो.

१ जे देशमां जे काम न करवा योग्य होय, ते देश विरुद्ध गणाय छे.

२ जे काळे जे काम न करवा योग्य होय, ते काळ विरुद्ध गणाय छे.

३ जे माणसो राजानी विरुद्ध होय, तेमनी साथे मळवुं, अथवा जे राजाए मना करेलुं होय, ते करवुं, ते राज विरुद्ध गणाय छे.

४ जे काम लोकमां नठारुं कहेवातुं होय, अथवा जे कामने लोको धिकारता होय, तेवुं काम करवुं ते लोक विरुद्ध कहेवाय छे.

५ जे काम धर्मनी विरुद्ध होय, ते धर्म विरुद्ध कहेवाय छे.

आ पांचे प्रकारना विरुद्ध वगरनुं जे काम होय, ते करवा योग्य काम गणाय छे तेवां करवा योग्य कामने विनय हमेशां याद करतो, अने ते प्रमाणे वर्त्ततो हतो. तेम वर्त्तवाथी विनय ज्यारे लायक उम्मरनो थयो, त्यारे ते एक उत्तम प्रकारनो श्रावक बन्यो हतो.

साराश प्रश्नो.

१ विरुद्ध केटला प्रकारना छे ? ते गणावो. २ देश विरुद्ध अने काळ विरुद्ध एटले शुं ? ३ राज विरुद्ध, लोक विरुद्ध, अने धर्म विरुद्ध एटले शुं ? ४ करवा योग्य काम केवुं गणाय ? ५ करवा योग्य काम करवाथी विनय केवो थयो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

विरुद्ध, काळ, उत्तम प्रकारनो.

पाठ २९ मो.

भोजन विधि भाग १ लो.

आपणना आचारमां भोजन विधि पण मोटो छे. विधि प्रमाणे भोजन करवाथी माणसमां घणा गुण थाय छे, अने भोजनना आचार पाळवाथी शरीरे [illegible] पण [illegible] थाय छे. माटे [illegible] भोजन करवुं. वळी पुरी भोजननो [illegible] [illegible] [illegible] भोजन करवाथी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भोजन [illegible]

आज्ञानो भावना भाववी, अने योग होय तो दान देवुं, तेमज माता, पिता, भाइ, बहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान—दुःखी, अने बांधेलां गाय विगेरे जानवरोनी संभाळ पहेलां लेवी जोइए. प्रथम मातापिताने भोजन करावबुं, ते पछी सरखा आसन उपर बेसी, पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी, देव गुरुनुं नाम लइ, पचखाण पारी, सर्व नियमोने संभारी शांतिथी भोजन करवुं.

जे पोतानी तबीयतने माफक आवे तेवा पदार्थो जमवा. खावामां कोइ चीज उपर अति लोलुपता राखवी नहीं. जे वस्तु अभक्ष्य एटले पापवाळी होय ते खावी नहीं. खावामां मिताहार करवो, वधारे पडतुं जमवुं नहीं. वधारे पडतुं जमवाथी अजीर्ण, उलटी, झाडो विगेरे थाय छे. जे माणस मिताहार करे छे, ते बळवान् थाय छे, अने जे वधारे पडतुं जमे, ते रोगी थाय छे. जो आखी जींदगी निरोगी रहेवुं होय, तो नीचेनी पांच बाबत हमेशां ध्यानमां राखवी.

१ भूख लागे त्यारे हितकारी थोडो खोराक लेवो.
२ डाबी बाजु नीचे राखी सुवुं.
३ थोडो घणो चालवानो अभ्यास राखवो.
४ ज्यारे हाजत थाय, त्यारे तरत दिशा मात्रा करवां.
५ विषय भोग घणोज ओछो करवो.

आ पांच बाबत ध्यानमां राखी, ते प्रमाणे नियमसर वर्त्तवामां आवे, तो आखी जींदगी निरोगी रहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ विधि प्रमाणे भोजन करवाथी शो फा[illegible] थाय छे ? २ भोजननो आहार सारववाथी शुं थाय छे ? ३ भोजन क्यारे करवुं ? ४ भोजन करती वखते [illegible] भावना भाववी ? ५ भोजन करती वखते कोनी [illegible] संभाळ लेवी जोइए ? ६ भोजन करवानी जग्या [illegible] ठेकाणे राखवी ? ७ पहेलां कोने भोजन कराव[illegible] ? ८ पछी शुं शुं करीने भोजन करवुं ? ९ भोजनना [illegible] पदार्थो जमवा ? १० केवी वस्तु खावी नहीं ? ११ [illegible] पारे परठवुं जमवाथी शुं थाय छे ? १२ जे [illegible] करे छे, तेने शुं थाय छे ? १३ आखी जींदगी [illegible] रहेवाने पांच बाबत ध्यानमां राखवानी छे, ते [illegible] बाबत ? १४ ए पांच बाबत ध्यानमां राखवाथी [illegible] थाय छे ?

[illegible]

[illegible]

पाठ २६ मो.

भोजन विधि भाग २ जो.

श्रावके भोजन विधिमां पचीश बाबतोनो त्याग करवानो छे. १ अति सवारे, अति संध्याकाळे, अने रात्रे भोजन करवुं नहीं. २ सडेलुं अने वासी अन्न खावुं नहीं. ३ हालतां चालतां खावुं नहीं. ४ जमणा पग उपर हाथ राखी खावुं नहीं. ५ खावाना पदार्थ हाथमां राखी खावुं नहीं. ६ खुल्ला आकाशमां, तडकामां, अने अंधारामां बेसी खावुं नहीं. ७ झाड नीचे बेसी खावुं नहीं. ८ तर्जनी (अंगुठानी पासेनी) आंगळी उंची राखी खावुं नहीं. ९ हाथ, पग, मुख विगेरे धोया विना खावुं नहीं. १० नम्र थइने के मेलां वस्त्र पहेरीने खावुं नहीं. ११ थाळी पकडया विना खावुं नहीं. १२ फक्त एक धोतीयुं पहेरी खावा बेसवुं नहीं. १३ भीनां वस्त्र पहेरी खावुं नहीं. १४ भीनुं वस्त्र माथे लपेटी खावुं नहीं. १५ ज्यारे अपवित्र होइए, त्यारे खावुं नहीं. १६ अति लंपट थइ एटले अकरांतीया थइ खावुं नहीं. १७ उपान पहेरी निःकेवळ भूमिपर बेसी खावुं नहीं. १८ विदिशा तथा दक्षिण दिशा तरफ मुख राखी खावुं नहीं. १९ चंडाल के धर्मभ्रष्टनी देखतां खावुं नहीं. २० फुटेला तथा मलिन भाजनमां खावुं नहीं. २१ हत्या करनार तथा रजस्वला स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहीं. २२ गाय,

भान तथा पंखीए सुंघेली, अजाणी अने फलीथी [illegible] करेली वस्तु खावी नहीं. २३ बचबचाट शब्द [illegible] खावुं नहीं. २४ उघाडी पडी रहेली वस्तु खावी [illegible] अने २५ मुख फाडतां बुरुं लागे, एम मुख करी [illegible] नहीं.

आ पचवीश नियमोने बराबर ध्यानमां राखी [illegible] हमेशां भोजन करवुं. अति खारुं, अति खाटुं, अति [illegible] अति टंडुं अने अति मीठुं खावुं नहीं. अति गरम [illegible] रस नाश पामे छे, अति खाटुं खावाथी इंद्रियोनां [illegible] कम थइ जाय छे, अति खारुं खावाथी नेत्र बगडी [illegible] छे, अति चीकणुं खावाथी नासिकानी [illegible] जाय छे. माटे दरेक पदार्थ साधारण रीते खाता. [illegible] थोडा थोडा बधा रस होवा जोइए. मीठुं बधा [illegible] खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कसाएलुं [illegible] खावाथी पित्त नाश पामे छे, ने तिखे चीकणा [illegible] खावाथी वायु दूर थइ जाय छे.

[illegible]

भींजाएला हाथ, गळुं, कपोळ, तथा आंख उपर लगाडवा नहीं.

एठुं मुकवुं नहीं, जोइए ते प्रमाणमांज लेवुं. जम्या पछी शरीरनुं मर्दन, दिशागमन, बोजो उठाववानुं काम, बेसी रहेवुं अने स्नान, एटलां काम करवां नहीं. कोइ विशेष पुण्यनुं काम शरु करतां अने आठम, चौदश विगेरे पर्वने दिवसे भोजन करवुं न जोइए. एवी तपश्चर्या आलोक अने परलोकमां हितकारी छे, तथा गुणकारी छे. भोजन कर्या पछी नवकार मंत्र गणी उठवुं. आ विधि प्रमाणे भोजन करनारो श्रावक सदाचारने सेवनार तथा स्वधर्म प्रमाणे वर्त्तनार गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ भोजन विधिमां केटली बाबतोनो त्याग करवानो छे ? २ ते पचवीश बाबत टुंकामां गणावो. ३ रस, इंद्रियोनी शक्तिनो नाश, नेत्रनुं बगडी जवुं, नासिकानी शक्तिनी मंदता केवा केवा पदार्थो खावाथी थाय छे ? ४ कफ, पीत्त, अने वायु केवो पदार्थ खावाथी नाश पामे छे ? ५ जमती वखते पहेलुं, वचे, पाछळथी केवुं केवुं जमवुं ? ६ जमती वखते पाणी पीवुं क्यारे सारुं, अने क्यारे नठारुं ? ७ जम्या पछी भींजाएला हाथ क्यां क्यां न लगाडवा जोइए ? ८ जम्या पछी शुं शुं न

करवुं जोइए ? ९ कये कये दिवसे भोजन न करवुं जोइए ? १० तपस्या करवाथी शो लाभ थाय छे ? ११ भोजन कर्या पछी शुं भणीने उठवुं ? १२ [illegible] प्रमाणे भोजन करनारो श्रावक केवो गणाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

तर्जनी, लंपट, उपान, निःकेवळ, [illegible], [illegible] भ्रष्ट, रजस्वला, रस, कफ, पीत्त, अग्नि मंद, दिगम्बर.

खंड ३ जो.

पाठ २७ मो.

जीव.

[illegible]

चाली शके नहीं, अने स्थिरज रहे, ते स्थावर जीव कहेवाय छे. त्रीजी जातिमां तेना त्रण भेद पडे छे. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसक वेद अर्थात् स्त्री जातिना, पुरुष जातिना, अने नपुंसक जातिना जीव होय छे ते. चोथी जातिमां देवता, मनुष्य, नारकी अने तिर्यंच एम चार जातना जीव थाय छे. पांचमी जातिमां एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेरेंद्रिय, चौरेंद्रिय, अने पंचेंद्रिय एम पांच भेद पडे छे, अने छट्ठी जातिमां छकाय जीव थाय छे. पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय वनस्पतिकाय अने त्रसकाय. आ प्रमाणे जीवनी छ जातिओ थाय छे. तेमां पांचमी जातिमां जे एकेंद्रिय [एक इंद्रिवाळा] जीव कहेल छे, तेना सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेद पडे छे. सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव निरतिशयी[1] सूक्ष्म नाम कर्मना उदयवाळा होवाथी ते घणा झीणामां झीणा होय छे. ते आ बधा चौद राज्यलोकमां व्यापीने रहेला छे, ते पर्वत विगेरेने भेदीने जाय आवे छे, ते कोइथी भेदाता नथी, अने अग्निथी बळता नथी. माणसोनां चर्मचक्षुथी[2] जोवामां आवता नथी, अने माणस के कोइ बीजाना उपयोगमां आवता नथी.

बादर एकेंद्रिय जीव दृश्य[3] सातिशय नाम कर्मना उदयवाळा होवाथी माणसोथी जोइ शकाय छे, एक नि-

---

१ एक जातनुं कर्म छे, जे कर्म उदय आवे, त्यारे प्राणी झीणामां झीणुं रुप मेळवी शके छे. २ चामडानी आंखो. ३ एक जातनुं कर्म छे. जे उदय आवतो प्राणी दृश्य-जोइ शकाय तेवुं रुप मेळवे छे.

यमिन ठेकाणे ते रही शके छे, कोइथी भेदी शकाय के अग्निथी बाळी शकाय छे, अने ते सर्वना उपयोगमां आवे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ जैन शास्त्रमां केटलां तत्त्व छे? २ जीव कोने कहेवाय? ३ जीवनी वधी मळीने केटली जाति? ४ पहेली, त्रीजी अने पांचमी जाति कई? ते जणावो. ५ त्रस जीव एटले शुं? ६ स्थावर एटले शुं? ७ ८ प्राण कया कहेवाय? ८ सूक्ष्म अने बादर एटले शुं? ९ निगोदनी सूक्ष्म अने साधारण [illegible] ए शुं छे? ते समजावो.

निश्चे नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

नरक, [illegible], शरीर, [illegible], [illegible] [illegible], आहार, [illegible], इन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible].

पाठ २८ मो.

पर्याप्ति.

जीवना शरीरनो बंध पुद्‌गळोथी बने छे. ए पुद्‌गळोना वधाराथी जे कांइ पुद्‌गळना परिणामने[1] करनारी कोइ जातनी शक्ति थाय, ते पर्याप्ति कहेवाय छे. ते पर्याप्तिनो ओछो वधतो संबंध जीवनी साथे होय छे. ते पर्याप्तिने आधारेज जीवनुं जीवन[2] रहे छे. पर्याप्तिनो टुंको अर्थ आहारादि[3] पुद्‌गळोनो मेळाप एवो पण थइ शके. ए पर्याप्तिना छ भेद छे. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीर पर्याप्ति, ३ इंद्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, ५ भाषा पर्याप्ति अने ६ मनः पर्याप्ति.

१ आहार पर्याप्ति दरेक जीव बीजा जीवनी उत्पत्ति वखते जे शक्तिवडे आहार ले, अने ते आहारने पछी रसपणे परिणमाववानी जे शक्ति ते.

२ शरीर पर्याप्ति आहारना रसरुप थएला परिणामने रस, रुधिर, मांस, चरबी (मेद), अस्थि[4], मज्जा[5] अने वीर्य, ए सात धातुरुपे परिणमावी शरीर बांधवानी जे शक्ति ते.

---

१ एक रुपने बीजे रुपे थइ जवुं, ते ' परिणाम कहेवाय छे. २ जीवइ. ३ खाउं ते. ४ हाडकां. ५ एक जातनी धातु छे

३ इंद्रिय पर्याप्ति सात धातुपणे परिणमावेला रसने जेने जेटली इंद्रियो जोइए, तेटली इंद्रियपणे परिणमाववानी जे शक्ति ते.

४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति उपरनी त्रण पर्याप्ति बांधीने पछी श्वासोच्छ्वासने योग्य एवी वर्गणाना दल (दळिया) लइ, तेमने श्वासोच्छ्वासपणे परिणमावी अवलंबी[1] मुकवानी जे शक्ति ते.

५ भाषा पर्याप्ति भाषाने योग्य एवां पुद्गल लइ, तेने भाषापणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते.

६ मनः पर्याप्ति मनोवर्गणा योग्य पुद्गल लइ तेने मनपणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते.

आ छ पर्याप्तिओ जीवने होय छे. तेमांथी जे जीवो जेटली पर्याप्ति करी छे, तेटली पूरी कर्या पछी मरे छे, ते पर्याप्ता जीव कहेवाय छे. अने जेने जेटली करी छे, तेटली पूरी कर्या विना मरण पामे, ते अपर्याप्ता जीव कहेवाय छे.

* छ पर्याप्तिमांथी आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति अने इंद्रिय पर्याप्ति आ त्रण पर्याप्तिओ पूरी कर्या विना कोइ जीव मरतो नथी.

[illegible]

सारांश प्रश्नो.

१ पर्याप्ति एटले शुं ? २ तेनो टुंको अर्थ शुं थइ
क ? ३ पर्याप्तिना केटला भेद छे ? ४ परिणाम शब्दनो
र्थ शो ? ५ सात धातु क्या ? ६ वर्गणा एटले शुं ?
दलिया एटले शुं ? ८ अवलंबी मुकवानी एटले शुं ?
पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जीव कया कहेवाय ? १० कइ
इ पर्याप्ति पूरी कर्या विना जीव मरतो नथी ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

परिणाम, पुद्गल, पर्याप्ति, जीवन, आहार, उत्पत्ति,
ाज्ञा, अस्थि, वर्गणा, दलिक, अवलंबी, मनोवर्गणा.

पाठ २९ मो.

जीवना चौद भेद.

जीवनी छ जातिमां पांचमी जातिनी अंदर पंचेंद्रिय जीव कहेल छे, तेने चामडी, जीभ, नाक, आंख अने कान—ए पांच इंद्रियो होय छे. ए पंचेंद्रिय जीवना संज्ञी अने असंज्ञी एवा बे भेद थाय छे. जेनामां मननी संज्ञा (भान) होय ते संज्ञी, अने जेनामां मननी संज्ञा

सारांश प्रश्नो.

१ पांच इंद्रियोनां नाम कहो. २ संज्ञी अने असंज्ञी शुं ? ते समजावो. ३ जीवना सात भेद क्या ? ते ावो. ४ क्या जीवना एक एक भेद थाय छे ? अने ा जीवना बे बे भेद थाय ? ते जणावो.



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संज्ञा, संज्ञी, असंज्ञी, पर्याप्ता, अपर्याप्ता.



पाठ ३० मो.

जीवना चौद भेद विषे कविता.

चोपाइ.

जीवतणी छो जाति बने,
एकेंद्रिय पांचमीमां[1] गणे. ॥ १ ॥
सूक्ष्म ने बादर तेना भेद,
द्वि त्रि[2] चौ इंद्रिय एक भेद. ॥ २ ॥

---

१ पांचमी जातिमां. २ द्वि–द्वींद्रि (बेरिंद्रिय), त्रि–त्रींद्रिय (तेरिंद्रिय), –चौरिंद्रिय, तेमना एक एक भेद छे.

पंचेंद्रिय बेथी भेदाय;
संज्ञी असंज्ञी ते कहेवाय. ॥ ३ ॥
ते साथे पर्याप्ता थाय,
अपर्याप्ता तेम गणाय. ॥ ४ ॥
जीवतणा चौद भेद मनाय,
जिनवाणीमां ते वंचाय. ॥ ५ ॥

पाठ ३१ मो.

अजीव तत्त्व.

पहेला जीव तत्त्वनी विरुद्धनुं जे तत्त्व ते बीजुं अजीव तत्त्व कहेवाय छे. जीव तत्त्व बराबर समजवाथी अजीव तत्त्व सहेजे जाणी शकाय छे. ते अजीवना अरूपी अजीव अने रूपी अजीव, एवा मुख्य बे भेद छे. जे वस्तु रंगरूपवाळी न होय, ते अरूपी कहेवाय छे. जे वस्तु रंगरूपवाळी होय, ते रूपी कहेवाय छे. अरूपी अजीवना दश भेद अने रूपी अजीवना चार भेद मळी सघळा चौद भेद थाय छे. ए चौद भेदनां नाम [illegible]

[illegible]

अने तेवी वस्तुना ज्ञानथी जीव अने अजीव तत्त्वनुं स्फुट ज्ञान सारी रीते थइ शके छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अजीव तत्त्व एटले शुं ? २ अजीव तत्त्वना मुख्य केटला भेद छे ? ३ रुपी अने अरुपी एटले शुं ? ४ रुपी अजीवना केटला भेद छे ? ५ अरुपी अजीवना केटला भेद छे ? ६ अरुपी अने रुपी अजीवना बधा मळीने केटला भेद थाय छे ? ७ अजीव शुं कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अरुपी, रुपी, आस्तिक, चेतन, जड.

पाठ ३२ मो.

अस्तिकाय.

अस्ति एटले प्रदेश तेनो काय एटले समूह, ते अस्तिकाय कहेवाय छे, एटले प्रदेशना समूहने अस्तिकाय कहे छे. चलन (हालवा चालवामां) मदद करवाना स्वभाव गुणवाळो जे प्रदेशनो समूह, ते धर्मास्तिकाय

कहेवाय छे. जे स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभा-वाळो होय, ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे. एक जग्याथी बीजी जग्यामां जतां जे अवकाश आपे, ते आकाशास्तिकाय कहेवाय छे; एटले चलनमां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समूह ते धर्मास्तिकाय, स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समूह ते अधर्मास्तिकाय, अने एक जग्याथी बीजी जग्याए जतां अवकाश आपनारो प्रदेशनो समूह, ते आकाशास्ति-काय एम समजवुं.

आ त्रणे प्रकारना अस्तिकायना स्कंध, देश अने प्रदेश एवा त्रण त्रण भेद पडे छे. जे आखो भाग होय, ते स्कंध कहेवाय छे. तेवा स्कंधनी साथे लागेलो जे केटलोएक भाग, ते देश कहेवाय छे. अने जेनो भाग कल्पतां बीजो भाग पडी शके नहीं, ते प्रदेश कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अस्तिकाय ए शब्दनो अर्थ शो. २ अस्तिकाय केटला छे. अने कया कया छे ? ३ धर्मास्तिकाय कोने कहे छे ? ४ अधर्मास्तिकाय कोने कहे छे ? ५ आकाशास्तिकाय कोने कहे छे ? ६ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकायना केटला भेद छे ? ७ स्कंध, देश अने प्रदेश ... समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अस्तिकाय, चलन, स्वभाव, अवकाश, स्कंध, देश, प्रदेश.

पाठ ३२ मो.

अरुपी अजीवना दश भेद.

अरुपी अजीवना दश भेद छे. धर्मास्तिकायना त्रण, अधर्मास्तिकायना त्रण, आकाशास्तिकायना त्रण, अने काळनो एक, एम मळीने अरुपी अजीवना दश भेद थाय छे. धर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे. अधर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे, अने आकाशास्तिकायना पण स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे, अने काळनो भेद एकज छे, तेने काळ अथवा अद्धा कहे छे. एकंदर तेना दश भेद नीचे प्रमाणे थाय छे—

१ धर्मास्तिकाय स्कंध.	२ धर्मास्तिकाय देश.
३ धर्मास्तिकाय प्रदेश.	४ अधर्मास्तिकाय स्कंध.
५ अधर्मास्तिकाय देश.	६ अधर्मास्तिकाय प्रदेश.
७ आकाशास्तिकाय स्कंध.	८ आकाशास्तिकाय देश.
९ आकाशास्तिकाय प्रदेश.	१० काळ—अद्धा.

सारांश प्रश्नो.

१ अरूपी अजीवना केटला भेद थाय ? २ धर्मास्तिकायना त्रण भेद गणावो. ३ अधर्मास्तिकायना त्रण भेद क्या ? ते कहो. ४ अद्धा एटले शुं ! ५ एकंदर अरूपी अजीवना दश भेद कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

काळ, अद्धा.

पाठ २४ मो.

रूपी अजीवना चार भेद.

बाळक संबोधमां आव्युं छे के, जे वस्तुमां [illegible] होय, ते रूपी अजीव पुद्गलास्तिकाय कहेवाय छे ते रूपी अजीवना चार भेद छे. १ पुद्गल स्कंध २ देश, ३ प्रदेश, अने ४ परमाणु. [illegible] छे. स्कंध, देश, अने प्रदेशनुं स्वरूप आगळ [illegible] आव्युं छे हवे पुद्गल अने परमाणुनुं [illegible] [illegible]

पाग पडी शके नहि एवो भाग, ते परमाणु कहेवाय छे. ए परमाणु पुद्गळनो एक भेद पण थाय छे. पुद्गळास्तिकाय रुपी होवाथी तेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अने शब्द रहेला छे, ते वळी सचित्त, अचित्त, अने मिश्र गमे तेवो शब्द, अंधकार, प्रकाश, चंद्रनी ज्योति, छाया, सूर्यनो तडको विगेरे गुणो तेनामां रहेला छे. ते चौद राजलोकमां व्यापक छे, अने संख्यात, असंख्यात अने अनंत प्रदेशी छे. धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ते बंनेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुप नथी, तेथी ते अरुपी कहेवाय छे. ते असंख्यात प्रदेशी अने चौद रज्जुप्रमाण लोकमां (चौद राजलोकमां) व्यापक छे. आकाशास्तिकाय पण लोकालोक व्यापक, अनंत प्रदेशी अने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुपथी रहित छे, तेथी ते पण अरुपी कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ रुपी अजीवना केटला भेद छे ? तेनां नाम आपो. २ पुद्गळ एटले शुं ? तेनुं स्वरुप बतावो. ३ पुद्गळना केटला भेद छे ? ते गणावो. ४ परमाणु एटले शुं ? ते कहो. ५ पुद्गळास्तिकायरुपी शी रीते छे ? ते विवेचन करी बतावो. ६ पुद्गळास्तिकायमां शुं शुं होय छे ? ते कहो. ७ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्ति-

कायमां शो तफावत छे ? ते विवेचन करी समजावो.
८ चंद्रनी ज्योति अने सूर्यनो तडको विगेरे गुन कोनां
रहेला छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

पुद्गल, परमाणु, पूरण गलन, निर्विभाज्य भाग, सचित, अचित, मिश्र, चंद्रनी ज्योति, चौद राजलोक, व्यापक, संख्यात, असंख्यात, अनंत प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, चौद राजलोक.

पाठ ३९ मो.

काळ.

काळ ए अरूपी अजीवनो दशमो भेद छे. [illegible]

जीवनो एक क्षुल्लक भव जे साडासत्तर क्षुल्लक भव जेटलो काळ ते श्वासोच्छ्वासरुप प्राण छे, तेवा सात प्राणनो एक स्तोक कहेवाय छे. तेवा सात स्तोकनो एक लव कहेवाय छे, अने तेवा सत्तोतेर लवनो एक मुहूर्त्त गणाय छे. ते मुहूर्त्तनुं प्रमाण बे घडीनुं छे; तेवा त्रीश मुहूर्त्तनो अहोरात्र[1] थाय छे. तेवा पंदर अहोरात्रनो एक पक्ष (पखवाडीयुं) थाय छे, बे पखवाडीयानो एक मास थाय छे, बार मासनुं एक वर्ष थाय छे, असंख्याता वर्षोथी एक पल्योपम थाय छे, दश कोडाकोडी पल्योपमनो एक सागरोपम थाय छे, दश कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी थाय छे, तेटलाज प्रमाणे एक अवसर्पिणी थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ काळ शी रीते जाणी शकाय ? २ समय कोने कहे छे ? ३ केटला समयनी आवलिका कहेवाय छे ? ४ निगोदना जीवोनुं आयुष्य केटली आवलिकानुं छे ? ५ श्वासोच्छ्वासरुप एवा केटला प्राणनो एक स्तोक कहेवाय छे ? ६ केटला स्तोकनो लव कहेवाय छे ? ७ मुहूर्त्तनुं प्रमाण केवी रीते छे ? ८ केटला मुहूर्त्तनो अहोरात्र थाय छे ? ९ पक्ष, मास अने वर्ष केवी रीते थाय ? ते कहो.

---

[1] रात ने दिवस.

१० उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळना प्रमाणनो शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सूर्यनी गति, [illegible] परिणाम, अति सूक्ष्म, [illegible] [illegible] मन, [illegible] [illegible] भाग, स्तोक, लव, [illegible] पक्ष, [illegible] दृष्टांत, [illegible].

पाठ ३६ मो.

छ द्रव्य.

जैन शासनमां छ द्रव्य मनाय छे. एक जीव अने अजीवनां पांच द्रव्य मळीने छ द्रव्य थाय छे. [illegible]

[illegible]

करवामां जे अपेक्षा कारण, ते पहेलुं धर्मास्तिकाय द्रव्य कहेवाय छे, अर्थात् धर्मास्तिकायने लइने जीव तथा पुद्गळनो संचार थइ शके छे.

बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे, तेनुं स्वरुप वधी रीते धर्मास्तिकायने मळतुं छे, पण ए द्रव्य जीव तथा पुद्गळने स्थिरता राखवामां सहाय करे छे. जेम कोइ मुसाफर रस्ते चालतां थाकी जाय, त्यारे विश्राम लेवा कोइ झाड विगेरेनी छायामां जइ बेसे छे, अहीं स्थिति तो पोतेज करे छे, परंतु आश्रय विना स्थिति थइ शकती नथी, तेथी तेने वृक्षनी छाया ए अपेक्षा कारण छे. तेवी रीते जीव तथा पुद्गळ गति करतां स्थिति करवाने प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करे छे, तेने वृक्षनी छाया जेवुं स्थिति करवानुं जे अपेक्षा कारण, तेज अधर्मास्तिकाय द्रव्य कहेवाय छे.

त्रीजुं आकाशास्तिकाय द्रव्य छे. तेनुं बीजुं स्वरुप धर्मास्तिकायना जेवुंज छे. आ द्रव्य, जीव अने पुद्गळने रहेवामां अवकाश आपे छे, ते द्रव्य लोकालोक व्यापी छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकाय आ त्रणे एकबीजामां मळी गयेलां छे. ज्यां सुधी आ त्रण द्रव्यो छे, त्यां सुधी लोक छे, अने ज्यां केवळ आकाशास्तिकाय छे, अने बीजुं कांइ नथी, ते अलोक छे.

पाचमुं काळ द्रव्य छे, तेनुं स्वरुप आगळ कहेवामां आव्युं छे.

श्रीसेठिया जैन ग्रंथा
बीकानेर।

सारांश प्रश्नो.

१ जैन शासनमां केटलां द्रव्य गणाय छे ? २ छ द्रव्य कयां ? ते गणावो. ३ पांच अजीव द्रव्यना नाम आपो. ४ धर्मास्तिकाय द्रव्यमां शेनो दाखलो छे ? ते कहो. ५ धर्मास्तिकाय द्रव्यनो शो स्वभाव छे ? ६ धर्मास्तिकायने लइ जीव तथा पुद्गळ शुं करी शके छे ? ७ अधर्मास्तिकायनुं स्वरुप शुं छे ? ८ अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्गळने केवी सहाय करे छे ? ९ अधर्मास्तिकायनो दाखलो आपी समजावो. १० आकाशास्तिकाय द्रव्य जीव तथा पुद्गळने शुं करे छे ? ११ ते द्रव्य केवुं छे ? तेनुं विशेष विवेचन करो. १२ आलोक क्यां सुधी छे, अने अलोकमां कयुं द्रव्य छे ? १३ पुद्गळास्तिकायनुं बीजुं नाम शुं छे ? १४ परमाणुओनां कार्य कया पदार्थो कहेवाय छे ? १५ एक परमाणुमां वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श केटला छे ? ते कहो. १७ परमाणुमां बीजी शी खुबी छे ? ते जणावो. १८ परमाणु अनादि तथा अनंत क्यारे छे, अने आदि तथा अंत सहित क्यारे छे ? ते समजावो. १९ परमाणुओनां कार्य अनादि तथा अनंत क्यारे होय छे, अने आदि तथा

५ रहेवा स्थान आपवाथी, ६ सुवा बेसवाने आ-
ापवाथी, ७ गुणी जनने देखी मनमां संतोष तथा
नवाथी, ८ गुणी जननी वचनवडे प्रशंसा करवाथी,
ायाथी सेवा करवाथी अने ९ गुणीजनने नमस्कार
ा, आ नव प्रकारनां कारणथी प्राणी पुण्य उपा-
रे छे. अहीं पात्रने दान आपवामां बे प्रकार छे.
ात्रदान, अने बीजुं अनुकंपादान. जे पात्रने
ापवामां आवे, ते पात्रदान कहेवाय छे. तेवुं दान
था मोक्ष बंनेनुं कारण थाय छे, अने कोइ पण
ःखी प्राणी होय, तेनें अनुकंपाथी आपे, ते अनु-
ा कहेवाय छे. आ अनुकंपादान अवश्य एकला
ुं हेतु थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

पुण्य तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ पुण्य ए-
? ३ पुण्य उपार्जन करवानां केटलां कारण छे ?
ना केटला प्रकार छे ? ५ पात्रदान अने
ान बंनेमां शो तफावत छे ?

के नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

ा प्रकृति, उपार्जन, गुणीजन, प्रशंसा, पात्र,

पाठ ३९ मो.

पुण्य भोगववाना बेंतालीश[1] प्रकार—भाग १ लो.

उपरना पाठमां कहेली नव रीतीथी माणस पुण्य उपार्जन करे छे, पण ते पुण्यने केवी रीते भोगववां ? ते प्रकार जाणवा जोइए. ते पुण्य भोगववाना बेंतालीश प्रकार छे. जे पुण्यना उदयथी जीव शाता भोगवे, ते शातावेदनीय नामे पहेलो प्रकार छे. जेना उदयथी जीव क्षत्रि आदि उंचा कुळमां उत्पन्न थाय छे, ते उच्च गोत्र नामे बीजो प्रकार छे. जेना उदयथी जीव मनुष्य गतिमां उत्पन्न थाय, ते मनुष्य गति नामे त्रीजो प्रकार छे, जेम बळद वांको चालतो होय, तेने नाथ घालीने सिद्धो चलाववामां आवे, तेम जीव वक्रगतिए बीजी गतिमां जतो होय, तेने सीद्धो उपजवाने स्थाने जेथी पहोंचाडवामां आवे, ते आनुपूर्वी कहेवाय छे. मनुष्यनी गति अने मनुष्यनी आनुपूर्वीने मनुष्यद्विक कहे छे. ए मनुष्यानुपूर्वी नामे चोथो प्रकार छे. जेना उदयथी देवतानी गति प्राप्त थाय, ते देवगति नामे पांचमो प्रकार छे. ते पछी देवानुपूर्वी नामे छठ्ठो प्रकार छे. आ देवगति अने देवानुपूर्वी ते बंनेने सुरद्विक कहे छे. जेना उदयथी पंचेंद्रियपणुं प्राप्त थाय,

---

१ ए बेंतालीश प्रकार नाम कर्मनी प्रकृतिना भेद छे.

ते पंचेंद्रिय जाति नामे सातमो प्रकार छे. जेना उ[illegible] यथी औदारिक शरीरने योग्य एवां पुद्गलोनुं ग्र[illegible] हणने तथा तेने शरीरपणे परिणमावीने जीव पो[illegible] प्रदेशनी साथे मेळवे. ते औदारिक नामकर्म [illegible] आठमो प्रकार छे. जेना उदयथी वैक्रिय शरीरने यो[illegible] ग्य पुद्गलोनुं ग्रहण करी तथा तेने शरीरपणे परिण[illegible] मावीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेळवे, ते वैक्रिय शरीर नामे नवमो प्रकार छे. आ वैक्रिय शरीर औपपातिक अने लब्धि प्रत्ययिक एवा बे भेदे [illegible] औपपातिक वैक्रिय शरीर देवता तथा नारकीने [illegible] छे, अने लब्धि प्रत्ययिक वैक्रिय शरीर तिर्य[illegible] मनुष्यने [illegible] होय छे. तथा [illegible] [illegible]

तेवीज रीते जेना उदयथी वैक्रिय अंगोपांग प्राप्त थाय, ते वैक्रिय अंगोपांग नामे चौदमो प्रकार छे. जेना उदयथी आहारक अंगोपांग प्राप्त थाय, ते आहारक अंगोपांग नामे पंदरमो प्रकार छे. बाकीना तैजस अने कार्मण शरीरने अंगोपांग नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ पुण्य भोगववाना केटला प्रकार छे ? २ शाता वेदनीय, उच्च गोत्र-ए बे प्रकार समजावो. ३ आनुपूर्वी एटले शुं ? ते दाखलाथी समजावो. ४ मनुष्यद्विक अने सुरद्विक कोनुं नाम ? ते कहो. ५ पंचेंद्रिय जातिनो प्रकार समजावो. ६ औदारिक विगेरे पांच शरीरना प्रकार समजावो. ७ वैक्रिय शरीरना केटला भेद थाय ? ८ औपपातिक वैक्रिय शरीर कोने होय छे ? ९ लब्धि प्रत्ययिक वैक्रिय शरीर कोने होय छे ? १० आहारक शरीरवाळो प्राणी शुं जोइ शके ? ११ तेजस् शरीरथी शुं थइ शके ? १२ कार्मण शरीरथी शुं थइ शके ? १३ अंग केटलां होय ? ते गणावो. १४ उपांग कयां ते कहो. १५ औदारिक अंगोपांग, वैक्रिय अंगोपांग अने आहारक अंगोपांग-ए त्रणे प्रकार समजावो. १६ कया शरीरने अंगोपांग नथी, ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शाता, वक्र गति, आनुपूर्वी, मनुष्यादिक, शुद्ध परिणामवाळी, प्रदेश, लब्धिवंत, चौद पूर्वधारी, तेजोलेश्या कर्मनां परमाणु, अंग, उपांग, लब्धि, महाविदेह, अने घातिक.

पाठ ४८ मो.

पुण्य भोगववाना बेंताळीश प्रकार—भाग २ जो.

वज्र एटले खीली, ऋषभ एटले पाटो अने नाराच एटले बे बाजु मर्कट बंध, अर्थात् हाडनी पाटो अने बे तरफ खीली; आवुं नाम वज्रऋषभनाराच नामे संघयण कहेवाय छे. [illegible]

प्राणी तेवा संस्थानने प्राप्त करे, ते समचतुरस्त्र संस्थान नामे सत्तरमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरनो रंग सारो एटले धोळो, रातो के पीळो थाय, ते शुभ वर्ण नामे अढारमो प्रकार छे. जेना उदयथी सुगंध थाय, ते शुभ गंध नामे ओगणीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां सारो रस प्राप्त थाय. ते शुभ रस नामे वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां सारो स्पर्श प्राप्त थाय, ते शुभ स्पर्श नामे एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरनुं वजन लोढानी जेम भारे नहीं, तेमज आकडानां रुनी जेम हलकुं पण नहीं, एटले मध्यम रीतनुं वजन प्राप्त थाय, ते अगुरु लघु नाम कर्म नामे बावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणी गमे तेवा बळवान्ने पण जीतवाने समर्थ थाय, ते पराघात नाम कर्म नामे त्रेवीसमो प्रकार छे. जेना उदयथी सुखेथी श्वासोच्छ्वास लइ शकाय ते श्वासोच्छ्वास नाम कर्म नामे चोवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी चंद्रनां बिंबनी जेम शीतळता उत्पन्न करनार तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय, ते उद्योत नाम कर्म नामे छवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वृषभ तथा हंसनी जेम सारी जातनी चालवानी शक्ति प्राप्त थाय, ते शुभखग गति नामे सत्यावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणी सुतारनी जेम पोताना अंगना सर्व अवयव योग्य स्थळे गोठववानी शक्ति धरावे, ते निर्माण नाम कर्म नामे अठ्यावीशमो प्रकार छे.

पाठ ४१ मो.

पुण्य भोगववाना बेंताळीश प्रकार—भाग १ लो.

जेना उदयथी जीव त्रस विगेरे दश प्रकृतिने प्राप्त करे, ते त्रसदशक नाम कर्म कहेवाय छे, तेमां त्रस विगेरे दश प्रकार आवे छे. जेना उदयथी प्राणीने बेइंद्रिय विगेरे शरीरनी प्राप्ति थाये, ते त्रस नाम कर्म नामे ओगणत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जीवने बादर शरीरनी प्राप्ति थाय, ते बादर नाम कर्म नामे त्रीशमो प्रकार छे. जे शरीर देखावामां आवे, ते बादर कहेवाय छे. जेना उदयथी जीव पोतपोतानी पर्याप्ति पूरी करे, ते पर्याप्ति नाम कर्म नामे एकत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जुदांजुदां शरीर प्राप्त थाय, पण अनंता जीवनी वच्चे एक शरीर पामे नहि, ते प्रत्येक नाम कर्म नामे बत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जीव दांत विगेरे अवयवोनी द्रढता मेळवे, ते स्थिर नाम कर्म नामे तेत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जीवने शरीरनां सर्वे अवयव सारा होय, अथवा नाभिनी उपरनुं शरीर सारुं होय, ते शुभ नाम कर्म नामे चोत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी माणस सर्वने प्रिय थाय, ते सौभाग्य नाम कर्म नामे पांत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वाणीमां कोयलना जेवी मधुरता आवे, ते सुस्वर नाम कर्म नामे छत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी माणसनुं वचन लो-

कर्मो माननीय थाय, ते आदेय नाम कर्म नामे सा-
डत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी लोकमां यश-कीर्ति
थाय, ते यशोनाम कर्म नामे आडत्रीशमो प्रकार छे.
जेना उदयथी जीवने देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते
सुरायुष्य कर्म नामे ओगणचाळीशमो प्रकार छे. जेना
उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते नरायुष्य
कर्म नामे चाळीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी तिर्यंच
आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते तिर्यंचायुष्य कर्म नामे एक
ताळीशमो प्रकार छे, अने जेना उदयथी प्राणीने तीर्
थंकरना पदवीनी प्राप्ति थाय, ते तीर्थंकर नाम कर्म
नामे बेताळीशमो प्रकार छे.

सारांश प्रश्नो.

१ [illegible] कर्म [illegible] ? २ [illegible] ? [illegible]. ३ [illegible] ४ [illegible] नाम कर्म [illegible] नाम कर्म [illegible] ५ [illegible] नाम कर्म, [illegible] नाम कर्म अने [illegible]. ६ जेना उदयथी [illegible]

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दश प्रकृति, बादर, पर्याप्ति, स्थिरता, नाभि, प्रिय, मधुरता, माननीय, तिर्यंच, त्रिभुवन, पूज्य.

पाठ ४२ मो.

पाप तत्त्व.

जे अशुभ प्रकृतिरुप कर्म जीवोने दुःख आपे, ते पाप कहेवाय छे, अथवा जे आत्माना आनंद रसने पीवे एटले भस्म करे, ते पाप कहेवाय छे. ए पाप पुण्यथी विपरीत छे. ए पापथी नरक विगेरे नठारां फळ मळे छे, तेथी ते अशुभ कहेवाय छे. पुण्यनी जेम पापनो संबंध पण आत्मानी साथे रहेलो छे. सुख तथा दुःख जुदांजुदां अनुभववामां आवे छे, तेथी तेमनां कारणरुप पुण्य तथा पाप पण स्वतंत्रपणे अंगीकार करवा योग्य छे. एकलुं पुण्य के एकलुं पाप के एकलुं पुण्य पाप मिश्र मानवुं योग्य नथी.

आ पाप अढार प्रकारे बंधाय छे, अने ब्याशी प्रकारे भोगवाय छे. १ प्राणातिपात—कोइनी हिंसा करवी, २ मृषावाद-खोटुं बोलवुं, ३ अदत्तादान-चोरी करवी, ४ मैथुन-ब्रह्मचर्य न राखवुं, ५ परिग्रह राखवो,



पाठ ४२ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग १ लो.

पापने भोगववाना ब्याशी[1] प्रकार छे. दरेक प्राणीने उपर कहेला अढार प्रकारे बांधेलुं पाप भोगववुं पडे छे. पहेलां ज्ञानावरणीयना पांच प्रकार कहे छे. पांच प्रकारना ज्ञानने जे आच्छादन करे, ते ज्ञानावरणीय पाप कर्म कहेवाय छे. जेना उदयथी पांच इंद्रिय तथा मननी मारफत नियत (निश्चयवाळी) वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, एवा मतिज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मतिज्ञानावरणीय नामे पहेलो प्रकार छे. जेना उदयथी शास्त्रने अनुसारे ज्ञान थाय छे, एवा श्रुतज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते श्रुतज्ञानावरणीय नामे बीजो प्रकार छे. जेना उदयथी इंद्रिय विगेरेनी अपेक्षा विना आत्मद्रव्यने—साक्षात्‌रुपी द्रव्यने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा अवधि ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते अवधि ज्ञानावरणीय नामे त्रीजो प्रकार छे. जेना उदयथी संज्ञि पंचेंद्रियना मनोगत भावने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा मनःपर्यव ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मनःपर्यव ज्ञानावरणीय नामे चोथो प्रकार छे. जेना उदयथी उपर कहेला चार ज्ञान रहित एकलुं निरावरण

---

१ आ ब्याशी प्रकार कर्मनी प्रकृतिना भेद जाणवा.

ज्ञान थाय छे, एवा केवळ ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते केवळ ज्ञानावरणीय नामे पांचमो प्रकार छे.

जे आडुं आवे, ते अंतराय कर्म कहेवाय छे, तेना पण पांच प्रकार छे. पोताना घरमां देवा योग्य वस्तु छतां, तथा दाननुं फळ जाणतां छतां जेना उदयथी कोइने आपी शकाय नहीं, ते दानांतराय नामे छट्ठो प्रकार छे. सारो दातार होय, अने तेना घरमां आपवानुं होय, अने मागनार डाह्यो होय, ते छतां पण जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते लाभांतराय नामे सातमो प्रकार छे.

पोते जुवान होय, सारुं रुप होय, अने भोग करवा योग्य वस्तुनी प्राप्ति थइ होय, ते छतां पण जेना उदयथी ते भोगवी शकाय नहीं, ते भोगांतराय, अने उपभोगांतराय नामे आठमो अने नवमो प्रकार छे. पोते जुवान, निरोगी, अने बळवान छतां पण जेना उदयथी पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहीं, ते वीर्यांतराय नामे दशमो प्रकार छे.

दर्शनावरणीय कर्मना नव प्रकार छे. तेमां चार प्रकार दर्शनना, अने पांच प्रकार निद्राना छे. ते सामान्य उपयोग, ते दर्शन कहेवाय छे. तेमां आंखे करी वस्तुनुं सामान्यपणे ग्रहण थाय छे, एवा चक्षुदर्शननुं जेथी आच्छादन थाय, ते चक्षुदर्शनावरणीय नामे प्रथ.दा-

रमो प्रकार छे. चक्षु विना बीजी चार इंद्रियो तथा मने करी पोतपोताना विषयनुं सामान्यपणे जेनाथी ग्रहण थाय छे, तेवा अचक्षुर्दर्शननुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते अचक्षुर्दर्शनावरणीय नामे बारमो प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते रुपी द्रव्यनुं मर्यादाथी ग्रहण थाय छे, एवा अवधि दर्शननुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते अवधि दर्शनावरणीय नामे तेरमो प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते बधी वस्तुओ देखी शकाय छे, एवा केवळ दर्शननुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते केवळ दर्शनावरणीय नामे चौदमो प्रकार छे. हवे पांच प्रकार निद्राना कहे छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी सुखे जाग्रत अवस्थानी प्राप्ति थाय, ते निद्रारुप नामे पंदरमो प्रकार छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी दुखःरुप जाग्रत अवस्थानी प्राप्ति थाय, ते निद्रा निद्रारुप नामे सोळमो प्रकार छे. जेना उदयथी बेसतां तथा उठतां निद्रा आव्या करे, ते प्रचलारुप नामे सत्तरमो प्रकार छे. जेना उदयथी हरतां फरतां पण निद्रा आवे, ते प्रचला प्रचलारुप नामे अढारमो प्रकार छे. जेना उदयथी दिवसे चिंतवेलुं काम रात्रे निद्रा वखते जाग्रतनी पेठे थाय, ते थीणद्धीरुप नामे ओगणी-शमो प्रकार छे. आ थीणद्धीरुप निद्राने संस्कृतमां स्त्या-नर्द्धि कहे छे. ए निद्राना समये प्राणी वासुदेवना

अर्थी वळवाळो थाय छे, अने ते जीव नरकगामी होय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ पाप भोगववाना केटला प्रकार छे ? २ ते केवे प्रकारे बांधेलुं पाप भोगववुं पडे छे ? ३ ज्ञानावरणीय कर्म एटले शुं ? ४ मतिज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना अर्थ समजावो. ५ शास्त्रने अनुसारे जे ज्ञान थाय छे, तेनुं शुं नाम ? ६ एकलुं निरावरण ज्ञान शेमां थाय छे ? ते कहो. ७ अंतरायनो अर्थ शुं ? ८ अंतराय केटला प्रकारना छे ? ९ दानांतराय, उपभोगांतराय, अने वीर्यांतराय विषे समजावो. १० जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते कयो अंतराय ? ११ [illegible], रूप, अने भोग्य वस्तु पासे होय, ते छतां भोगवी शकाय नहीं, ते कयो अंतराय कहेवाय ? १२ दर्शनावरणीय कर्मना केटला प्रकार छे ? १३ निद्राना प्रकार केटला छे ? तेनां नाम आपो. १४ चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय, अने अवधिदर्शनावरणीय विषे समजावो. १५ जेमां सामान्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ते शुं दर्शन कहेवाय छे ? १६ दर्शन एटले शुं ? तेना अर्थ समजावो. १७ निद्रा, [illegible] [illegible] विषे समजावो. १८ [illegible]

चिंतवेलुं काम रात्रे निद्रा वखते जाग्रतनी पेठे थाय, तेवी निद्रानुं शुं नाम छे ? १९ थीणद्धी निद्राने संस्कृतमां शुं कहे छे ? २० थीणद्धी निद्रावाळा माणसमां केटलुं बळ आवे छे ? २१ केवी निद्रावाळो नरकगामी होय छे ?



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आच्छादन, नियत, अनुसारे, अपेक्षा, साक्षात्, रुपीद्रव्य, आत्मद्रव्य, निरावरण, अंतराय, फोरवी, सामान्य, उपयोग, चक्षु, मर्यादार्थी, निद्रावस्था, जाग्रत अवस्था, वासुदेव, नरकगामी.



पाठ ४४ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग २ जो.

जेना उदयथी प्राणी स्वरुपवान् तथा धनवान् छतां नीच कुळने विषे उत्पन्न थाय, ते नीच गोत्ररुप नामे वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणीने दुःखनोज अनुभव थाय, ते अशाता वेदनीय नामे एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वीतरागनां वचनथी विपरीत सद्दहणा थाय, ते मिथ्यात्व मोहनीय नामे बावीशमो प्रकार छे. सद्दहणाने संस्कृतमां श्रद्धा कहे छे.

हवे स्थावर दशकना दश प्रकार कहेवामां आवे छे. जे ताढाढ, ताप विगेरेथी पीडाय, तोपण त्यांथी खसी शके नहीं, ते स्थावर कहेवाय छे. जेना उदयथी एवुं स्थावरपणुं प्राप्त थाय, ते स्थावर नाम नामे त्रेवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला सूक्ष्मपणानी प्राप्ति थाय, ते सूक्ष्म नाम नामे चोवीशमो प्रकार छे. आ सूक्ष्म ते पृथ्वी विगेरे पांच सूक्ष्म समजवा. जेना उदयथी पोताने योग्य एवी पर्याप्ति पूरी कर्या विना मरण पामे, ते अपर्याप्त नाम कर्म नामे पचीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी अनंता जीव वचे एक औदारिक शरीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोद अवस्था मळे, ते साधारण नाम कर्म नामे छव्वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां दांत विगेरे अवयवो स्थिर रहे नहीं, ते अस्थिर नाम कर्म नामे सत्यावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय. एटले पग विगेरेना स्पर्शथी बीजाने रोष थाय, ते अशुभ नाम कर्म नामे अठावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी पोताना वधाने अळखामणो लागे, ते दौर्भाग्य नाम कर्म नामे ओगणत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी सांभळनारने अप्रिय लागे, एवो स्वर थाय ते दुःस्वर नाम कर्म नामे त्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी पोताना हित जेवुं बोल्युं कोइ मान्य करे नहीं ते अनादेय नाम कर्म एवा नामे एकत्रीशमो प्रकार

छे. जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, कोइ यश बोले नहीं, ते अयश नाम कर्म नामे बत्रीशमो प्रकार छे. आ स्थावर दशक कहेवाय छे. पुण्य तत्वना त्रस दशकथी आ तद्दन विपरीत छे.

सारांश प्रश्नो.

१ नीच गोत्र अने मिथ्यात्व मोहनीय एटले शुं ? ते समजावो. २ जेना उदयथी प्राणीने दुःखनोज अनुभव थाय, ते शुं कहेवाय ? ३ सद्दहणा एटले शुं ? अने तेने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ४ स्थावर दशक कया, ते एकंदर नाम साथे गणावो. ५ स्थावर एटले शुं ? ६ स्थावर नाम, अपर्याप्त नाम, अस्थिर नाम, दौर्भाग्य नाम, अने अनादेय नाम, ए विषे समजूती आपो. ७ जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सूक्ष्मपणानी प्राप्ति थाय, ते कयो प्रकार ? ८ जेना उदयथी निगोद अवस्था प्राप्त थाय, ते कयो प्रकार ? ९ जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय, ते कयो प्रकार ? १० जेना उदयथी कंठनो स्वर अप्रिय लागे, ते कयो प्रकार ? ११ जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, ते कयो प्रकार ? १२ पुण्य तत्वना त्रसदशक अने आ स्थावर दशकनी वच्चे शो तफावत छे ?

लींटी जेवो छे, मान पाषाणना थांभला जेवो छे, माया वांसना मूळ जेवी छे, अने लोभ कीर्मजना रंग जेवो छे; आ चार अनंतानुबंधीना आ प्रमाणे चार प्रकार थाय छे. अनंतानुबंधी क्रोध ए छत्रीशमो प्रकार छे, अनंतानुबंधी मान साडत्रीशमो प्रकार छे, अनंतानुबंधी माया आंडत्रीशमो प्रकार छे, अने अनंतानुबंधी लोभ ओगणचाळीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी जीव थोडुं पण प्रत्याख्यान पामे नहीं, ए अप्रत्याख्यानीय कषाय कहेवाय छे. अप्रत्याख्यानीय एवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ एक वर्ष सुधी कायम रहे छे, तेओ देशविरतिपणाने आववा देता नथी, अने छेवटे तिर्यंचनी गतिने आपे छे. ते क्रोध सुकाएला तळावनी रेखा जेवो छे, मान हाडकांना थांभला जेवो छे, माया मेंढाना शींगडा जेवी छे, अने लोभ नगरनी खाळना कादव जेवो छे. आ चार अप्रत्याख्यानीय कषायना चार प्रकार थाय छे. अप्रत्याख्यानीय क्रोध चाळीशमो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय मान एकतालीशमो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय माया बेंतालीशमो प्रकार छे, अने अप्रत्याख्यानीय लोभ तेंतालीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी सर्व विरतिरूप प्रत्याख्याननुं आच्छादन थइ जाय, ते प्रत्याख्यानीय कषाय कहेवाय छे. प्रत्याख्यानीय एवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार

मास सुधी टके छे, सर्व विरतिरुप चारित्रनो तेओ नाश करे छे, अने छेवटे मनुष्य गति अपावे छे. तेओमां क्रोध रेतीनी लींटी जेवो छे, मान काष्टना थांभला जेवो छे, माया बळदना मूत्रनी रेखा जेवी छे, अने लोभ गाडानी मळीना रंग जेवो छे. आ चार प्रत्याख्यानीय कषायना चार भेद पडे छे, तेमां प्रत्याख्यानीय क्रोध ए घुमालीशमो प्रकार छे. प्रत्याख्यानीय मान ए पीस्तालीशमो प्रकार छे, प्रत्याख्यानीय माया ए छेंतालीशमो प्रकार छे, अने प्रत्याख्यानीय लोभ ए सुडतालीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी चारित्र धारण करनारने पण थोडुंक तपावे, ते संज्वलन कषाय कहेवाय छे. संज्वलन एना क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार भेद छे. तेओ एक पखवाडीआ सुधी रहे छे, यथाख्यात चारित्रने आवरण करे छे, अने देवतानी गतिने आपे छे. ए क्रोध पाणीनी रेखा जेवो छे, मान नेतरना थांभला जेवो छे, माया वांसनी छाल जेवी छे, अने लोभ हळदरना रंग जेवो छे. तेमांथी संज्वलन क्रोध ए अडतालीशमो प्रकार छे, संज्वलन मान ए ओगणपचाशमो प्रकार छे, संज्वलन माया ए पचाशमो प्रकार छे, अने संज्वलन लोभ ए एकावनमो प्रकार छे. आ प्रमाणे मोहनीय [illegible] प्रकार थाय छे.

* [illegible] कषायना [illegible]

ते नोकपाय कहेवाय छे. तेना नव प्रकार थाय छे. जेना उदयथी हास्य, रति, अरति, शोक, भय, अने दुगंछा ए छ वानां उत्पन्न थाय, ते हास्य षट्क कहेवाय छे. हास्य कोइ निमित्ते अने निमित्त विना एम बे प्रकारे छे. आ हास्य विगेरे छनां नाम उपरथी छ प्रकार थाय छे, एटले बावन, त्रेपन, चोपन, पंचावन, छप्पन, अने सत्तावन एटला प्रकार थाय छे.

जेना उदयथी स्त्री भोगववानी इच्छा थाय, ते पुरुष वेद कहेवाय छे. आ वेद घासना अग्नि जेवो छे, ते पुरुषवेद नामे अट्ठावनमो प्रकार छे. जेना उदयथी पुरुष भोगववानी इच्छा थाय, ते स्त्रीवेद कहेवाय छे. आ वेदने बकरीनी लींडीओना अग्निनी उपमा अपाय छे, ते ओगणसाठमो प्रकार छे. जेना उदयथी स्त्री अने पुरुष बंने भोगववानी इच्छा थाय, ते नपुंसकवेद कहेवाय छे. ते शहेर सळगी उठयुं होय, ते अग्निना जेवो छे, ते साठमो प्रकार छे. आ प्रमाणे नोकपायना नव भेद कहेवामां आव्या.

सारांश प्रश्नो.

१ 'नरकत्रिक' एटले शुं ? २ बधा मळीने कपाय केटला छे ? ३ नोकपाय केटला होय ? ४ नोकपाय एटले शुं ? ५ नोकपाय शिवायना कपाय केटला छे ? ६ मुख्य सोळ कपाय कया ? ते गणावो. ७ अ-

नंतानुबंधी कषायथी शुं थाय ? ८ अनंतानुबंधी कषाय क्यां सुधी रहे ? ९ तेओथी सम्यक्त्वने शुं थाय ? १० अनंतानुबंधी चारे कषायो कोना जेवा छे ? ते समजावो. ११ अनंतानुबंधी चारे कषायो केटलामा प्रकारो छे ? १२ अप्रत्याख्यानीय कषाय एटले शुं ? १३ अप्रत्याख्यानीय कषाय क्यां सुधी रहे छे ? १४ तेओ होय, तो शी नुकसानी थाय. अने केवी गतिमां लइ जाय ? १५ अप्रत्याख्यानीय कषाय कोना जेवा छे, ते दरेकना जुदा जुदा दाखला आपो. १६ अप्रत्याख्यानीय चारे कषायो कइ संख्याना प्रकारे छे ? १७ प्रत्याख्यानीय कषाय एटले शुं ? १८ प्रत्याख्यानीय कषाय क्यां सुधी रहे छे ? १९ प्रत्याख्यानीय कषाय केवा चारित्रनो नाश करे छे. अने केवी गति अपावे छे ? २० प्रत्याख्यानीय कषाय कोना जेवा छे ? ते दाखला आपी समजावो. २१ ते केटली संख्याना प्रकारे छे ? २२ संज्वलन कषाय एटले शुं ? २३ ते कषाय क्यां सुधी रहे छे ? [illegible] आवरण करे छे, अने केवी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

नरकत्रिक, नोकषाय, अनंतानुबंधी, किर्मीज, देश विरति सर्व विरति, अप्रत्याख्यानीय, प्रत्याख्यानीय, संज्वलन, यथाख्यात चारित्र, सहचारी, हास्य षट्क, निमित्त.

पाठ ४६ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग ४ थो.

जेना उदयथी तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय, ते तिर्यंच गति नामे एकसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी तिर्यंचनी आनुपूर्वी प्राप्त थाय, ते तिर्यंचानुपूर्वी नामे बासठमो प्रकार छे. जेना उदयथी पृथ्वीकाय विगेरे पांच स्थावर जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय, ते एकेंद्रिय जाति नामे त्रेसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी बेइंद्री जीवोनी जातिनुं शरीर प्राप्त थाय, ते बेइंद्रिय जाति नामे चोसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी जुं, माकड, विगेरे तेरेंद्रिय जीवनी जातिनुं शरीर प्राप्त थाय, ते तेरेंद्रिय जाति नामे पांसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी वींछी आदिक जीवोनी जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय, ते चउरेंद्रिय जाति नामे छासठमो प्रकार छे. जेना उदयथी उंट तथा गधेडाना जेवी नठारी गति मळे, ते अशुभ विहायो गति नामे

सारुं अने नाभि उपरनुं अंग नठारुं होय, ते सादि संस्थान नामे ओगणाएशीमो प्रकार छे. ज्यां पेट विगेरे सारां लक्षणवाळां होय, अने हाथ, पग, माथुं अने केड विगेरे प्रमाण वगरनां कुधाटां होय, ते वामन संस्थान नामे एशीमो प्रकार छे. जेमां हाथ, पग, माथुं, केड विगेरे प्रमाणवाळां अने पेट विगेरे प्रमाण रहित होय, ते कुब्ज संस्थान नामे एकाशीमो प्रकार छे. जेमां वधा अवयव अशुभ होय, ते हुंडक संस्थान नामे ब्याशीमो प्रकार छे. आ प्रमाणे पाप तत्वना ब्याशी प्रकार थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ तिर्यंच गति अने तिर्यंचानुपूर्वी एटले शुं ? २ एकेंद्रिय विगेरे केटली जातिओ छे ? ते समजावो. ३ उंट तथा गधेडाना जेवी नठारी गति मळे, ते प्रकारनुं नाम शुं ? ४ शरीर अवयवोमां हरस, रसोळी विगेरे अशुभ अवयवो थाय, ते कयो प्रकार ? ५ अप्रशस्त वर्ण चतुष्क एटले शुं ? ते वधा प्रकार विषे समजूती आपो. ६ अप्रथम संघयण एटले शुं ? ७ जेना बे पासाए मर्कटबंध तथा उपर पाटो होय, ते केवी संघयण ? तेनुं नाम आपो. ८ नाराच अने अर्धनाराच संघयणमां शो तफावत छे ? ९ छेवटुं संघयण केवी रीते होय ? ते कहो. १० ज्यां मांहोमांहे हाडकांने एक खीलीनो बंध होय, ते संघयणनुं

बीजापर आळ नाखी मनमांही मकलाप,
चाडी करी चित्तमहि अति हरखाय छे;
रति अरति धरीने खोटां काम करे घणां,
परतणी निंदा करी पेटमां धराय छे;
माया मृषावाद करी अनीतिने आचरतो,
मिथ्यात्वनुं शल्य धरी धर्मथी धराय छे;
अढार प्रकार ए छे पापकेरा बंधतणा,
एथी अंध बनी जीव पापथी भराय छे. २

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संग्रह, लोलुप, अमाप, पक्षपात, कलह, शल्य, अंध.

पाठ ४८ मो.

आश्रव तत्व.

जेनाथी जीवने विषे कर्म आवे, ते आश्रव कहेवाय छे. जेम तळावमां पाणी आवे, तेम जीवरुप तळावमां जेनाथी कर्मरुप पाणी आवे, ते आश्रव कहेवाय छे. आ आश्रव पुण्य तथा पापना बंधनो हेतु होवाथी बे प्रकारे छे. तेओना अधिक अने न्यूनपणाथी

सारांश प्रश्नो.

१ आश्रव एटले शुं ? २ आश्रवने दाखलो आपी समजावो. ३ आश्रवना मूळ केटला प्रकार छे ? ४ आश्रवनी सिद्धि तेना भेदमां केवी रीते थाय छे ? ५ मूळ भेदनी अपेक्षाए आश्रवनां कारण केटलां छे, अने ते क्यां ? ६ ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थवामां शो हेतु छे? ७ ते हेतुने शुं कहे छे ? ८ आश्रवना बेंतालीश उत्तर भेद केवी रीते थाय ? ते गणावो. ९ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग–ए पांचनां लक्षणो शुं ? ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

व्यापार, स्वसंवेदन, स्वानुभव, प्रत्यक्ष, अनुमान, मूळ भेद, अपेक्षाए, ज्ञानावरणीय, उत्तर भेद.

पाठ ४९ मो.

पांच इंद्रिय अने चार कषाय.

आ शरीरमां पांच इंद्रियो होय छे. इंद्रियोना जुदा जुदा विषयो होय छे. जेनाथी स्पर्शनुं ज्ञान थाय, ते स्पर्शनेंद्रिय कहेवाय छे, जेनाथी खाटो, खारो, मीठो

बळनी निंदा करे, ते त्रीजो बळमद कहेवाय छे. पोताना रुपनो गर्व करे. अने बीजाना रुपनी निंदा करे, ते चोथो रुपमद कहेवाय छे. पोताने महाज्ञानी माने, अने बीजाने तुच्छ बुद्धि माने, ते पांचमो ज्ञानमद कहेवाय छे. " मारा जेवो कोइ तपस्वी नथी, " एम तपनो गर्व राखे, ते छट्ठो तपमद कहेवाय छे. पोताने मोटो भाग्यवान् माने, अने बीजाने निर्भागी माने, तेने सातमो लाभमद कहे छे. पोताना ऐश्वर्यनुं एटले पोतानी ठकुराइनुं अभिमान करे, अने बीजाने तृण समान गणे, ते आठमो ऐश्वर्यमद कहेवाय छे. आवी रीते मानना पण प्रकार थइ शके छे.

जीव बीजाने ठगवा वास्ते जे जे विचारो करे, ते माया नामे त्रीजो कषाय छे. जेनाथी अधिक वस्तु प्राप्त करवानी जीवने लालच थाय, ते लोभ नामे चोथो कषाय छे.

आ प्रमाणे पांच इंद्रियो. अने चार कषाय ए नव भेद आश्रवना थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ इंद्रियो केटली होय ? २ पांचे इंद्रियोनां नाम आपो, अने तेनां लक्षण आपो. ३ कषाय केटला छे ?

४ क्रोधनुं लक्षण शुं ? ५ मानना केटला भेद छे ! ६ मान अने मदमां शो फेर छे ? ७ मद केटला प्रकारनो छे ? ८ आठे मदनां नाम आपो. ९ मान केटला प्रकारनो छे ? १० जीव बीजाने ठगवा वाले जे विचारो करे छे, ते कषायनुं शुं नाम छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विषय, स्पर्श, द्रव्यरूपे, सचेतन, अचेतन, निमित्त, मृदुता, कोमळता, अभाव, महाज्ञानी, तुच्छबुद्धि, वरसी, तृण समान.

पाठ ५० मो.

आठ मदनो त्याग करवा विषे कविता.

भुजंगी छंद.

धरो ना कदी अंतरे मान हेतो,
नहीं दर करी भीरने धप देतो;
नहीं कोडना मार्गी मान पासो,
नहीं कुळनो गर्वी निंदा करासो. १

नहीं वळतणुं मान रे चित्त धारो,
थशो निर्बळा सद्य ए वात धारोः
कदि रुप पामो रुडां कर्मयोगे,
थशो नैं गिरि गर्वना भाग्य भोगे. २

कदि ज्ञानधारी बनो पूर्ण सारा,
न रहेशो मदे ज्ञानना प्रेम प्याराः
बन्या जो कदि भाग्यना लाभवाळा,
तदा छोडजो गर्वना सर्व चाळा. ३

तपस्या करुं सर्वथी हुंज सारी,
करे अन्य ते सर्वदा छे नठारीः
तपस्या तणो गर्व एवो न धारो,
नथी मार्ग ते धर्मनो सर्व सारो. ४

अभागी गणो अन्यने नैं हृदेथी,
बनो दुर्गुणी लाभना ते मदेथीः
यदि चित्त ऐश्वर्यनो गर्व राखो,
तदा कर्मना दुष्फळो सद्य चाखो. ५

गण्या मदतणा आ बधा आठ भेदो,
करी दूर ते कर्मने नित्य छेदो;
करे चित्तथी जे सदा ए विचारो,
थशे नै कदी गर्वने धारनारो. ६

साधुने समाचारी, प्रतिलेखना करतां, मार्गमां विहार करतां, नदी प्रमुख उतरतां, नावमां बेसी नदी ओळंगतां, नदीमां तणाइ जतां एवां साध्वी विगेरेने बहार काढतां, वरसाद वरसतां, थंडील जतां, वरसादमां ग्लान साधुओनी मात्राने परठवतां, गुरुना शरीरने व्याधीने प्रसंगे, तथा थाक लागवाथी पगचंपी करतां जे हिंसा थाय, ते द्रव्यहिंसा कहेवाय छे; तथा श्रावकोने जिन मंदिर बनावतां, जिन पूजा करतां, साधर्मि वात्सल्य, तीर्थ यात्रा, रथ यात्रा, अट्ठाइ महोत्सव, प्रतिष्ठा, अने अंजनशलाका करतां, अने गुरुनी सन्मुख सामैयुं करी जतां, इत्यादि कर्त्तव्य करतां जे हिंसा थाय छे, ते सर्व द्रव्यहिंसा छे; परंतु भावहिंसा नथी. कारण के आ हिंसा प्रसंगे साधु तथा श्रावकनां परिणाम घणांज सारां होय छे, माठां अध्यवसाय नथी, अने उपयोगथी प्रवर्त्तन छे, तेथी ते द्रव्यहिंसा छे. आवी हिंसामां पाप अल्प अने निर्जरा घणी होय छे.

बीजा भांगामां द्रव्यथी हिंसा न होय, पण भावथी होय; जेमके जे पुरुष उपरथी शांत देखातो होय, पण तेना अंतःकरणना अध्यवसाय घणा मलीन अने हिंसामय होय छे, ते पोतानां हृदयमां अनेक प्रकारे जीवहिंसा करवानां कामनो संकल्प विकल्प कर्या करे छे. जो के ते हिंसा करतो नथी, तेथी द्रव्यथी हिंसा नथी, परंतु तेना अध्यवसाय हिंसामय होवाथी ते भावथी हिंसा छे,

आवी भावहिंसा करनारने अनंतकाळ सुधी आ संसारमां भ्रमण करवुं पडे छे.

त्रीजा भांगामां द्रव्यथी अने भावथी बंनेथी हिंसा रहेली छे. इंद्रियोना विषयोमां, तेमज कषायमां अति लुब्ध थइ जीवहिंसा करे, कसाइ बने, शिकार करवा जाय, विश्वासघात विगेरे जीव जाय तेवां काम करे, अने तेनाथी लाभ थता जोइ मनमां आनंद माने, ते द्रव्य अने भावथी—बंनेथी हिंसा छे, आवी हिंसाथी संसारमां भ्रमण अने दुर्गति प्राप्त थाय छे.

चोथा भांगामां द्रव्यथी अने भावथी—बंनेथी हिंसा होती नथी. आ भांगो शून्य छे, आवा भांगावाळो कोइ पण जीव संसारमां होतो नथी.

सारांश प्रश्नो.

१ जीव अव्रत केमां आवे छे ? २ अव्रत एटले शुं ? ३ जीवहिंसा एटले शुं ? ४ मैथुन एटले शुं ? ते समजावो. ५ केटला प्रकारनी जीवहिंसाना केटला भांगा छे ? ६ पहेला भांगामां साधु अने श्रावकने द्रव्यहिंसा कई रीते थाय ? ते समजावो, अने दाखला आपो. ७ द्रव्यहिंसामां पाप केटलुं लागे ? अने हिंसा थाय के नहीं ? ८ भावहिंसानो दाखलो आपो. ९ भावहिंसा करनारने केवुं फळ थाय ? १०. द्रव्यथी अने भावथी हिंसा क

कहेवाय ? अने तेवी हिंसाथी शुं फळ थाय ? ११ चोथो भांगो केवो छे ? चोथा भांगावाळो कोइ जीव होय के नहीं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वध, मैथुन, समाचारी, प्रतिलेखना, विहार, नाव, थंडील, ग्लान, मात्रा, परठवतां, साधर्मिवात्सल्य, तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अट्ठाइमहोत्सव, प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, कर्त्तव्य, अध्यवसाय, उपयोग, प्रवर्त्तन, अल्प, निर्जरा, शांत, मलीन, हिंसामय, संकल्प विकल्प, अति लुब्ध, शून्य.

पाठ ५२ मो.

पांच अव्रत भाग २ जो.

बीजा अव्रत मृषावादना पण उपर प्रमाणे चार भांगा थइ शके छे. कोइ साधु रस्तामां चाल्या जता होय, तेमनी आगळ जंगलनी गायो तथा हरण विगेरेनुं टोळुं पसार थइ चाल्युं गयुं होय, ते वखते ते टोळानी शोध करतो कोइ शीकारी शस्त्र लइ चाल्यो आवे, ते शीकारी पेला जीवोनो शीकार करवा वास्ते साधुने पुछे के, तमे अहींथी कोइ जानवरोने जतां जोयां छे ? साधु तेनो

जाय. तो व्यवहारथी ते पुरुषे राजानी आज्ञा भंगरुप चोरी अथवा स्त्रीनी चोरी करी छे, परंतु वास्तविक रीते चोरी नथी.

कोइ पुरुष पोताना घरमां द्रव्य राखी घरनां द्वार बंध करी परदेश गयेल छे, पछवाडे गाममां चोरनो उपद्रव थयो. ते परदेश गयेला माणसनुं द्रव्य चोराइ जशे, एम तेना कोइ हितेच्छु पुरुषने लागवाथी रात्रिने समये ते परदेश गयेला पुरुषना घरनां द्वार खोली, तेनुं सघळुं द्रव्य ले, अने ज्यारे ते पाछो परदेशथी घेर आवे, त्यारे तेने पाछुं आपवानी बुद्धिथी ते पोताना घरमां राखे आ दृष्टांतमां बीजानुं द्रव्य तेनी रजा शिवाय तेना कबजामांथी लइ लेवाथी ते द्रव्यथी चोरी थाय छे, परंतु तेना हृदयमां वद्घातनो अभाव होवाथी भावथी चोरी थती नथी. आ त्रीजा अव्रतनो पहेलो भांगो छे.

कोइ पुरुष चोरी करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमां थया करे छे, ते द्रव्यथी चोरी नहीं, पण भावथी चोरी छे. जे श्री वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भंग करनारा छे, तेओने भावचोर कहेला छे. कोइ पुरुष चोरी करे, अने चोरी करवानो अध्यवसाय पण राखे, ते द्रव्यथी अने भावथी चोरी छे. चोथो भांगो पूर्वनी जेम शून्य छे.



णने माटे पकडे, तेवा प्रसंगोमां पकडवुं ते स्पर्शवडे द्रव्यथी मैथुन छे, परंतु भावथी नथी; ते पहेलो भांगो छे. बीजा भांगामां कोइ पुरुष स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना मनमां स्त्री सेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करे छे, ते द्रव्यथी मैथुन नहीं, परंतु भावथी मैथुन छे. त्रीजा भांगामां स्त्रीनी साथे जे इच्छापूर्वक मैथुन करवुं, ते द्रव्यथी अने भावथी मैथुन छे. चोथो भांगो पूर्वनी जेम शून्य छे.

पांचमा अव्रत परिग्रहना पण चार भांगा छे. कायोत्सर्गे रहेला कोइ मुनिना गळामां कोइ माणस हार विगेरे आभूषणो पहेरावी जाय, ते जोइने बीजा अजाण्या माणसो तेमने परिग्रहवाळा धारे, पण मुनिने ते पदार्थ उपर परिग्रहनी बुद्धि नथी, तेवा प्रसंगमां द्रव्यथी परिग्रही कहेवाय, ते भावथी परिग्रही नथी, ते पहेलो भांगो छे.

कोइ पुरुष पासे एक कोडी पण नथी, परंतु तेने द्रव्य मेळववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावथी परिग्रही छे, द्रव्यथी नहीं. त्रीजा भांगामां धन पण पासे होय, तेना उपर मूर्छा होय, अने धन मेळववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्यथी अने भावथी परिग्रही छे. चोथो भांगो शून्य छे.

सारांश प्रश्नो.

१ चोथा व्रतना केटला भांगा छे ? २ पहेला भांगानो दाखलो समजावो. ३ बीजा अने त्रीजा भांगाने दाखला साथे समजावो. ४ पांचमा व्रतना केटला भांगा छे ? ५ तेना पहेला तथा बीजा भांगाने दाखला साथे समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

ब्रह्मचर्य, इच्छापूर्वक, कायोत्सर्ग, आभूषण.

पाठ ५४ मो.

त्रण योग अने पच्चक्खाण क्रिया—भाग १ लो.

[illegible] योगमां बीजा [illegible] छे. शुभ [illegible] अंदर मनने जोडवुं, ते पहेलो मनोयोग कहेवाय छे. शुभ [illegible] अंदर वचनने जोडवुं, ते बीजो वचनयोग कहेवाय छे. अने शुभ [illegible] अंदर कायाने जोडवी, ते त्रीजो काययोग कहेवाय छे.

[illegible]
[illegible]
[illegible]

कायिकी क्रिया बे प्रकारनी छे. अनुपरता कायिकी क्रिया अने अनुपयुक्त कायिकी क्रिया. अति दुष्ट एवा मिथ्या-दृष्टि जीव मन वचननी अपेक्षा विना बीजा जीवने पीडा थाय, तेवो कायानो उद्यम करे, ते पहेलो प्रकार छे, अने जे प्रमादी संयमी उपयोग विना अनेक कर्त्तव्यरुपे काया-नो व्यापार करे, ते बीजो प्रकार छे.

कसाइ विगेरे शस्त्रथी बीजा जीवोनो घात करी, पोताना आत्माने नरक गतिमां जवानो अधिकारी करे, ते आधिकरणिकी नामे बीजी क्रिया छे, अथवा अधि-करण एटले घरनां उपकरणोथी जे जीवनो नाश करे, ते पण आधिकरणिकी क्रिया कहेवाय छे. आ आधि-करणिकी क्रियाना बे प्रकार छे. एक संयोजना, अने बीजी निवर्त्तना. झेर, फांसी, धनुष्य, यंत्र, तलवार विगेरे जीवहिंसा करवानां शस्त्रोने जीवोने मारवा वास्ते संयोजन करे, एटले जोडीने एकठा करे, जेम धनुष्यनी साथे तीर जोडे, ए विगेरे बधा संयोजना आधिकर-णिकी क्रियामां आवे छे. तलवार, तोमर, शक्ति, तोप, अने बंधुक, विगेरेने नवां सरस बनाववां, ए निवर्त्तना आधिकरणिकी क्रियामां आवे छे. जीव एटले प्राणी, अने अजीव एटले खुंटो, कांटो, पथ्थर, विगेरे-ते बंनेनी उपर द्वेष करे, ते प्राद्वेषिकी नामे त्रीजी क्रिया छे. पोताना हाथेथी तेमज बीजाने हाथे जीवोने मार मारी परिताप उपजाववो, ते परितापनिकी नामे चोथी क्रिया

छे. ते क्रियाना बे भेद छे. स्त्री, पुत्र विगेरेना वियोगथी दुःखी थइ जे पोताने हाथे छाती तेमज मस्तक कूटवुं, ते स्वपरितापना नामे पहेलो भेद छे, अने पुत्र तथा शिष्यने मार मारवो, ते परपरितापना नामे बीजो भेद छे. जे पोताना तथा बीजाना जीवने हणवो हणाववो, ते प्राणातिपातिकी नामे पांचमी क्रिया छे. पोताने हाथे पोतानो घात करवो, जेमके कुवामां पडी मरवुं, पर्वत उपरथी गरी पडवुं, अग्निमां झंपलाववुं, अने झेर खावुं, ए बधी आत्मघातनी क्रिया ते पहेलो भेद छे. अने कषायने वश थइने बीजा एकेंद्रिय प्रमुख जीवनो घात करवो, ते बीजो भेद छे, जेथी पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोनो उपघात थाय, तेवा खेती प्रमुख कार्यनो आरंभ करवो, ते आरंभिकी नामे छठ्ठी क्रिया छे. धन, धान्य विगेरे नव प्रकारना परिग्रह मेळववा अने तेनी उपर मोह करतां जे क्रिया लागे, ते पारिग्रहिकी नामे सातमी क्रिया छे. माया-कपटथी बीजाने ठगवुं, ते माया प्रत्ययिकी नामे आठमी क्रिया छे. जिन वचन पर भरोसो न राखवो, विपरीत प्ररूपणा करवाथी जे क्रिया लागे, ते मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी नामे नवमी क्रिया छे. अविरतिपणे करी पच्चखाण लीधा विना सघळा दीसतां वस्तुनो जेनो त्याग नथी, एवा जे अविरति रहेतां क्रिया लागे, ते अप्रत्याख्यानिकी नामे दशमी क्रिया छे. घोडा विगेरे जीव तथा वस्त्र प्रमुख अ-

ीवोने जोवा वास्ते जवुं, ते द्रष्टिकी नामे अगीयारमी
क्रिया छे. रागने वश थइने जे पुरुष, स्त्री, गाय, बळद,
अने वस्त्र विगेरे जीव अजीव सुकुमार वस्तुने स्पर्श कर-
ाथी जे क्रिया लागे, ते स्पृष्टिकी अथवा पृच्छिकी नामे
ारमी क्रिया छे. बीजाने घेर हाथी, घोडा, वस्त्र, विगेरे
उमदा वस्तु जोइ, ' ए वस्तु एनी पासे केम होय, ' एवुं
चिंतववाथी जे क्रिया लागे, ते प्रातित्यकी नामे तेरमी
क्रिया छे. जीव एटले पोताना घोडा विगेरेने जोवा आ-
वेला लोकोने प्रशंसा करतां जोइने जे हर्ष लाववो ते,
अने अजीव एटले घर, आभूषण, वस्त्र, विगेरे जोवा
आवेला लोकोने प्रशंसा करतां जोइने हर्ष लाववो ते,
अथवा दूध, दहीं, घी, अने तेलनां पात्र उघाडां मुकवाथी
तेमां जे त्रस जीव आवी पडे, तेनी हिंसाथी जे क्रिया
लागे, ते सामंतोपनिपातिकी नामे चौदमी क्रिया छे.
जीव एटले मनुष्य विगेरे तथा अजीव एटले पथरा वि-
गेरेने फेंकवा, ते नैशस्त्रिकी नामे पंदरमी क्रिया छे,
अथवा बीजाओए उपदेश करेलां पापमां जे घणो काळ
प्रवर्त्ते, अने ते पापनी भावथी अनुमोदना करे, ते पण
नैशस्त्रिकी नामे पंदरमी क्रिया कहेवाय छे. पोताना हाथथी
जे पापनी क्रिया करे, ते स्वहस्तिकी नामे सोळमी
क्रिया छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योग केटला ? २ मनोयोग, वचनयोग, अने काययोगनां लक्षणो कहो. ३ आश्रव तत्त्वना प्रकरणमां जे क्रियाओ गणेली छे, ते केटली छे ? ४ कायिकी क्रिया एटले शुं ? ५ कायिकी क्रियाना केटला भेद छे ? ६ अनुपयुक्त कायिकी क्रियानो अर्थ समजावो. ७ आधिकरणिकी क्रियानो अर्थ शो ? ते समजावो. ८ संयोजना अने निर्वर्त्तना विषे समजूती आपो. ९ जीव अने अजीव उपर द्वेष करे, ते कई क्रिया कहेवाय ? १० स्व परितापना अने परपरितापना ए कई क्रियाना भेद छे ? ११ प्राणातिपातिकी क्रियाना केटला भेद छे ? १२ पंच पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोनो उपघात थाय, एवं वर्त्तवाथी जे क्रिया लागे, ते क्रियानुं शुं नाम ? १३ पारिग्रहिकी अने अप्रत्याख्यानिकी क्रियानो अर्थ शुं ? १४ बीजाने कपटथी ठगवुं, ए क्रियानुं नाम शुं ? १५ जिन वचनपर श्रद्धा न राखवी विपरीत प्ररूपणा करवाथी शुं क्रिया लागे ? १६ जीव अजीव पुद्गल जोईने राग करवाथी कई क्रिया लागे ? १७ दृष्टिकी अने स्पर्शिकी क्रियानो अर्थ शुं ? १८ बीजाना वैभवने जोईने ईर्षा करे, ते क्रियानुं नाम शुं ? १९ जीव अजीव [illegible] [illegible] करवाथी कई क्रिया लागे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ, अशुभ, जयणा, मिथ्यादृष्टि, अपेक्षा, प्रमादी संयमी, कर्त्तव्य रुपे, व्यापार, उपकरणो, यंत्र, संयोजन, तोमर, शक्ति, द्वेष, परिताप, आत्मघातनी, विपरीत प्ररुपणा, सुकुमार.

पाठ ५५ मो.

त्रण योग अने पचवीश क्रिया—भाग २ जो.

श्री अरिहंत भगवाननी आज्ञा उल्लंघन करी, पोतानी बुद्धिथी जीवाजीव विगेरे पदार्थ प्ररुपणा करवाथी जे क्रिया लागे, ते आज्ञापनिकी नामे सत्तरमी क्रिया छे. बीजानां अछतां मांठां आचरणने प्रकाश करी, तेनी पूजानो नाश करवो, तेथी उत्पन्न थयेली जे क्रिया लागे ते, अथवा कांइ सचित के अचित वस्तु विगेरे विदारवाथी जे क्रिया लागे, ते वैदारणिकी नामे अढारमी क्रिया छे. आभोग एटले उपभोग, तेथी जे विपरीत होय, ते अनाभोग कहेवाय छे. तेनाथी जे क्रिया लागे, अथवा देख्या विना तेमज मार्जन कर्या विना भींत के जमीन विगेरे उपर शरीर नाखवाथी जे क्रिया लागे, ते अनाभोगिकी नामे ओगणीशमी क्रिया छे. परमेश्वरे कहेल

जे करवा योग्य विधिओ, तेमांनी कोइ पोताने तथा को परने हितकारी छे, तेवी विधिओमां प्रमादने लइ अनादर करवो, ते अनवकांक्षाप्रत्ययिकी नामे वीशमी क्रिया छे. प्रयोग एटले मन, वचन, अने कायानो व्यापार, दोडवुं, चालवुं, विगेरे कायानो व्यापार, हिंसाकारी कठोर तथा जुठुं बोलवारुप वचननो व्यापार, अने बीजानी इर्षा तथा अभिमान विगेरे मननो व्यापार, ए त्रण व्यापार करवाथी जे क्रिया लागे, ते प्रायोगिकी नामे एकवीशमी क्रिया छे, जेणे करीने विषयनुं ग्रहण थाय, ते समुदान एटले इंद्रिय कहेवाय छे. तेनो देशथी अने सर्वथी उपघात करवो. जेमके आदेश आपीने नीभाडा विगेरे हिंसानां काम करावतां, ते समुदान नामे बावीशमी क्रिया छे. माया—कपट तेमज लोभथी जे क्रिया करवामां आवे, ते प्रेमप्रत्ययिकी नामे त्रेवीशमी क्रिया छे. क्रोध तथा मान करीने जे पाप, ते द्वेषप्रत्ययिकी नामे चोवीशमी क्रिया छे. चालवाथी जे क्रिया लागे, ते इर्यापथिकी नामे पचीशमी क्रिया छे. आ पचीश क्रियाओमां केटलीएक क्रियाओ आश्रवनी अंदर आवी जाय छे. [illegible] ते गुण [illegible] लागती नथी, एम जाणवुं.

—

सामान्य कथा.

[illegible]

२ अनाभोगथी जे क्रिया लागे, ते क्रियानुं शुं नाम छे ? ३ आज्ञापनिकी अने वैदारणिकी क्रिया एटले शुं ? ते समजावो. ४ कपट अने लोभथी जे क्रिया करवामां आवे, ते क्रियानुं शुं नाम ? ५ परमेश्वरे कहेल विधिओमां प्रमादथी अनादर करवो, ते कइ क्रियाओ कहेवाय ? ६ प्रयोगिकी अने समुदान क्रिया विषे बराबर समजावो. ७ द्वेषप्रत्ययिकी अने इर्यापथिकी क्रियानो अर्थ शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

उल्लंघन, प्ररुपणा, अछतां, विदारवुं, उपयोग, मार्जन, विधि, हितकारी, अनादर, व्यापार, समुदान, उपघात.

पाठ ५६ मो.

आश्रय तत्व विषे कविता.

दोहरा.

जेथी आवे कर्मजळ, जीव सरोवरमांय,
ते आश्रवनुं सर्वथी, लक्षण श्रेष्ट गणाय. १

ते संवरना द्रव्य अने भाव एवा बे भेद पडे छे. जे नवां कर्मनुं रोकाववुं, ते द्रव्यसंवर कहेवाय छे. समिति विगेरेथी जे शुद्ध उपयोगरुप द्रव्यपणुं परिणामने पामे, अने तेथी करीने आत्माना परिणाम भाव कर्मना रोधक थाय, एटले रोकनार थाय, ते भावसंवर कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ संवर तत्व केटलामुं तत्व छे ? २ संवर शब्दनो अर्थ शो ? ३ संवर तत्वना भेद केटला छे ? ४ संवरना एकंदर भेद गणावो. ५ द्रव्यसंवर अने भावसंवर शुं ? ते समजावो. ६ भावसंवरमां आत्मानां परिणाम केवां थाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

समिति, गुप्ति, यतिधर्म, भावना, परीषह, चारित्र, शुद्ध उपयोग, परिणाम, भावकर्म, रोधक.

प्रयोजनने साधनार, अने संदेह विनानां वचनो जे बोलवामां आवे, ते भाषा समिति छे. बेंताळीश प्रकारनां दूषणोथी रहित, एवा आहार विगेरेने ग्रहण करवा, ते त्रीजी एषणा समिति छे. एषणानो अर्थ इच्छा थाय छे. एषणा समितिवाळो पुरुष निर्दोष अने शुद्ध आहारनी गवेषणा करे छे. बेसतां, उठतां, अने कोइ चीज लेतां के मुकतां पुंजवानो उपयोग राखवो, ते चोथी आदान निक्षेपणा समिति कहेवाय छे.

विष्टा, मूत्र, थुंक, वडखा, शरीरनो मेल, वस्र, अन्न अने पाणी जे शरीरने उपयोगना न होय, ते सर्व जीव विनानी भूमिमां परठवे, तेवा उपयोगने पांचमी पारिष्टापनिका समिति कहे छे.

मन, वचन, अने कायाना योगने गोपववा, ते गुप्ति कहेवाय छे, ते मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, अने कायगुप्ति, एवा त्रण प्रकारनी छे. जे मनने गोपववुं, ते पहेली मनोगुप्ति छे, जे वचनने गोपववुं, ते बीजी वचनगुप्ति छे, अने जे कायाने गोपववी, ते त्रीजी कायगुप्ति छे.

उपर कहेल पांच समिति अने त्रण गुप्ति, ए आठ बोल चारित्रनो निर्वाह करवाने माटे माता समान छे, तेथी तेने शास्त्रमां अष्टप्रवचनमाता एवा नामथी कहेवाय छे.

धर्म आवे छे. यतिधर्म अथवा मुनिधर्मना दश प्रकार छे. कदि पोतामां सामर्थ्य होय, अथवा न होय, तोपण बीजानां दुर्वचन सहन करवां, तेनां जे परिणाम राखवां, ते पहेलो क्षमाधर्म छे. नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवो, ते बीजो मार्दवधर्म छे. मन, वचन अने कायानी कुटिलतानो त्याग करवो, एटले निष्कपटपणे रहेवुं, ते त्रीजो आर्जव धर्म छे. बाहेर अने अंदरथी तृष्णा के लोभनो त्याग, ते चोथो मुक्तिधर्म छे. रस विगेरे धातु अथवा आठ प्रकारनां कर्म, जेनाथी भस्म थाय, ते अनशन विगेरे तप, ते पांचमो तपोधर्म छे. तप धर्मथी इच्छानो निरोध थाय छे. आश्रवने त्याग करवानी जे वृत्ति, ते छट्ठो संयमधर्म छे. प्राणातिपात विगेरे पांचमांथी विराम पामवुं, पांच इंद्रियोनो निग्रह करवो, चार कपायने जीतवा, अने त्रण दंडनी निवृत्ति, ए सत्तर भेदे संयमधर्म कहेवाय छे. सत्य बोलवुं, एटले मृपावादनो त्याग करवो, ते सातमो सत्यधर्म कहेवाय छे. संयम वृत्तिमां कलंकनो अभाव, ते आठमो शौचधर्म कहेवाय छे. आ शौचधर्मने बीजी रीते पण वर्णवेलो छे. बेंतालीश दोषथी रहित भात पाणी विगेरे आहार लेवो; ते द्रव्यथी शौच कहेवाय छे, अने आत्माना जे शुद्ध अध्यवसाय एटले कपाय विगेरेथी रहित एवां शुद्ध परिणामनी शुद्धि, ते भाव शौच कहेवाय छे; अथवा मन, वचन, अने काया शुद्ध राखवां, संयमने विषे निरतिचा-

शुं ? ते समजावो. १३ औदारिक अने वैक्रिय संबंधी मैथुन केटला प्रकारनुं छे ? ते कहो. १४ खरेखरो यति कोण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामर्ध्य, दुर्वचन, परिणाम, नम्र, कुटिलता, रस विगेरे धातु, निरोध, निग्रह, व्रण दंड, कलंक, अध्यवसाय, वृद्धि, निरतिचारपणे, जीव अदत्त, स्वामि अदत्त, गुरु अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, मूर्छा, औदारिक, वैक्रिय.

पाठ ६० मो.

ब्रह्मचर्य—नव गुप्ति.

अथवा

नव वाड.

१ वस्ति, २ कथा, ३ आसन, ४ इंद्रिय, ५ कुड्यांतर, ६ पूर्व क्रिडानुं स्मरण, ७ प्रणीत भोजन, ८ अतिमात्राहार, अने ९ विभूषण. आ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहेवाय छे. दरेक मुनिए आ नव गुप्ति सहित ब्रह्मचर्य राखवुं जोइए, जे ए नव गुप्तिथी शील पाळे, ते खरेखर

साधु कहेवाय छे. ज्यां देवी अने मानुषी ए बे प्रकारनी स्त्री प्रत्यक्ष के मूर्तिरूपे रहेती न होय, ज्यां पशु पक्षी तिर्यंचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, बकरी के बे[illegible] विगेरे रहेती न होय, अने ज्यां नपुंसक रहेता न होय, तेवी वस्तीमां साधुए रहेवुं जोइए. जे वस्तीमां स्त्री, पशु अने नपुंसक रहे, ते स्त्रीपशु पंडकवाळी वस्ती कहेवाय छे. नपुंसकनुं बीजुं नाम पंडक छे. जो ते त्रणेनी [illegible] स्तीमां साधु रहे, तो तेओनी काम विकारनी चेष्टा [illegible] तथाथी ब्रह्मचारी साधुना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने बाधा थाय छे. आ ब्रह्मचर्यनी पहेली नार्ने पहेली गुप्ति (वाड) छे.

एकली स्त्रीने उद्देशीने कथा करेवी, तथा स्त्रीओ [illegible] कथा करेवी, ए साधुने योग्य नथी. कारण के ए कथा राग उत्पन्न करनारी होय छे. ब्रह्मचर्यवाळा साधुए स्त्रीना रूप, जाति, कुळ, देश, भाषा, गति, विलास, [illegible] चेष्टा, लावण्य, शोभा, [illegible], [illegible], रति [illegible] [illegible] के [illegible] कथा साधुए करवी न जोइए, [illegible] [illegible] करे, तो मुनिनुं मन विकार पामे छे. आ [illegible] ब्रह्मचर्यनी बीजी गुप्ति (वाड) छे.

[illegible] साधुए [illegible] [illegible]

कारण के, त्यां बेसवाथी स्त्रीनुं स्मरण थाय छे, तेमज स्त्रीना बेसवाथी शय्या, अथवा आसन मलीन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाळा आसन विगेरेथी विकार उत्पन्न थाय छे. आ आसन नामे त्रीजी गुप्ति कहेवाय छे.

स्त्रीओनां अंग, उपांग ने नेत्र फाडीने जुवे नहीं. कदि दृष्टि पडी जाय, तो " वाह ! केवी सुंदर छे ? " एवुं चिंतवन करे नहीं. आ इंद्रिय नामे चोथी गुप्ति कहेवाय छे.

ज्यां दीवाल, तट्टी, के कनातने अंतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेओना अवाज संभळाता होय, त्यां ब्रह्मचारी साधुए रहेवुं नहीं. आ कुडयंतर नामे पांचमी गुप्ति छे.

पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे विषय भोग क्रीडा करी होय, तेनुं स्मरण साधुए करवुं नहीं. जो स्मरण करे, तो विषय सेववानी इच्छा थाय. आ पूर्व-क्रीडा नामे छट्ठी गुप्ति छे.

अति चीकाशवाळा, मीठा, दुध, दहीं विगेरे धातु पुष्ट करनार पदार्थोनो निरंतर आहार करवो नहीं. जो तेवो आहार करे, तो वीर्यनी वृद्धि थवाथी विकार उत्पन्न थाय छे, अने तेथी वखते विषयनी इच्छा थाय छे. आ प्रणीत नामे सातमी गुप्ति छे.

कदि लुखी भिक्षा होय, तोपण साधुए प्रमाणथी अधिक खावी नहीं; कारण के, हद उपरांत खावाथी पण विकार उत्पन्न थाय, अने शरीरने झाडा विगेरेनी पीडा थइ पडे छे. आ अतिमात्राहार नामे आठमी गुप्ति छे.

स्नान, विलेपन अने धूप करी शरीरने सुंदर करवुं, नख समारवा, दांत साफ करवा, केशमां तेल नाखवुं, कपाळे तिलक करवुं, आंखमां काजळ सारवुं, सुशोभित करवा वास्ते हाथ, पग विगेरे शरीरना अवयवने तेल अथवा साबुथी मसळवां—आ प्रमाणे शरीरनो शणगार न करे, आ विभूषणादि नामे नवमी गुप्ति छे.

आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा करे छे, तेथी साधु सिवाय बीजा ब्रह्मचारीए पण आ नव वाड पाळवी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ ब्रह्मचर्यनी केटली गुप्ति छे? २ गुप्ति एटले शुं? ३ नव गुप्तिनां नाम बतावो. ४ स्त्रीना [illegible] मांथा केटला वखत [illegible]? ५ स्त्री, पशु, अने [illegible] ए शुं? [illegible] समजावो. ६ स्त्रीओनी साथे [illegible] [illegible] ७ [illegible]

समजावो. ८ केवी दीवाल तट्टी के कनात होय, त्यां साधुए न रहेवुं. ९ इंद्रिय अने क्रीडा ए वे गुप्ति विषे समजावो. १० धातुपुष्ट करनार पदार्थोनो आहार करवो नहीं, ते गुप्तिनुं नाम शुं ? ११ शरीरने शणगारवुं नहीं, ए गुप्तिनुं नाम शुं ? १२ अतिमात्राहार अने पूर्वक्रीडा ए वे गुप्ति विषे समजावो. १३ आ नव वाड कोनी रक्षा माटे छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कुट्यांतर, प्रणीत, अतिमात्राहार, मानुषी, तिर्यंचणी, पंडक, नपुंसक, ब्रह्मचारी, उद्देशीने, विलास, हावभाव, चेष्टा, लीला, कटाक्ष, रति, कलह, शृंगार, शय्या, अंग, उपांग, धातुपुष्ट, निरंतर, वीर्य, विलेपन.

पाठ ६१ मो.

(संवर तत्वना सतावन भेद.)

बार भावना.

बार भावनाना बार प्रकार छे, अने ते संवर तत्वना सतावन भेदमां गणाय छे. १ अनित्य भावना, २ अशरण

भावना, ३ संसार भावना, ४ एकत्व भावना, ५ अन्यत्व भावना, ६ अशुचि भावना, ७ आश्रव भावना, ८ संवर भावना, ९ निर्जरा भावना, १० लोक स्वभाव भावना, ११ बोधि दुर्लभ भावना, अने १२ धर्म भावना—आ बार भावनाओ कहवाय छे. लक्ष्मी, यौवन, कुटुंब परिवार तथा आयुष्य [illegible] जेम [illegible] भावना. ने पहेली अनित्य भावना [illegible] आ मनावती [illegible]

[illegible]

छे; तेथी ते शरीर कोइ दिवस शुचि एटले पवित्र थतुं नथी. आ प्रमाणे भाववुं, ते छठी अशुचि भावना छे. पांच इंद्रिय, चार कपाय, पांच अव्रत, त्रण योग, अने पचवीश क्रिया—एवा भेदथी कर्म बंधाय छे, तेमज दया दान विगेरेथी शुभ कर्म अने विषय कषाय विगेरेथी अशुभ कर्म बंधाय छे. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते सातमी आश्रव भावना छे. जे जे संवर आदरवाथी जे जे आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रवने रोकवा, ते आठमी संवर भावना छे. जेम संकीर्ण स्थानकना योगथी केरी पाके छे, तेम बार प्रकारना तपे करीने कर्मने पचाववुं, एटले पूर्वे करेलां कर्मने साडवुं, ते रुपी निर्जरा सकाम तथा अकाम, एम बे प्रकारे छे. एवी जे भावना भाववी, ते नवमी निर्जरा भावना छे. आ चौद राजलोक केड उपर बे हाथ दइ, बंने पग पसारीने उभेला पुरुषना जेवा आकारवाळो छे, ते षद्‌द्रव्यरुपे छे. पूर्वना पर्याय नाश पामे, नवा पर्याय उत्पन्न थाय, अने द्रव्यपणे निश्चळ, एम उत्पाद, व्यय तथा ध्रुव स्वरुप छे. जे लोकनुं नीचेनुं तळीयुं उंधा वाळेला चपणा जेवुं, मध्य भाग झालर जेवो, अने उपरनो भाग मृदंगना जेवो छे. वळी ए लोक शाश्वतो छे. आ प्रमाणे जे भावना करवी, ते दशमी लोक स्वरुप भावना छे. जीवने आ संसारमां भमतां अनंता पुद्गळ परावर्त्त थइ गया, तेमां अनंत बार चक्रवर्त्ती विगेरेनी समृद्धि मळी, तथा यथा

नदीनिकरणने योगे करी, तथा अकाम निर्जरावडे पुण्यना प्रयोगथी मनुष्यभव, आर्यदेश, निरोगी काया, अने धर्मना श्रवणनो योग प्राप्त थयो. तोपण सम्यक्त्व पामवुं अति दुर्लभ छे. एवी जे भावना भाववी, ते धर्मावासमां बोधि दुर्लभ भावना छे. दुःखे तरी शकाय एवा आ संसार समुद्रमांथी तारवाने वाहाण समान एवो जे श्री जिन वर्णीत क्षमा विगेरे दश प्रकारनो शुद्ध धर्म, तथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्न स्वरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे. तथा ते धर्मना साधक अरिहंत विगेरे पण आ संसारमां पामवा दुर्लभ छे. आ प्रमाणे जे चिंतवुं, ते बारमी धर्म भावना कहेवाय छे.

एम कहेली बार भावना. तथा चार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. अने [illegible], [illegible] कारुण्य, अने माध्यस्थ- ए चारे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

सारांश प्रश्नो.

[illegible]

उपर रहेला जळना टीपानी जेम सर्व आनित्य धारवुं,
कइ भावना कहेवाय ? ६ अशरण भावना अने एकत्व
भावना विषे समजावो. ७ जे जे संवर आदरवाथी
आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रवने
रोकवा, ते कइ भावना कहेवाय ? ८ शरीर अने आ-
त्माने जुदा जुदा मानवा, ते कइ भावना कहेवाय ? ९
अशुचि भावना अने आश्रव भावनानुं स्वरुप कहो.
१० बार प्रकारनां तपथी कर्मने पचाववां, ए कइ भावना
कहेवाय ? ११ आ संसाररुप समुद्रने तारनार दश प्रका-
रनो धर्म तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप त्रण प्रकारनो धर्म
छे एम चितववुं, ते कइ भावना कहेवाय ? १२ लोक स्वरुप
भावना, अने बोधि दुर्लभ भावना विषे समजावो. १३ आ
बार भावना शिवाय बीजी कइ भावना भाववी जोइए ?



शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यौवन, दर्भ, अग्रभाग, अनित्य, अस्थिर, जरा,
विचित्रता, ज्ञानस्वरुप, रुधिर, रस, वीर्य, अशुचि, नव
द्वार, बार द्वार, संकीर्ण स्थानक, निर्जरा, सकाम, अकाम,
षट् द्रव्य, पर्याय, निश्चळ, उत्पाद, व्यय, ध्रुव स्वरुप,
चपणा, मृदंग, पुद्गल परावर्त्त, यथा प्रवृत्तिकरण, श्री
जिन प्रणीत, साधक, मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, उपेक्षा.



पाठ ६३ मो.

[संवर तत्त्वना सत्तावन भेद.]

बावीश परिषह.

संवर तत्त्वना सत्तावन भेदनी अंदर बावीश परिष
हपण गणाय छे. सर्व प्रकारे कर्मनी निर्जरा करवाने माटे
जे सहन करवुं, ते परिषह कहेवाय छे, ते परिषह
बावीश प्रकार छे. क्षुधाथी उत्पन्न थती वेदनाने सहन
करवी, ते पहेलो क्षुधा परिषह कहेवाय छे. तृषा
लागवाथी थती वेदनाने सहन करवी, ते बीजो पिपासा
परिषह छे. टाढथी थती वेदनाने सहन करवी, ते त्रीजो
शीत परिषह छे. ताप लागवाथी थती आतापना—[illegible]
ताने सहन करवी, ते चोथो उष्ण परिषह छे. डांस
मच्छर, जू, मांकड विगेरेना डंसने समभावे सहन करे
ते पांचमो दंश परिषह छे. जुनां वस्त्र होय तो, [illegible]
खेद न करे, अने नवां वस्त्र होय तो, हर्ष [illegible]
करे, ते छठो अचेलक परिषह छे. [illegible]
[illegible] थाय—भगवंतनो उत्तम धर्म, [illegible]
करवी, ते सातमो अरति परिषह छे. [illegible]
[illegible] तथा हावभावने देखी [illegible]
[illegible] ते आठमो स्त्री परिषह छे. [illegible]

गामोगाम विहार करवो, अने जे कष्ट सहन करवुं, ते नवमो चर्या परिषह छे. शून्य घर तथा स्मशान विगेरेमां कायोत्सर्ग विगेरे क्रिया करतां सिंह प्रमुखनो भय थतां, जे डरवुं नहीं, ते दशमो निषिधिका परिषह छे. चढतां, उतरतां, उंची, नीची, शीतळ, उष्ण, कोमळ, अथवा कठण भूमि उपर आसन के शय्या पामी उद्वेग धरे नहीं, पण सारी रीते ते दुःख सहन करे, ते अगीयारमो शय्या परिषह कहेवाय छे. क्रोधनां वचन सांभळीने सांखी रहेवां, ते बारमो आक्रोश परिषह छे. कोइ लपडाक, पाटु, चाबुक, तथा लाकडीनो घा करे, अथवा वध करे, पण पोते जरा पण रोष न लावतां सम परिणामे सहन करे, ते तेरमो वध परिषह छे. पोते राजा के चक्रवर्त्ति होय, पण संयम लइने निच, के उंच कुळमां भिक्षा लेवा जतां लज्जा न पामे, ते चौदमो याचना परिषह छे. कांइ पण चीजनी याचना करे, अने ते चीज गृहस्थना घरमां होय, ते छतां ते न आपे, तोपण उद्वेग न पामे; अनिष्ट चिंतवे नहीं, बोले नहिं पण ते समता भावे सहन करे, ते पंदरमो अलाभ परिषह छे. कोइ पण रोग उत्पन्न थतां, तेनी अति वेदना थाय, तोपण आर्त्त ध्यान करे नहीं, अने ते सारी रीते सहन करे, ते सोळमो रोग परिषह छे. जमीनपर दाभ विगेरेनी शय्या उपर सूतां, तेना अग्र भाग भोंकावाथी जे वेदना थाय, तेने सारी रीते सहन करे, ते सत्तरमो

मूर्छारूपी परिग्रह छे. तेने मागधी भाषामां नणत्ता
परिग्रह पण कहे छे. शरीर धर्मीनाना संयोगे मेल था
मेल तेथा शरीर शरीर थाय. तोपण स्नाननी इच्छा
न करे. अथवा तेवां स्नानीने पण न गिनवे के. " [illegible]
[illegible] भाषाथी [illegible] भाषा कहने सहन करवु, [illegible]
[illegible] मन परिग्रह छे [illegible] सत्कार पजवाथी
[illegible] न भाग, मन न मजवाथी खेद न पावे, [illegible]
[illegible] सत्कार परिग्रह [illegible] ज्ञान [illegible]
[illegible] भावनाना [illegible]
[illegible]

आ बाविश परिषहोने समभावे सहन करवा, ते संवर छे.

सारांश प्रश्नो.

१ परिषह क्या तत्वमां गणाय छे, अने ते केटला छे ? २ परिषह एटले शुं ? ३ शून्य घर के स्मशान विगेरेमां कायोत्सर्ग विगेरे क्रिया करतां सिंहादिकनो भय थाय, तथापि डरवुं नहीं, ते कयो परिषह ? ४ गामोगाम विहार करवानुं कष्ट वेठे, ते कयो परिषह छे ? ५ क्षुधा परिषह, अने पीपासा परिषह विषे समजावो. ६ स्त्रीनां अंगोपांग देखी मनने स्थिर राखवुं, ते कयो परिषह ? ७ ताढ, तडका विगेरेना संभवथी अणगमो थाय, ते कयो परिषह ? ८ शीत परिषह, अने उष्ण परिषह विषे समजावो, ९ अचेलक परिषह, दंश परिषह, शय्या परिषह, अने आक्रोश परिषहनां लक्षण कहो. १० आदर के सत्कार मळवाथी उत्कर्ष न आणे, अने ते न मळवाथी खेद न पामे, ते कयो परिषह ? ११ याचना परिषह, अलाभ परिषह, तृण स्पर्श परिषह विषे समजावो. १२ तणफास परिषह ए कइ भाषानो शब्द छे ? १३ वध परिषह, निषिधिकी परिषह, प्रज्ञा परिषह, अने सम्यक्त्व परिषह विषे समजावो.

न इच्छे कदि वायु पंखानी रीतें,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ३

नडे मच्छरो मांकडो डांस जंतु[१],
निवारे न ते जे सहे छे परंतु;
न धारे कदि आर्त्तता[२] आप चित्ते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ४

धरे फाटलां तुटलां वस्त्र अंगे,
न च्हाहे रुडा ते वधारे उमंगे;
सदा एषणा[३] धर्मने आप जीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ५

अभावो[४] बने संयमे वर्त्तता जो;
सहे ते बधुं राखीने प्रेमता जो,
बधुं ते सहे जे नडे सर्व रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ६

विलोके कदि अंगनां[५] अंग सारां,
रहे स्वस्थ चित्ते गणी ते नठारां;
न मोहे कदि राग रंगे सुगीते[६],
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ७

विहारो करे सर्वदा सर्व गामे,
बनी आलसु ते धर्का ने विरामे[७];

---

१ प्राणी. २ आर्त्तध्यान. ३ इच्छा धर्म. ४ अरति. ५ स्त्री. ६ सारा गीत. ७ विराम पामे नहीं.

वधे नित्य चर्या[1] करे एक रीति,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीति. ८

करे काउसग्गादि शून्य स्मशाने,
सुणे गर्जना सिंहनी जाय काने:
डगे नहीं तदि तोय मृत्युनी भीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीति. ९

सहे नित्य शय्यासने कष्ट भारे,
नहीं कोइना वाक्यथी [illegible] धारे:
डगे नहीं तदि मारथी दुःख [illegible]
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीति. १०

नहीं मानथी [illegible] आप [illegible].
[illegible] न [illegible].
सहे [illegible] शांत चित्ते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीति. ११

[illegible]
[illegible] नहीं [illegible]:
सहे [illegible] गुप्ति,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीति. १२

[illegible]
[illegible]

[illegible]

रहे नित्य मानापमाने[1] सुमीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १३
नहीं पूर्ण प्रज्ञा[2] थकी गर्व जामे,
नहीं अल्प बुद्धि धरी खेद पामे;
सहे कष्ट अज्ञाननुं[3] तेज रीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १४
अश्रद्धा न राखे धरी व्हेम चित्ते,
न लोभाय जे अन्यना धर्मवित्ते[4];
परिषह पुरा धारतां ते सुरीते,
अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १५

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी,

तथा कवितामां बावीश परिषह अनुक्रमे आप्या छे, ते समजाववा.

क्षुधाकष्ट, पिपासा, शीत, वांच्छना, मध्यकाले, चर्म, जंतु, आर्त्तता, एषणा धर्म, ताजो, अंगना, स्वच्छ चित्ते, सुगीते, विरामे, चर्या, स्मशान, शय्यासने, स्वचित्ते, मानापमाने, प्रज्ञा, अश्रद्धा.

---

१ मान, अपमान. २ बुद्धि. ३ अज्ञान परिषह. ४ धर्मरुप द्रव्यमां.

पाठ ६५ मो.

(संवर तत्त्वना सत्तावन भेद.)

पांच प्रकारनुं चारित्र.

संवर तत्त्वना सत्तावन भेदमां चारित्रना पांच भेदनी गणना थाय छे. १ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र, अने ५ यथाख्यात चारित्र—एवा ए पांच भेदनां जुदां जुदां नाम छे; ज्यां राग द्वेषना अभावने माटे जे लाभ, अथवा ज्यां ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो लाभ थाय, ते दरेकनुं सामायिक चारित्र कहेवाय छे, ए चारित्रना देशविरति अने सर्वविरति—एवा बे भेद थाय छे, जेवां गृहस्थ पापनां त्याग करे, अने निरवद्य योगनुं सेवन करवुं, ते देश थकी पालवे अने सर्व थकी साधुने होय छे.

जेमां पूर्व पर्यायनो छेद करवामां आवे, ते छेदोपस्थापनीय चारित्र कहेवाय छे. [illegible]

कहेवाय छे, अने नवा दीक्षा लीधेला शिष्यने " छज्जी-
वणीया " अध्ययन भण्या पछी, अथवा बीजा तीर्थने
आश्रयी होय, ते निरतिचार छेदोपस्थापनीय कहेवाय
छे; जेम श्री पार्श्वनाथ स्वामीना तीर्थथी श्री वीरस्वामीना
तीर्थे आवी चार महाव्रतरुप धर्मनो त्याग करी पंचमहाव्रतरुप
धर्मने आदरे, ते निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र छे.
जेमां विशेष तप करवाथी कर्मनी निर्जरा थाय, ते त्रीजुं
परिहार विशुद्धि चारित्र कहेवाय छे. ते चारित्रना
निर्विश मानसिक अने निर्विष्टकायिक एवा बे भेद
छे, जे चार जण आ चारित्रना आसेवक होय, अने
र कल्पमां प्रवर्त्तता होय, तेनुं जे चारित्र ते निर्विश
ानसिक परिहार विशुद्धि चारित्र कहेवाय छे. चार
ण तेना अनुचारी होय, तेने जे चारित्र होय, ते
विष्टकायिक परिहार विशुद्धि नामे चारित्र कहेवाय
तेमां नवमो एक वांचनाचार्य होय छे. एवी रीते
जणना समूहथी आ चारित्र आदरवामां आवे छे.

चोथा चारित्रनुं नाम सूक्ष्म संपराय चारित्र
ाय छे, ते चारित्रमां कषाय सूक्ष्म होय छे, तेथी तेनुं
संपराय एवुं नाम छे. उपशम श्रेणिए कर्मने शमावतां
क्षपक श्रेणिए कर्मने खपावता होय, त्यां नवमे
णे लोभना संख्याता खंड करी, तेने उपशम श्रेणी-
होय, ते उपशमावे, तथा क्षपक श्रेणीवाळो होय
वे, ते संख्याता खंड मांहेलो जे वारे छेल्लो एक खंड रहे,

सारांश प्रश्नो.

१ चारित्रना केटला भेद छे ? २ पांच प्रकारनां चारित्रनां नाम आपो. ३ ज्यां ज्ञान, दर्शन, अने चारित्रनो लाभ थाय, ते चारित्रनुं शुं नाम ? ४ सामायिक चारित्रना केटला भेद छे ? ५ सावद्य योगनो त्याग अने निरवद्य योगनुं सेवन करवुं, ते शुं कहेवाय, अने श्रावकने तथा साधुने ते केवी रीते होय ? ६ यथाख्यात चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते समजावो. ७ छाद्मस्थिक अने कैवलिक चारित्र कोना भेद छे, अने ते चारित्र केवी रीते होय ? तेनी बराबर समजूती आपो. ८ जेमां सत्वर मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, ते कयुं चारित्र ? ९ उपशमिक अने क्षपकने केटलामे गुणठाणे कयुं चारित्र होय छे ? ते कहो. १० छेदोपस्थापनीय चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते कहो. ११ नवा दीक्षा लीधेला शिष्यने बीजा तीर्थने आश्रीने जे चारित्र होय, तेवा चारित्रनुं शुं नाम ? १२ निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्रनो दाखलो आपो. १३ परिहार विशुद्धि चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते समजावो. १४ निर्विश मानसिक अने निर्विष्ट कायिक एटले शुं ? १५ जे श्रेणी चढता होय, अने जे उपशम श्रेणीथी पडता होय, ते कया चारित्रमां आवे छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रवचन, देशविरति, सर्व विरति, सावद्य योग, निरवद्य योग, पूर्व पर्याय, मूळ गुण, प्रायश्चित, छजीवणीया, अध्ययन, आ सेवक, फलमां, अनुचारी, उपशम श्रेणी, क्षपक श्रेणी, नवारतां, गुणठाणे, संज्वलना मान, मनि प्रकार, छद्मस्था, उपशमिक, क्षपक, प्रमाद.

पाठ ६८ मो.

१ निगोद [illegible].

[illegible]

ळेज पाकी जाय छे, अने फोदरा विगेरे पराळनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय छे, तेवीज रीते कर्म निर्जरा पण बे प्रकारे थाय छे. एकेंद्रिय विगेरे जे जीव छे, तेओने जडपणाने लइ विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु टाढ, तडको, वर्षाद, अग्नि, छेदन, अने बंध विगेरे कष्ट भोगववाथी कर्मनी अकाम निर्जरा कहेवाय छे.

आ निर्जरा जे साधनथी थइ शके, तेनुं नाम तप कहेवाय छे. ते तपना बार प्रकार छे.

सारांश प्रश्नो.

१ निर्जरा तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ निर्जरा एटले शुं ? ३ निर्जराना केटला भेद छे ? ४ सकाम निर्जरा अने अकाम निर्जरा एटले शुं ? ५ अकाम निर्जरा केवा जीवोने थाय छे ? ६ निर्जरा उपर कयुं दृष्टांत छे ? ते समजावो. ७ सकाम निर्जरा विषे समजावो. ८ तप एटले शुं ? ९ तपना केटला भेद छे.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मुमुक्षु, फोदरा, पराळ, पाक, वर्षा, तप.

छ प्रकारनां आभ्यंतर तप छे. कीधेला अप-
द करवी, ते प्रायश्चित नामे पहेलुं तप छे.
भक्ति करवी, तथा आशातना टाळवी, ते
मे बीजुं तप छे. आचार्य विगेरेने आहार
ो आपवा, तथा तेमनां अंग चांपवां,
नामे त्रीजुं तप छे. भणवुं, भणाववुं, संदेह
भणेलाने फरी संभारवुं, अर्थ चिंतववो, अने
रवो, ते स्वाध्याय नामे चोथुं तप छे. आर्त्त
ानने निवारवुं, अने धर्मध्यान तथा शुक्ल-
ावुं, ते ध्यान नामे पांचमुं तप छे. कर्मना
ायोत्सर्ग करवो, ते कायोत्सर्ग नामे छठुं

छ प्रकारना आभ्यंतर तप कहेवाय छे, ते
या अंदरनी होवाथी तेनुं नाम आभ्यंतर

बंने प्रकारना तपना साधनथी प्राणी कर्मनी
ो शके छे; आथी करीने ते बार प्रकारनां तप
वनी अंदर गणवामां आव्यां छे.

सारांश प्रश्नो.

निर्जरा शेनाथी थाय छे ? २ तपना केटला

पाठ ६८ मो.

तप विषे कविता.

दोहरा.

सर्व कर्मनी निर्जरा, तप करवाथी थाय;
ते तप बार प्रकारनुं. साधन श्रेष्ट गणाय. १

प्रकार छे छो बाह्यना, आभ्यंतरना तेम;
शुद्ध हृदे ते सेववा, थाय निर्जरा जेम. २

ज्यां उपवास करी रहे, ते अनशन कहेवाय;
खानपान ओछां करे, उणोदरीज गणाय. ३

नियम धरी संक्षेप ज्यां, वृत्तिंतणो जो थाय;
ए वृत्ति संक्षेपने, नामे तप कहेवाय. ४

तजी विगय रसनो करे, त्याग महा तप तेह;
उत्कट आसन लोचथी, काय क्लेश तप जेह. ५

ज्यां गोपन छे अंगनुं, ते संलीन गणाय;
एह बाह्य तप जाणवा, षट् भेद ते थाय. ६

आभ्यंतर तप ते कहे, जेनो अंदर योग;
तेना पण छ भेद छे, आपे निर्जर योग. ७

कीधेला अपराधनी, शुद्धि करवी जेह;
ते प्रायश्चित जाणवुं, तेमां नहीं संदेह. ८

छे. आ बंध शब्दनो अर्थ बंदीवान् थाय छे; जेम केदमां पडेलो केदी स्वतंत्र रही शकतो नथी, तेम आत्मा ज्ञा-नावरणीय, विगेरे कर्मना बंधथी स्वतंत्र रही शकतो नथी ए बंध तत्वना चार भेद छे. प्रकृति बंध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध अने प्रदेश बंध, एवां तेमनां नाम छे.

स्वभावपणे जे कर्मनुं परिणमवुं, ते पहेलो प्रकृति-बंध कहेवाय छे. कर्मना काळना परिमाणनो जे निश्चय, ते बीजो स्थितिबंध छे. तीव्र अने मंद विगेरे रसपणे जे कर्मनुं परिणमवुं, ते त्रीजो अनुभागबंध कहेवाय छे, अने कर्म पुद्गलोना प्रदेशना समुदायनुं जे एकठुं थवुं, ते चोथो प्रदेशबंध कहेवाय छे.

आ चारे बंधने स्पष्ट रीते समजवाने माटे एक ला-डवानु द्रष्टांत आपवामां आवे छे. सुंठ, पीपर, अने मरीनो बनावेलो एक लाडवो होय, ते जुदा जुदा स्व-भावने धारण करे छे. सुंठ, पीपर, अने मरी ए त्रिकटु कहेवाय छे. जे वस्तु ते त्रिकटुथी बनेली होय, तेनो स्वभाव वायुने हरण करवानो छे, तेवीज रीते शीत द्र-व्यथी बनेली वस्तुनो स्वभाव पित्तने हरण करवानो छे, तथा अरडुसो अने क्षार विगेरे वस्तुनो स्वभाव कफने हरवानो छे; तेज प्रमाणे कर्मनो पण जुदो जुदो स्वभाव छे. कोइ कर्मनो ज्ञानावरण स्वभाव छे, तो कोइनो द-दर्शनावरण स्वभाव छे, आनुं नाम प्रकृतिबंध क-हेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ बंध तत्व ए केटलामुं तत्व छे? २ बंध एटले शुं? ते दाखला साथे समजावो. ३ बंध शब्दनो अर्थ शुं छे? ४ बंध तत्वना केटला भेद छे? ५ प्रकृतिबंध एटले शुं? ६ काळनो जेमां निश्चय छे, तेने कयो बंध कहे छे? ७ अनुभागबंधनुं स्वरुप समजावो. ८ पुद्गलोना प्रदेशनो समुदाय ते कयो बंध? ९ चार बंध माटे लाडवानो दाखलो समजावो. १० त्रिकटु एटले शुं? ११ चार बंधने लाडवानो दाखलो आपी जुदी जुदी रीते समजावो. १२ अनुभागबंधनुं बीजुं नाम शुं कहेवाय छे?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रदेश, बंदीवान्, परिणमवुं, तीव्र, मंद, रस, शीत द्रव्य, पित्त, क्षार, अंतर्मुहूर्त्त, प्रहर, कोटाकोटी, सागरोपम, अनुभाग, कर्मना प्रदेश.

पाठ ७० मो.

बंध हेतु.

जेनाथी बंध थाय, ते बंधना हेतु कहेवाय छे, ते

हेतुना बे भाग छे. एक बंधना मूळ हेतु, अने बी[जा] बंधना उत्तर हेतु. बंधना मूळ हेतु चार प्रकारना अने उत्तर हेतु सत्तावन प्रकारना छे. मिथ्यात्व, अवि[रति], कषाय, अने योग—ए चार मूळ हेतु छे, तेना भेद सत्तावन थाय छे. मिथ्यात्वना पांच भेद अविरतिना बार भेद छे, कषायना पचीश भेद छे, योगना पंदर भेद छे, एवी रीते बधा मळीने सत्तावन थाय छे. आ कर्मना बंधमां वादीओ जुदा जुदा [illegible] करे छे, ते बधा मिथ्या छे. मिथ्या कल्पना करी विकल्प कहेवाय छे. एवा विकल्पवादीओ एवी उचरे छे के, प्रथम जीव निर्मळ हतो; पछी [illegible] कर्मथी रहित हतो. पछी तेने पुण्य पापनो थयो छे. आ तेनो मत तद्दन मिथ्या छे. कारण निर्मळ जीव कर्मनो बंध करी शकतो नथी. [illegible] विना ते संसारमां जन्म ग्रहण थई शकतो नथी. निर्मळ जीवने कर्मनो बंध थाय, तो पछी मोक्षना जी[वने] पण कर्मनो बंध थाय, तो मोक्षनो अभाव थाय, [illegible] ए विकल्प तद्दन मिथ्या छे.

[illegible]

साथे उत्पन्न थयां छे. आ वात पण संभवती नथी; जे वस्तु साथे उत्पन्न थाय, ते परस्पर कार्य अने कारण थइ शके नहीं, अने तेमां एवो विरोध आवशे के, जो कर्म जीवनां करेलां सिद्ध न थया, तो जीव कर्मनुं फळ पण भोगवशे नहीं.

चोथा विकल्पमां कहे छे के, जीव तो छे, पण जीवने कर्म नथी; आ वात पण मिथ्या छे. जो जीवने कर्म न होय, तो जीव सुख दुःख केवी रीते भोगवी शके ?

पांचमा विकल्पमां "जीव अने कर्म बंने नथी," एम कहे छे. आ विकल्प तो तद्दन असत्य छे; कारण के, "जीव अने कर्म बंने नथी," एम कहेनारो कोण छे ? ते जीव छे के बीजो छे ?

छट्ठा विकल्पमां जीव अने कर्म (माया) बंने स्वतः अनादि छे, एम कहे छे. आ कहेवामां पण विरोध आवे छे; कारण के जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइए, अने जैनमां जीव तथा कर्मनो प्रवाहथी अनादी संबंध छे, पण जुनां कर्म नाश थतां जाय छे, अने नवां कर्म बंधातां जाय छे, माटे पुद्गल द्रव्यरुपे कर्म नित्य छे, अने पर्यायथी अनित्य छे; ज्यारे जीव अने कर्मनो संबंध तद्दन नाश पामे छे, त्यारे जीव मोक्ष पामे छे. आ प्रमाणे छ विकल्प समजवाथी बंध

પાઠ ૭૧ મો.

[बंधना उत्तर हेतुना सत्तावन भेद.]

मिथ्यात्व.

जे धर्मथी विरुद्ध होय, तेने सत्य मानवुं, ते मिथ्यात्त्व कहेवाय छे, ते मिथ्यात्वना पांच प्रकार छे. १ आभिग्रहीक मिथ्यात्व, २ अनभिग्रहीक मिथ्यात्व, ३ अभिनिवेश मिथ्यात्व, ४ संशय मिथ्यात्व, अने ५ अनाभोग मिथ्यात्व—एवां नाम छे.

जे जीव एम जाणे के, " जे कांइ हुं समज्यो छुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी " आवुं धारीने सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी जे इच्छा थाय नहीं, समज ते सत्य असत्यनो निर्णय पण करे नहीं, जे मत पोते ग्रहण करेलो तेज सत्य छे, एम मानी लीधी वात न मुके, ते पहेलुं आभिग्रहीक मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव एम माने के, सर्व मतो सारा छे, सर्व मतोनी अंदर मोक्ष मळे छे. कोइ पण मतने नठारो कहेवो न जोइए, बधा धर्मोने नमस्कार करवो, आ बीजुं अनभिग्रह मिथ्यात्व छे.

जे जीव जाणीने जुठुं बोले, कादि अजाणथी कांइ भुल पडी गइ होय, अने तेने जो कोइ विद्वान् बतावे, तोपण

ते ते वातनो कदाग्रह राखे, अभिमानथी पकडेली वातने छोडे नहीं, अने पोताना कपोळ कल्पित मतने नवा युक्तिओथी सिद्ध करवा मयन करे, तेमज वादमां हा[illegible] जाय, तोपन पोतानो मत छोडे नहीं, ते बीजुं अभिनि[illegible] वेश मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव श्री जिन भगवंते कहेला त[illegible] शंका करे, जिन वचनी गहन वात पोताना समजवामां न आवे, तेथी तेनी वारंवार शंका कर्या करे, ते त्रीजुं संशय मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीवने धर्म के अधर्म शी वस्तु छे? एवो [illegible] पयोग न होय, ते चोथुं अनाभोग मिथ्यात्व क[illegible] हेवाय छे.



सारांश प्रश्न.

[illegible]

ते केवुं मिथ्यात्व कहेवाय ? ७ अनाभोग मिथ्यात्वनुं लक्षण कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निर्णय, कदाग्रह, कपोलकल्पित, युक्ति, मथन, गहन, उपयोग.

पाठ ७२ मो.

(बंध हेतुना सत्तावन भेद.)

अविरति अने कषाय.

जे हिंसा थाय तेवा काममांथी विराम न पामवुं, ते अविरति कहेवाय छे. ते अविरतिना बार भेद थाय छे. पांच इंद्रिय, छठुं मन, अने छकाय मळी बार भेद थाय छे. पांच इंद्रियोने पोतपोताना विषयमां प्रवर्त्तावबी, कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध करवो नहीं, अने छ जीव निकायनी हिंसामां प्रवृत्ति करवी, ते बधी मळीने बार प्रकारनी अविरति थाय छे.

क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए कषाय कहेवाय छे. ते कषायना पच्चीश भेद थाय छे. अनंतानु-

वंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, अने लोभ. प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, अने लोभ अने संज्वलन. क्रोध, मान, माया, अने लोभ—ए सोळ, तथा १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा; ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, अने ९ नपुंसक वेद—ए नव नोकषाय—ए पचवीश कषायना भेद कहेवाय छे, तेओ सर्वे संसारनी स्थितिनां हेतु कारण छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अविरति एटले शुं ? २ अविरतिना केटला भेद छे ? ३ अविरतिना बार भेद गणावो. ४ कषाय कोने कहे? ५ कषायना केटला भेद थाय छे ? ६ कषायना पचवीश भेद गणावो.

[illegible]

[illegible]

पाठ ७३ मो.

(बंध हेतुना सत्तावन भेद.)

योग—भाग १ लो.

मन, वचन, अने काया—ए योगना त्रण प्रकार छे, ते योग बंधना हेतुमां गणाय छे. ते त्रण प्रकारना योगना उत्तर भेद पंदर थाय छे. मनोयोगना चार भेद, वचनयोगना चार भेद, अने काययोगना सात भेद, एवी रीते सर्व मळीने पंदर भेद थाय छे.

सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, अने व्यवहार-मनोयोग—ए चार मनोयोगनां नाम छे. मननुं बीजुं नाम अंतःकरण छे. तेमना द्रव्यमन अने भावमन एवा बे भेद छे. मनोवर्गणानां पुद्गल ग्रहण करी ते पुद्गलोने चिंतन धर्मरुपे मनपणे परिणमावे ते द्रव्य मन कहेवाय छे, अने कर्मना क्षय उपशमथी जे मति ज्ञान उत्पन्न थाय, तेनुं नाम भावमन कहेवाय छे. तेवा ज्ञानथी आ बधो व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने व्यवहारथी तेम सत्य विगेरेनो व्यपदेश प्राप्त करे छे. वळी उपचारथी द्रव्य मन ज्ञाता थाय छे. इंद्रियना आवरण कर्मना क्षयोपशमथी जे मनोज्ञान उत्पन्न थाय, तेवडे परिणाम पामेला आत्माने असर करवावाळी मनोवर्गणाना

जेमके " [1]हरिचंद्र अहीं आवे " दामोदर आ वस्तु आप, आम चिंतववाथी जिन वचन विरोधाय नहीं, तेथी असत्य पण नहीं, अने आराधक पण नहीं, तेथी सत्य पण नहीं, माटे आ चिंतववुं, ते व्यवहार मनोयोग कहेवाय छे, अने तेज प्रमाणे बोलवुं, ते व्यवहार वचनयोग कहेवाय छे; एवी रीते मनोयोग तथा वचनयोगना आठ भेद थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योगना केटला प्रकार छे ? २ योगना उत्तर भेद केटला थाय छे ? ते बधा गणावो. ३ मनोयोगना चार भेदनां नाम आपो. ४ मननुं बीजुं नाम शुं ? ५ मनना केटला प्रकार छे ? ६ द्रव्यमन अने भावमननां लक्षण कहो. ७ मन ए शी वस्तु छे ? ते समजावो. ८ वचनयोग एटले शुं ? ९ मनोयोग अने वचनयोगना केटला प्रकार छे ? १० सत्य मनोयोग अने असत्य मनोयोग एटले शुं ? ते दृष्टांत साथे समजावो. ११ सत्य वचनयोग अने असत्य वचनयोग विषे समजावो. १२ मिश्र मनोयोग एटले शुं ? ते दाखला साथे समजावो. १३ मिश्र मनोयोग अने मिश्र वचनयोगमां शो तफावत छे ? १४ व्यवहार मनोयोगनो दाखलो आपो.

---

१ हरिचंद्र चन्दना अर्थनी जरूर नथी.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

अक्षर भेद, चिंतन धर्म, व्यपदेश, ज्ञाता, आस्वाद करे, मनोवर्गणा, वीर्य, परमाणुओ, सामर्थ्य, द्रव्यार्थे नित्य, पर्यायार्थे अनित्य, अनेकांतरूपे, तिरोभाव, आविर्भाव.

पाठ ७८ मो.

योग भाग २ जो.

आत्माने निराग करता जे पुद्गल द्रव्यथी [illegible]

[illegible]

पहेला बे औदारिक काययोग अने औदारिक मिश्र काययोग मनुष्य अने तिर्यंचमां होय छे. त्रीजो वैक्रिय काययोग, अने चोथो वैक्रिय मिश्र काययोग, ते स्वर्गवासी देवताओमां होय छे, पांचमो आहारक काययोग, अने छठ्ठो आहारक मिश्र काययोग ते चौद पूर्वधारी साधुओमां होय छे, सातमो कार्मण काययोग. जीव ज्यारे मृत्यु पामी बीजा भवमां जाय छे, त्यारे ते रस्तामां तेनी साथे रहे छे, तेमज ते समुद्घात अवस्थामां केवलीने होय छे.

कदि अहीं कोइ शंका करे के, ज्यारे कार्मण काययोगने गणवामां आव्यो, तो पछी तैजस शरीरने लइने आठमो तैजस काययोग केम न थाय ? तेना जवाबमां कहेवानुं के, ते तैजस शरीर आहारनुं पाचन करवामां समर्थ छे, तेथी तेनो कार्मण शरीरमां समावेश थइ जाय छे, माटे तेने जुदा काययोगमां गण्युं नथी.

आ प्रमाणे काययोगना सात भेद थाय छे, जे प्रथमना भेदनी साथे मेळवतां बधा मळीने योगना पंदर भेद थया. मिथ्यात्वना पांच, अविरतिना बार, कषायना पचीश, अने योग पंदर—एम एकंदर बंधना हेतुना सत्तावन उत्तर भेद थाय छे.

पाठ ७५ मो.

बंध तत्त्व विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भवे जंतुओ जे थकी कर्म बांधे,
कहे बंधनुं तत्त्व ते कर्म साधे;
जुवो जेम पाणी मळे दूध साथे,
मळे कर्मना पुद्गलो तेम[१] साथे. १

रहे जेम केदी पराधीन छाप,
रहे जीव ते कर्म आधीन आप;
गण्या मूळ ते बंधना हेतु चार,
बीजा उत्तरे[२] ते सतावंन सार. २

गणे आदि[३] मिथ्यात्वना भेद पांच,
सदा ते थकी जीवने थाय आंच;[४]
वळी अविरतिना बधा भेद बार,
बंधे जे थकी जीवने कर्म भार. ३

कषायोतणा भेद पूरा पचीश,
पडे भार संसारनो तेथी शीष;[५]

---

१ आत्मा साथे. २ बीजा बंधना उत्तर हेतु सतावन छे. ३ प्रथम.
४ दुःख. ५ माथे.

गन्या दश१ अने पांच जे योग भेद,
न थाये कदि ते थकी कर्म छेद. ४

धरे स्नेह ते जेथकी जीवराशि,२
पडे ते थकी जीवने फंद फांसी;
रहो दूर मां ते थकी भव्य प्राणी,
सदा अंतरे धर्मनी वात आणी. ५

लिपुके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

नमुना. छाव. उपंर. आदि. नीर, धीर, नीर गीत. नद

पाठ ७८ मो.

मोरा तत्त्व—भाग ...

[illegible]

तेनी जे प्ररुपणा, ते पण मोक्षनी प्ररुपणा छे. कारण के जे मोक्ष छे, ते जीव पर्याय सिद्ध थयेला जीवथी जुदो नथी. जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शकता नथी.

ते सिद्धोनुं स्वरुप नव प्रकारे कहेलुं छे, तेथी ते मोक्ष तत्त्वना नव नव भेद गणाय छे, ते भेदनी प्ररुपणा नव द्वारथी थाय छे. १ सत्पद प्ररुपणाद्वार, २ द्रव्य प्रमाणद्वार, ३ क्षेत्रद्वार, ४ स्पर्शनाद्वार, ५ कालद्वार, ६ अंतद्वार, ७ भागद्वार, ८ भावद्वार, अने ९ अल्प बहुत्वद्वार, आवां तेनां नाम छे.

मोक्षने विषे छतां पदनी जे प्ररुपणा, ते सत्पद प्ररुपणा नामे पहेलुं द्वार छे. आ द्वारमां छतां पदनी प्ररुपणा एवी रीते छे के, मोक्ष ए पद सत्पद छे, एटले छतुं पद छे; कारण के ते एक पद छे. आ जगतमां जेटला एक पदवाची पदार्थो छे, ते बधा छतां छे, अने जे पदार्थ बे पदवाची एटले बे पदवाळा छे, ते छतां छे, अने अछतां पण छे. जेम घट—[घडो] पट [वस्त्र], ए एक पदवाळां पद छतां छे, अने वंध्या पुत्र [वांझणीनो पुत्र] अश्वशृंग (घोडानुं शींगडुं) आ बधां बे पदनां नाम छे, ते अछतां छे, अने राजपुत्र (राजानो पुत्र) केतकी पुष्प (केतकीनुं फुल) आ बे पदवाळा पदार्थ छतां पण छे, तेथी बे पदवाळा पदार्थ

छतां पण छे, अने अछतां पण छे. आ न्यायथी मोक्षपद पदवाळुं छे, तेथी ते छतुं पद छे.

ते मोक्षपद अथवा सिद्ध पदने गति विगेरे चौद मार्गणानी साथे जोडी देवुं. जेमके गति चार प्रकारनी छे. १ नरक गति, २ तिर्यग् गति, ३ मनुष्य गति, ४ देव गति. तेमां मनुष्य गति शिवायनी बाकीनी त्रण गतिओमांथी सिद्ध नथी थता. इंद्रियो पांच छे. १ एकेंद्रिय, २ द्वींद्रिय, ३ त्रींद्रिय, ४ चतुरिंद्रिय, अने ५ पंचेंद्रिय. आ पंचेंद्रियमांथी सिद्ध थाय छे. बाकीनी चार इंद्रियवाळा मोक्षे नथी जता.

छ काय छे. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, अने ६ त्रसकाय. आ छ कायमांथी त्रसकायमांथी मोक्षे जवाय छे. बाकीनी पांच कायमांथी नथी जवातुं. योग त्रण प्रकार छे. १ मनोयोग, २ वचनयोग, अने ३ काययोग. तेमां [illegible] [illegible] छे, अने [illegible]

क्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चारे कषाय पण सिद्धमां होता नथी; कारण के, ज्यारे चारे कषायनो नाश थाय, त्यारेज सिद्धावस्था मेळवाय छे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवळज्ञान—आ पांच प्रकारे ज्ञान छे, अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंग ज्ञान-आ त्रण प्रकारे अज्ञान छे. तेमां प्रथमना मति, श्रुत, अवधि अने मनःपर्यव—ए चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं होतुं नथी. एकला केवळज्ञानमांज सिद्धपणुं पमाय छे.

१ सामायिक, २ छेदोपस्थापनीय, ३ परिहार विशुद्धि, ४ सूक्ष्मसंपराय, अने ५ यथाख्यात—आ पांच प्रकारनां चारित्र तथा तेनां प्रतिपक्षी देशसंयम तथा असंयम—ए बधामांथी यथाख्यात चारित्रमांथी मोक्षे जवाय छे. बाकी चारमांथी जवातुं नथी.

१ चक्षु, २ अचक्षु, ३ अवधि अने ४ केवळ—आ चार दर्शनोमां पहेलां त्रण दर्शनोमांथी सिद्ध थवातुं नथी, एक केवळ दर्शनमांज सिद्धपणुं पमाय छे. १ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ तेज, ५ पद्म, अने ६ शुक्ल—आ छ लेश्याओमांथी सिद्धपणुं पमातुं नथी. अलेशी भावे सिद्धपणुं पमाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मोक्षतत्त्व एटले शुं ? २ मोक्ष कोने कहेवाय ? ३ मोक्ष ए कोनो धर्म छे ? ४ धर्म अने धर्मी कोण ? ते समजावो. ५ मोक्ष कोनो पर्याय छे ? ६ मोक्षमार्गना केटला भेद छे ? ७ ते नव भेद अथवा नव द्वारनां नाम गणावो. ८ पहेला सत्पद प्ररूपणा नामना द्वारनो अर्थ समजावो. ९ सत्पद एटले शुं ? १० केवा पदार्थो छता कहेवाय छे ? ११ छता अने अछता पदार्थो केम होय ? १२ एक पदवाळा अने बे पदवाळा पदार्थोनां नाम आपो. १३ रामपुत्र अने गधेडानां शृंग, ए केवां पद कहेवाय ? १४ चार गतिओमांथी सिद्ध कई गतिमांथी थाय ? १५ पांच इंद्रियोमांथी सिद्ध कई इंद्रियमां थाय ? १६ छ कायमांथी सिद्ध कई कायमां होय ? ते समजावो. १७ [illegible] सिद्ध थाय के नहीं ? १८ [illegible]

दर्शनमांथी सिद्धपणुं पमाय ? २६ छ लेश्याओमांथी
सिद्धपणुं पमाय के नहीं ? न पमाय तेनुं शुं कारण छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

धर्म, धर्मी, प्ररुपणा, पर्याय, सत्पद, एक पदवाची
ायधी, अवेदी, अकषायी, देशसंयम, असंयम.

पाठ ७७ मो.

मोक्षतत्व भाग २ जो.

प्राणीनी भव्य अने अभव्य, आवी बे प्रकारनी
ा छे. बंने अवस्थामांथी भव्यमां मोक्ष छे, अभव्यमां
१ क्षायिक, २ क्षयोपशम, ३ उपशम, ४ सास्वादन
वेदक—आ पांच सम्यक्त्वना प्रकार छे. तेओना
मिथ्यात्व अने मिश्र छे. तेओमांथी क्षायिक
शिवाय बीजां चार सम्यक्त्वोमांथी सिद्धपणुं न
तेमज जे मिथ्यात्व अने मिश्र छे, तेमांथी पण
होतुं नथी. कारण के, क्षायिक शिवायना बीजां
क्षयोपशम विगेरे भावमां वर्तनारां छे, अने
सम्यक्त्व तेवुं नथी, माटे तेमां सिध्धपणुं पमाय छे,

ते क्षायिक सम्यक्त्व पण शुद्ध अने अशुद्ध एम बे प्रकारनुं छे, तेमां जे शुद्ध क्षायिक छे, ते अपाय, अने सद् द्रव्य रहित, एवा भवस्थ केवलीओने होय छे, अने सिद्ध परमात्माने होय छे. सादि [आदि सहित] अने सपर्यवसान (अंत सहित) छे; जे अशुद्ध क्षायिक छे, ते अपाय सहचारी एवा श्रेणिक विगेरेनुं समजवुं. ते सादि तथा सपर्यवसित छे, आथी अशुद्ध क्षायिकवाळाने सिद्धपणुं थतुं नथी. कारण के, तेने अपाय सहचारी छे, अने शुद्ध क्षायिकवाळाने सिद्धपणुं थाय छे; कारण के, तेमने क्षायिक सम्यक्त्व विद्यमान छे. अहीं विशेष समजवानुं एटलुं छे के, अपायनो अर्थ मतिज्ञाननो अंश थाय छे. अने सद् द्रव्यनो अर्थ शुद्ध सम्यक्त्वनां दळीआं थाय छे ज्यारे ते अपाय अने सद् द्रव्य, तेनो अभाव थाय छे त्यारे शुद्ध क्षायिक सम्यक्त्व थाय छे.

वेदकना पण बे भेद छे. [illegible]

संज्ञीमांथी मोक्षे जवाय छे, असंज्ञीमांथी जवातुं नथी. आहार त्रण प्रकारना छे. १ ओज आहार, २ लोम आहार, अने ३ प्रक्षेप आहार-एवां तेमनां नाम छे. आ त्रणे प्रकारना आहारमांथी सिद्धपणुं पमातुं नथी, अणाहारीपणामां पमाय छे.

आ प्रमाणे सत्पद प्ररूपणा नामे पहेलुं द्वार विस्तारथी जणाव्युं, हवे बीजां द्वार संक्षेपथी कहेवामां आवे छे.

सिद्धना जीव गणत्रीमां अनंत छे, एम सिद्धना जीव द्रव्य विषे विचारवुं, ते द्रव्य प्रमाण नामे बीजुं द्वार छे. आकाशना एक देशमां सर्व सिद्धोनुं स्थान छे, ते आकाश देशनुं प्रमाण शुं छे ? धर्मास्तिकाय विगेरे पांच द्रव्य ज्यां सुधी छे, त्यां सुधी लोक छे, एवा लोक आकाशना असंख्यातमा भागमां सिद्ध रहे छे. आ प्रमाणे सिद्धना अवगाहना क्षेत्र विषे विचारवुं, ते त्रीजुं क्षेत्रद्वार छे. जेटला आकाशना भागमां सिद्ध रहे छे, तेनाथी स्पर्शनानो भाग कांइक अधिक छे, एटले केटला आकाश प्रदेशने सिद्धना जीव फरशे एम विचारवुं, ते चोथुं स्पर्शनाद्वार छे. एक सिद्धने आश्रीने सादि अनंतकाळ अने सर्व सिद्धने आश्रीने अनादि अनंतकाळ एटले सिध्धनो काळ आदि अनंत छे, एम कहेवुं, ते पांचमुं काळद्वार छे. सिध्धोनी वच्चे अंतर नथी, सर्व सिध्धो मांहोमांहे मळीने रहेल छे, तेमज फ-

रोथी संसारनां आवर्त्तपणुं नथी, तेथी पण भरभोरनों एम कहेवु, ते छठुं अंतर्द्वार छे. सर्व सिद्ध सर्व जीव राशिने अनंतमे भागे छे एम कहेवुं, अथवा सिद्ध जीव संसारी जीवना केटलामे भागे छे एम विचारवुं. ते सातमुं भागद्वार छे. क्षायिक विगेरे पांच भावमांथी सिद्धना जीव कया भावे छे एम विचारवुं, अथवा सिद्धोने क्षायिक पारिणामिक भाव छे, बाकीना भाव नथी एम कहेवुं, ते आठमुं भावद्वार छे. नपुंसक लिंग सिद्ध थोडा छे, तेथी स्त्री असंख्यातगुणी अने तेथी पुरुष संख्याता गुणा सिद्ध थया छे, आम विचारवुं, ते नवमुं अल्प बहुत्वद्वार छे.

आ नवाने मोक्ष तत्त्वना नव द्वार [illegible] कहेवाय छे, [illegible]

— —

[illegible]

[illegible]

होय, तेनुं शुं कारण ? ७ क्षायिक सम्यक्त्वना केटला भेद छे ? ८ शुध्ध अने अशुध्ध क्षायिक विषे समजावो. ९ भवस्थ केवलीओने केवुं क्षायिक होय छे ? १० श्रेणिक विगेरेने केवुं क्षायिक हतुं ? ११ सादि अने सपर्यवसान एटले शुं ? १२ अशुध्ध क्षायिकमां सिध्धपणुं केम न होय ? ते समजावो. १३ अपाय अने सत् द्रव्यनो अर्थ शुं ? १४ शुध्ध क्षायिक सम्यक्त्व क्यारे थाय छे ? १५ संज्ञाना केटला प्रकार छे ? १६ कइ संज्ञाथी संज्ञी कहेवाय ? १७ व्यवहारमां केवा संज्ञीनुं ग्रहण कराय छे ? १८ केवो जीव संज्ञी कहेवाय छे, अने केवो जीव असंज्ञी कहेवाय छे ? १९ आहार केटला प्रकारना छे ? तेनां नाम आपो. २० त्रणे प्रकारना आहारमांथी सिध्धपणुं होय छे के नहि ? २१ द्रव्य प्रमाणद्वारमां शेनुं चिंतवन थाय छे ? २२ सिध्धना जीव केटला आकाश प्रदेशने फरशे, एवो विचार क्या द्वारमां छे ? २३ क्षेत्रद्वारमां शुं विचारवानुं छे ? २४ सिध्धोनी वच्चे अंतर नथी, ए विचार क्या द्वारमां छे ? २५ कालद्वारमां शेनो विचार छे ? २६ क्षायिक विगेरे पांच भावमांथी सिध्धना जीव क्या भावे छे ? ए विचार क्या द्वारमां आवे छे ? २७ भागद्वारमां शुं आवे ? ते समजावो. २८ अंतरद्वारमां शेनो विचार करवानो छे ? ते कहो. २९ अल्पबहुत्वद्वार विषे सारी रीते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

अतीतकाल, प्रतिपक्षी, मिश्र, क्षयोपशम विगेरे भाव. अराग, सत् द्रव्य रहित, भवस्थ केवली, शुद्ध स्वभा-वर, सम्यग्दृष्टि, सादि, सपर्यवसान, अराग महत्वा-मतिज्ञाननो भेद, शुद्ध सम्यक्त्व, हेतुवादोपदेशिकी, दृष्टि-वादोपदेशिकी, दीर्घकालिकी, त्रिकाल विषयरूपे, मनोवि-ज्ञान, ओज आहार, लोम आहार, प्रक्षेप आहार, मनो-राशि, भाषाना भेद, करांशे, अंतर, भाव, क्षायिकपारि-णामिक भाव.

पाठ ७८ मो.

सिद्धना पंदर भेद

[illegible]

तीर्थंकर पदवी पामीने जे मोक्षे गयेला, ते जिनसिद्धा नामे पहेलो भेद छे. सामान्य केवळी थइने जे मोक्षे गया, ते अजिनसिद्धा नामे बीजो भेद छे. तीर्थंकरने केवळज्ञान उपज्या पछी जे मोक्षे गया, ते तीर्थसिद्धा नामे त्रीजो भेद छे. तीर्थंकरने केवळज्ञान उपज्या पहेलां जे मोक्षे गया, ते अतीर्थसिध्धा नामे चोथो भेद छे. गृहस्थना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते गृहस्थलिंग सिध्धा नामे पांचमो भेद छे. योगी, संन्यासी अने तापस वगेरेना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते अन्यलिंग सिध्धा नामे छट्ठो भेद छे. साधुना वेषे जे मोक्षे गया, ते स्वलिंग सिध्धा नामे सातमो भेद छे. स्त्रीवेद पामीने जे मोक्षे गया, ते स्त्रीलिंग सिध्धा नामे आठमो भेद छे. पुरुषवेद पामीने जे मोक्षे यया, ते पुरुषलिंग सिध्धा नामे नवमो भेद छ. नपुंसकवेद पामीने जे मोक्षे गया, ते [1]नपुंसकलिंग सिध्धा नामे दशमो भेद छे. कोइ पदार्थने देखीने प्रतिबोध पामी जे मोक्षे गया, ते प्रत्येक बुध्ध सिध्धा नामे अगीयारमो भेद छे.

गुरुना उपदेश विना पोतानी मेळे जातिस्मरण विगेरेथी प्रतिबोध पामी जे मोक्षे गया, ते स्वयंबुध्ध सिध्धा नामे बारमो भेद छे. गुरुनो उपदेश सांभळी वैराग्य पामी मोक्षे गया, ते बुध्धबोधित सिध्धा नामे तेरमो भेद

---

१ पाछळथी थयेल, जन्मथी नहीं.

छे. एक समयने विषे एकज मोक्षे गया, ते एकसिद्धा नामे चौदमो भेद छे. एक समयमां घणा जीवो मोक्षे गया, ते अनेकसिद्धा नामे पंदरमो भेद छे.

आ प्रमाणे सिद्धना पंदर भेद थाय छे. ते सिद्धना पंदर भेद मोक्षतत्त्वनी अंदर रहेला छे. आ पंदर भेद जाणवाथी मोक्षतत्त्व समजवामां वधारे सरलता पडे छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सिद्ध कोने कहेवाय ? २ सिद्धना केटला भेद छे ? ३ तेनां नाम जणावो. [illegible]

ा सिध्ध कोने कहेवाय ? १५ एक समयने विषे
ज मोक्षे गया होय, ते केवा सिध्धा कहेवाय ? १६
वोधित सिद्धा कोने कहेवाय ? १७ अनेक सिध्धा
ग ? ते कहो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामान्य केवळी, योगी, संन्यासी, तापस, जाति
रण.

ખંડ ૪ થો.

પાઠ ૭૯ મો.

અજિતનાથ ભાગ ૧ લો.

ચોવીશ તીર્થંકરોમાં બીજા તીર્થંકર અજિતનાથ [illegible]

चीजुं नाम अयोध्या छे, तेमां अजितनाथनो जन्म थयो हतो. तेमना पितानुं नाम जितशत्रु, अने मातानुं नाम विजयादेवी हतुं. जितशत्रु राजाने सुमित्र नामे एक भाइ हतो, तेने युवराज पद आपवामां आव्युं हतुं. ज्यारे अजितनाथ विजयादेवी माताना गर्भमां आव्या, त्यारे तेमनी माताए चौद स्वप्नां जोयां हतां. तेमनो जन्म माघ सुदी आठमने दिवसे थयो हतो. तेमना सूतिकागृह अने जन्म वखतनी बधी जातनी क्रियाओ ऋषभदेव भगवंतनी पेठे करवामां आवी हती. आज समये जितशत्रु राजाना भाइ सुमित्रनी वैजयंती नामनी स्त्रीथी एक पुत्रनो जन्म थयो हतो, तेनुं नाम सगर पाडवामां आव्युं हतुं. ते बंने कुमारो साथेज उछर्या हता, अने योग्य वये अभ्यासमां पण साथेज जोडाया हता. ज्यारे अजितनाथ जुवान थया, त्यारे तेमनो विवाह सैकडो राजकन्याओनी साथे थयो हतो. पोताना पिता जितशत्रु राजाना आग्रहथी प्रभुए ते विवाह स्वीकार्यो हतो. प्रभुनो विवाह कर्या पछी राजा जितशत्रुए तेमनी पासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मागी हती. अजितनाथे पिताने दीक्षा लेवाने खुशी साथे रजा आपी, एटले राजा जितशत्रुए मोटा उत्सवथी अजित स्वामीनो राज्याभिषेक कर्यो हतो.

अजितस्वामी राजा थया पछी तेमणे पोताना पितानो मोटा आडंबरथी दीक्षा महोत्सव कर्यो हतो. राजा जितशत्रुने राज्यनी जेम अखंड व्रतनुं पालन करतां अनु-

कवे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं, अने छेवटे शैलेशीकरण करी, आठ कर्मनो क्षय करी, परमपद संपादन कर्युं हतुं.

जिनाना मोक्ष पछी अजितस्वामी जितनी नगरीना स्वतंत्र महाराजा थया हता. तेमणे पोतानी प्रजाने पुत्रवत् पाळी हती, दंड विगेरे शिक्षाओ कर्या विना पण मात्र मार्गदर्शक पोतानी जेम तेमणे सर्व प्रजाने चालें दोरी हती, [illegible] पोतानी प्रजाने दंड नीति चलावी न हती, एटलुंज नहीं, पण [illegible] कोई पण करी न हती, [illegible] पुरुषने जेम [illegible] हती. [illegible] आप पुं [illegible] दता हता.

[illegible] सुर्थि [illegible]

करी, आत्म स्वरुपमां रहेवुं, के जेथी आ संसार समुद्रनो पार आवे.

आ प्रमाणे ज्यारे अजितस्वामी वैराग्य पाम्या, त्यारे सारस्वत विगेरे लोकांतिक देवताओए आवी जणाव्युं के, भगवन् ! आप स्वयंबुद्ध छो, तेथी अमे आपने बोध आपवाने लायक नथी, तथापि एटलुं मात्र याद आपीए छीए के, " आप धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो. " देवताओनां आवां वचनथी तरतज प्रभुनो वैराग्य वृद्धि पाम्यो, अने तेमणे सगर कुमारने बोलावी, आ प्रमाणे कह्युं—

" प्रिय भाइ सगर ! मारी इच्छा आ संसाररुप समुद्रने तरवानी थइ छे, हवे तमे आ राज्यने चलावो. " प्रभुनां आवां वचनथी सगर कुमारना नेत्रमां आंसु आवी गयां, अने तेमणे रोतां रोतां कह्युं, पूज्य बंधु ! आ शुं बोलो छो ? में आपनो शो अपराध कर्यो छे, के जेथी मने जुदो पाडवानी आवी आज्ञा करो छो ? कदि में अपराध के अभक्ति करी होय, तो ते आपनी अप्रसन्नताने माटे न थवी जोइए; कारण के, पूज्य पुरुषो पोताना अभक्त के अपराधी शिशुने शिक्षा आपे छे, पण तेने छोडी देता नथी. स्वामी ! हुं तमारा चरणनी सेवा छोडीश नहीं. ज्यारे तमे राजा थया हवा, त्यारे हुं युवराज थयो हतो, तेम तमे व्रतधारी थशो, तो हुं तमारो शिष्य थइश. सगर कुमारनां आवां वचन सांभळी प्रभुए

તેને ઘણી રીતે સમજાવ્યો, અને છેવટે તેને પ્રભુની આજ્ઞા અંગીકાર કરવી પડી હતી.

શુભ દિવસે અજિતનાથે સગરનો રાજ્ય ઉપર અભિષેક કર્યો, અને પછી વાર્ષિક દાન આપવાનો આરંભ કર્યો હતો. પ્રભુ દરરોજ એક કરોડ ને આઠ લાખ સોનૈયા આપતા હતા. એકંદર એક વર્ષમાં તેમણે અઠ્યાસી [illegible] ક્રોડ ને એંશી લાખ સોનૈયા આપ્યા હતા. વાર્ષિક દાનને અંતે ઇંદ્રનું આસન કંપાયમાન થતાં ઇંદ્ર પોતે સામાનિક [illegible] દેવતાઓની સાથે પ્રભુની પાસે આવ્યો. [illegible] અને [illegible] શિબિકા નગરીની બહાર આવ્યા. પ્રભુએ [illegible] પ્રભુએ દીક્ષા અંગીકાર કરી. તેના [illegible]

[illegible]

पछी भक्तिथी सुशोभित एवो सगर राजा प्रभुनी भक्तिपूर्वक स्तुति तथा नमस्कार करी नेत्रमां आंसु पाडतो हळवे हळवे पोतानी राजधानीमां पाछो आव्यो हतो. अजित भगवाने दीक्षा लीधा पछी बीजे दिवसे ब्रह्मदत्त राजाने घेरे क्षीरवडे छठ तपनुं पारणुं कर्युं हतुं. प्रभुना पारणाना प्रभावथी ब्रह्मदत्त राजानां आंगणामां देवताओए साडावार क्रोड सोनैयानी, उंची जातनां वस्त्रोनी, सुगंधी जळनी अने पंचरंगी पुष्पोनी वृष्टि करी हती, तथा दुंदुभिना नाद साथे " अहोदान, अहोदान " एम उच्चार करतां जयनाद कर्यो हतो. प्रभु ज्यारे ब्रह्मदत्त राजाना घरमांथी पारणुं करी बाहेर नीकळ्या एटले तेमनां पगलां उपर ब्रह्मदत्ते एक रत्ननी पीठ करावी हती. वायुनी जेम स्वतंत्र विहारी भगवान् अजितस्वामी निर्ग्रंथ, निर्मम अने निस्पृह थइ पोताना संसर्गथी ग्राम अने शहेरोने तीर्थरुप करता सर्व पृथ्वीमां विचर्या हता. ए महानुभावे उग्र तप कर्युं हतुं, विविध प्रकारना उग्र तपथी अने विविध प्रकारना अभिग्रहोथी परीषहने सहन करतां प्रभुए बार वर्ष निर्गमन कर्यां हतां.

दरेक गाम, दरेक शहेर अने दरेक अरण्यमां फरतां फरतां प्रभु सहस्राम्रवनमां आव्या, अने त्यां सप्तच्छद वृक्ष नीचे कायोत्सर्गे रह्या हता. त्यां प्रभुनो ध्यानरुप अग्नि दीप्यमान थवाथी अग्निवडे जेम बरफनो लय थइ जाय, तेम तेमनां घातिकर्मो सर्वथा लय पामी गयां, अने

प्रभुने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं. ते समये पोष मासनी शुक्ल एकादशीनो दिवस हतो, चंद्रनी साथे रोहिणी नक्षत्रनो योग थयो हतो.

प्रभुने केवळज्ञान थवाथी सौधर्मपति इंद्रनुं आसन कंपायमान थयुं, एटले अवधि ज्ञानथी ते वात जाणी, ते इंद्र तथा बीजा इंद्रो देवताओनी साथे प्रभु केवळज्ञाननो उत्सव करवाने आव्या हता, अने त्यां प्रभुने माटे देवे समवसरण रच्युं हतुं. अजित प्रभु "तीर्थाय नमः" एम कही समवसरणनी मध्ये आवेला सिंहासन उपर बेठा हता, अने पछी इंद्रे प्रभुनी स्तुति करी हती.

आ वृत्तांत उद्यानपालक द्वारा जाणीने [illegible] प्रभुने वांदवा आव्या, अने तेमणे [illegible] [illegible]

सारांश प्रश्नो.

१ अजितनाथ भगवान् केटलामा तीर्थंकर छे ?
अजितनाथ कया वंशमां थया हता ? ३ तेमने केटला
करवा पडया हता ? तेमणे करेला भवनां नाम शुं ?
विमळवाहन कया क्षेत्रमां, कया विजयमां अने कइ
रीमां थया हता ? ६ विमळवाहने कोना बोधथी
यने छोडी दीधुं हतुं ? ७ तेणे तीर्थंकर नामकर्म केवी
बांध्युं हतुं ? ८ विमळवाहन कया विमानमां देवता
हतो ? ९ अजितनाथनो जन्म कइ नगरीमां थयो
? १० तेमना पितानुं अने मातानुं शुं नाम हतुं ?
अजितनाथना पिताना भाइनुं शुं नाम हतुं ?
अजितनाथ प्रभुनो जन्म कया मासमां, कया पक्षमां,
तिथिए थयो हतो ? १३ अजितनाथना काका सुमि-
स्त्रीनुं शुं नाम हतुं ? १४ सुमित्रना पुत्रनुं शुं नाम ?
अजितकुमारनो विवाह थयो के नहीं ? १६ अजित-
नो विवाह थया पछी तेमना पिता जितशत्रु राजाए
आज्ञा मागी हती ? १७ राज्य पाळतां अजितनाथने
रवयथी मांडीने केटला पूर्व थया हता ? १८ अजित-
ने वैराग्य थयो, त्यारे केवो विचार थयो हतो ?
संक्षेपमां समजावो. १९ प्रभुने वैराग्य थतां कया देव-
आव्या हता ? अने तेमणे शुं कह्युं हतुं ? २० अ-
नाथे वैराग्य थया पछी पोताना राज्य उपर कोनो

अभिषेक कर्यो हतो ? २१ वार्षिक दानमां भगवाने केटला सोनैयानुं दान कर्युं हतुं ? २२ प्रभुनी दीक्षाने समय कया मासमां, कया पक्षमां, कई तिथिमां अने कई नक्षत्रमां हतो ? २३ प्रभुने चारित्र लेतां कयुं ज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं ? २४ प्रभुनी साथे केटला राजाओए दीक्षा लीधी हती ? २५ अजित भगवाने पहेलुं पारणुं कोने घेर कर्युं हतुं ? २६ दीक्षा लीधा पछी छद्मस्थपणे प्रभुए केटलां वर्षो निर्गमन कर्यां हतां ? २७ प्रभुने केवळज्ञान क्यां थयुं हतुं ? २८ केवळज्ञाननो कयो दिवस हतो ? २९ अजितप्रभुना परिवारमां कया [illegible] केटला साधु हता ?

हिन्दके [illegible]

[illegible]

पाठ ८० मो.

अजितनाथ—भाग २ जो.

प्रभुनी देशना समाप्त थया पछी सिंहसेन नामना ना मुख्य गणधरे देशना आपी हती. गणधरनी देशना र्ण थया पछी सर्व देवताओ अने सगर राजा पोत-ाने स्थाने चाल्या गया हता.

भगवान् श्री अजितनाथना तीर्थनो अधिष्ठायक ायक्ष नामे एक यक्ष थयो हतो, तेने चार मुख हतां, ोनुं वाहन हतुं, अने वर्ण श्याम हतो. तेना आठ मां जमणी तरफ वरद मुद्रा, मुद्गर, अक्षसूत्र, अने —ए चार अने डावी बाजु तरफ बीजोरुं, अभय मुद्रा, श, अने शक्ति हता. अजितबला नामे प्रभुनी शा-देवी थइ हती. ते सोनेरी रंगनी देवीने चार हाथ अने ते लोढाना आसनपर बेठी हती. जमणी तर-बे हाथमां वरद मुद्रा अने पाश, अने डावी तर-बे हाथमां बीजोरुं, अने अंकुश तेणीए धारण छे.

सगरचक्रीए ज्यारे विनीतानगरीना राज्य उपर पो-पौत्र भगीरथने बेसार्यो हतो, त्यारे अजितनाथ प्रभु विनीतानगरीना उद्यानमां समोसर्या हता. ते खबर

सांभळी सगर पौत्र भगीरथने साथे लइ प्रभुने वांद[illegible] गयो हतो. सगरे प्रभुने वंदना करी स्तुति करी हती. अने प्रभुनी देशना सांभळी हती. देशनाने अंते तेणे प्रभुने दीक्षा लेवाने विनंति करी, एटले प्रभुए तेने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी हती, जेथी सगर राजाए [illegible] जननी साथे प्रभुनी पासे दीक्षा लीधी हती.

केवळज्ञान उत्पन्न थयुं, त्यारथी पृथ्वीपर विहार करता एवा प्रभुने पंचाणुं गणधरो थया हता. तेमना परिवारमां एक लाख मुनि, त्रण लाख ने त्रीस हजार साध्वी, [illegible] हजार ने [illegible] चौदपूर्वी, एक हजार ने [illegible] पांचसो मनःपर्यव ज्ञानी, नव हजार ने पांचसो [illegible] ज्ञानी, वावीश हजार केवळी, बार हजार ने [illegible] वादी, वीश हजार ने पांचसो वैक्रिय लब्धिवाळा, [illegible] ने [illegible] हजार श्रावक, अने पांच लाख ने [illegible] हजार श्राविकाओ हती. दीक्षा कल्याणकथी [illegible]

[illegible]

साथे मळेलो हतो, ते समये प्रभु निर्वाण पदने पाम्या हता.

प्रभुने कौमार अवस्थामां अढार लाख पूर्व थया हता, राज्य स्थितिमां एक पुर्वांगे सहित त्रेपनलाख पूर्व गया हता, छद्मस्थावस्थामां वार वर्ष प्रसार थयां हतां, अने केवळज्ञानमां पूर्वांगे[1] तथा वार वर्षे वर्जित एवा लक्ष पूर्व थया हता. एकंदर तेमणे बोंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. हतुं. पहेला तीर्थंकर ऋषभदेवना निर्वाणथी पचाश लाख क्रोड सागरोपम जतां अजितनाथ निर्वाण पदने पाम्या हता. तेमनी साथे बीजा एक हजार मुनिओए पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं. तेओ पण केवळज्ञान प्राप्त करी, मोक्ष पदने पाम्या हता. सगर चक्रवर्त्ती पण केवली समुद्घात करीने क्षणवारमां प्रभुना पदने प्राप्त थया हता.

देवताओ प्रभुना मृत शरीरने शणगारी शिबिकामां बेसारी, गोशीर्षचंदननी चितामां लइ गया हता, त्यां अग्निकुमारे अग्नि कर्यो हतो, अने वायुकुमारे तेने प्रज्वलित कर्यो हतो. अस्थि विना प्रभुनी बीजी सर्व धातु बळी गइ हती. पछी मेघकुमार देवताए जळ वर्षावी, ते चिताने बुझावी हती. प्रभुनी उपरनी जमणी अने डाबी तरफनी दाढो शक्र अने इशान इंद्र लइ गया, अने नीचेनी बंने दाढो चमर अने बलि इंद्र लइ गया हता, बी-

१ पूर्वांग एटले चोराशी लाख वर्ष.

ना इंद्रोए प्रभूना दांत लीधा, अने देवताओए बीजा [illegible] हतां. इंद्रोए पोतपोतानी सुधर्मा सभानी [illegible] माणवक नामना स्तंभोनी अंदर वज्रमय गोळाकार दाबडाओमां जे प्रभूनी दाढो मुकी, तेनी गंध, पुष्प, अने धूपथी पूजा करवा लाग्या.

सारांश प्रश्नो.

१ प्रभुना देहना संस्कारनुं शुं नाम ? २ [illegible] [illegible] प्रभुनी [illegible] ? [illegible] करे छे ? ३ [illegible] प्रभुना [illegible] ? [illegible] ४ [illegible]

[illegible]

स्थावस्थामां अने केवळज्ञानमां केटला केटला पूर्व के वर्ष थयां हतां ? १३ एकंदर तेमणे केटला लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं हतुं ? १४ पहेला तीर्थंकरना निर्वाण पछी केटला सागरोपम जतां अजितनाथनुं निर्वाण थयुं हतुं ? १५ प्रभुनी साथे केटला मुनिओए पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं ? १६ देवताओए प्रभुनां मृत शरीरने शुं कर्युं हतुं ? १७ प्रभुनी चिता उपर देवताओए शुं शुं कर्युं हतुं ? १८ प्रभुनी उपरनी जमणी अने डावी तरफनी दाढो कया कया इंद्रो लइ गया हता ? १९ नीचेनी बे दाढो कया कया इंद्रोए लीधी हती ? २० प्रभूनां दांत अने अस्थि कोण लइ गया हता ? २१ ते दाढो इंद्रोए क्यां राखी हती ? २२ ते दाढोनी पूजा शेनाथी करता हता ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अधिष्ठायक, वरदमुद्रा, अक्षसूत्र, अभयमुद्रा, अंकुश, पर्षदा, संकेत, अग्रहार, अणुव्रत, धर्म अंगीठी, जिनोक्त, दाहशक्ति, दानशील, पुष्करवर द्वीप, दीक्षा कल्याणक, पूर्वांग, पादपोपगम अनशन, पूर्व, केवळी समुद्घात, मृत शरीर, शिबिका, चिता, अस्थि, वज्रमय.

पाठ ८१ मो.

अजितनाथ चरित्र विषे कविता.

मनहर छंद.

[illegible] इक्ष्वाकुना वंश मांहि,
[illegible] पिता छे [illegible];
[illegible] माता भव मांहि जिन नाथ,
[illegible]. १

[illegible],
[illegible];
[illegible],
[illegible]. २

[illegible]. ३

[illegible]. ४

सगरने राज्य आपी माघ शुदी नवमीए,
रोहणीमां चंद्रयोगे प्रभु व्रत धारता;
ब्रह्मदत्त तणे घेर पारणुं प्रथम करी,
उग्र तप आचरीने बार वर्ष काढता. ५

पोष मास तणी शुक्ल एकादशी तणे दिन,
केवळ धारण करी प्रभु थया केवळी;
समवसरण तणा खबर जाणीने त्यांहीं,
सगर नरेश आव्या वांदवा अतिवळी[१]. ६

सिंहसेन आदि गणधर थया गुणधर,
महायक्ष नामे थयो यक्ष तीर्थनायक;
नामे तो अजितवला शासननी देवी थयां,
सगरने व्रत विषे थया प्रभु स्हायक. ७

गणधर पंचाणुं ने एक लाख मुनिवर,
त्रण लाख ने हजार त्रीश साध्वीजी छे;
त्रिहजार सातसो ने चौद पूर्वधारी थया,
साडाचारसो[२] हजार मनपरयवी छे. ९

नव हजार ने वळी चारसो अवधि ज्ञानी,
वीश हजार ने चारसो वैक्रिय लब्धिना[३];
बे लाख ने अठाणुं हजार श्रावको थया छे,
पांच लाख पिस्तालीश हजार छे श्राविका. १०

---

१ अतिशय बळवान्.
२ एक हजार ने साडाचारसो मनःपर्यव ज्ञानी थया. ३ वैक्रिय लब्धिवाळा.

लाल पूर्व वर्षोनेरनुं आयुष्य पूर्ण करी,
पंच भुवन पंचमीए प्रभु शिव पामीआ,
गौतमविनयादर भावीने भजिए प्रभु,
पादरोरतन अनगनमां विरामिआ. ११

निशंक नीचेना शब्दोनी समजुति आपवी.

ववक, ववनी, निवाहिर, भोरवी, विवेनाद. रेरा, वहरोरतन, मनजन.

पाठ ८२ मो.

[illegible]—भाग [illegible] ो.

[illegible]

थया हता. ते शिवाय बीजी केटलीएक कळाओ तेओ अजितनाथ पासेथी शीख्या हता. ज्यारे सगरचक्री लायक उम्मरना थया, त्यारे तेमने उत्तम राजकन्याओनी साथे परणाववामां आव्या हता. पछी राजा जितशत्रुए अजितनाथने राज्यपद्वी, सगरने युवराजपद्वी आपी हती. अजितस्वामीए ज्यारे दीक्षा लीधी, त्यारे प्रभुनी आज्ञाथी विनीतानगरीना राज्य उपर सगरराजा आव्या हता. दीक्षा लीधा पछी अजितस्वामी एक वार विनीतानगरीना उद्यानमां समोसर्या, ते वखते देवताओ तथा तेमना इंद्रोनी साथे सगर राजा पण तेमां हाजर थया हता. इंद्रनी पछवाडे बेसीने सगरे प्रभुनी देशना सांभळी हती. प्रभुए देशना आपी, विहार कर्या पछी सगर राजाना शस्त्र मंदिरमां सुदर्शन नामे चक्ररत्न उत्पन्न थयुं हतुं. ते पछी सगर भावथी शुद्ध थइने चक्रनी पूजा करी, अने खड्गरत्नने धारण करी सारा मुहूर्त्ते गजरत्न उपर बेसी, दिशाओने तावे करवाने नीकळ्या हता. तेमनी साथे सेनापति दंडरत्नने लइने आगळ चाल्यो हतो. ते शिवाय सर्व उपद्रवने हरनार पुरोहितरत्न, दरेक मुकामे खानपान तथा मुकामनी सगवड करी आपनार गृहिरत्न, छावणी विगेरेनी मदद करनार वर्द्धकिरत्न, उपर तथा नीचे रक्षण करनार छत्ररत्न तथा चर्मरत्न, अने अंधकारमां रक्षण करनारा मणि अने कांकणीरत्न सगर चक्रीनी साथे चाल्या हता.

सगर राजा चक्रनी पछवाडे चालता पूर्व दिशा तरफ चाल्या हता. ते दिशामां तेने मागध तीर्थनी पासे उतार्यो वास्यो. त्यां गंगा नदीमां स्नान करी, तेने ते तीर्थना कुमारदेवनी उपर बाण नाख्युं. ते बाण उपर चक्रीना नामवाळा अक्षर वांची मागधपति आश्चर्यथी उठी भेट लईने चक्रीने शरणे आव्यो होतो. तेने भेटणां तेने स्वीकार्यां, ते ठेकाणे सगरे मोटो उत्सव कर्यो हतो. त्यांथी चक्रनी पाछळ सगर राजा दक्षिण दिशा गया, अने मार्गमां आवता राजाओने ताबे करी वरदा मानां, तेवी रीते पूर्व दक्षिण समुद्रना कांठे आवी ... तेने वरदाम तीर्थना नायक ... कुमारने ... थर थई रह्युं, अने तेणे ... करी ...

[illegible]

वीनुं आसन कंपी चाल्युं, अने ते देवी एक हजार ने आठ रत्नना घडा तथा वीजी उत्तम भेटो लइ, सगरचक्रीनी पासे हाजर थइ. सिंधुदेवीने तावे करी, चक्रवर्त्ती इशान दिशा तरफ कुच करी, वैताढ्य पर्वतना दक्षिण भागमां आव्या हता. त्यांना नायक वैताढ्य कुमारने तावे करी, तमिस्त्रा नामनी गुफा पासे आव्या हता, त्यां तेणे कृतमाल नामना देवने तावे करी दीधो हतो. पछी पोते त्यां रोकाइने पश्चिम दिशाना सिंधुना निष्कूटने जीतवा पोताना सेनापतिने अरधी सेना लइ मोकल्यो हतो.

सेनापति चर्मरत्नथी सिंधुने उतरी यवनद्वीपमां आव्यो, अने त्यां रहेला जुदीजुदी जातना म्लेच्छ लोकोने तेणे शिक्षा करी हती. ते शिवाय कच्छ देशना नायकोने तावे करी, जातजातनी उंची भेटो लइ, सिंधु उतरी ते पाछो चक्रवर्त्तीनी पासे आव्यो, अने ते वधी भेटो तेणे चक्रवर्त्तीने अर्पण करी हती.

सारांश प्रश्नो.

१ सगर चक्रवर्त्तीनो जन्म कइ नगरीमां अने कया वंशमां थयो हतो ? २ सगरचक्रीनो जन्म कया मासमां अने कइ तिथिए थयो हतो ? ३ सगरचक्रीनां माता पितानां नाम शुं हतां ? ४ जितशत्रु राजा सगरने शुं थता हता ? ५ जितशत्रु राजाए सगरने केवी पद्वी आपी

વી ? ૬ સગરરાજા વિનીતાનગરીના રાજ્ય ઉપર ક્યારે
આવ્યા હતા ? ૭ સગરરાજાના ગુરૂ મંત્રિનો પરાભવ
[illegible] ક્યારે કર્યું હતું ! ૮ સગરરાજાના દિગ્વિજયને [illegible]
[illegible] મોકલ્યા, ત્યારે તેનો સાથે ક્યાં ક્યાં [illegible]
યાં ? ૯ પુરોહિતરત્ન, ગૃહિરત્ન, વર્ધકિરત્ન, [illegible]
[illegible] અને [illegible] ચક્રવર્તીના [illegible]
[illegible] ? ૧૦ [illegible] પૂર્વ, દક્ષિણ, અને [illegible]
[illegible] ? ૧૧
[illegible] ? ૧૨
[illegible]
[illegible] ? ૧૩ [illegible]
[illegible] ? ૧૪ [illegible]
[illegible] ?

[illegible]

[illegible]

पाठ ८३ मो.

सगर चक्रवर्त्ती भाग २ जो.

सगरे एक वखते तमिस्रा गुफानां दक्षिण द्वारनां कमाड उघाडवानी सेनापतिने आज्ञा करी, तेथी सेनापतिए दंडरत्नथी ते द्वार उघाडी दीधां हतां. पछी सगरे हाथी उपर मणिरत्न मुकी, प्रकाश पाडी, ते गुफामां प्रवेश कर्यो हतो; त्यां वर्द्धकिरत्ननी मददथी निम्नगा अने उन्मगा नामनी बे नदीओ उतरी सगर राजा गुफानी बाहेर नीकळ्या. ते वखते आपात नामना भिल्ल लोकोओ चक्रवर्त्ती उपर हुमलो कर्यो हतो, पण तेओने सगरे क्षणवारमां ताबे करी दीधा हता. ते आपात जातना भिल्लोनी उपासनाथी मेघकुमारोओ चक्री उपर वरसादनुं तोफान मचाव्युं, तेने चक्रीए चर्मरत्न अने छत्ररत्नथी दूर करी दीधुं हतुं. छेवटे तेओने पण हारी जइ चक्रीने शरण आववुं पड्युं हतुं, अने पोते करेला अपराधनी क्षमा मागी हती. त्यारपछी चक्रीए सिंधुना पश्चिम निष्कूटने जीतवा सेनापतिने मोकल्यो, अने पोते त्यांज मुकाम नाखी रह्या.

ते पछी सगरचक्री इशानमां रहेला क्षुद्र हिमालयना देवने जीतीने रूपभकूट पर्वते गया हता, अने ते पर्वतना पूर्व भाग उपर " आ अवसर्पिणी काळमां हुं सगर नामे

शिक्षावाळा घोडा उपर बेसी फरवा नीकळ्या हता. ते तोफानी घोडो सगरने लइ आकाशमां उडी एक मोटा जंगलमां दोडी गयो, त्यां सगरराजा घोडानी लगामने मुकी कबजे राखी तेनी उपरथी कुदी पड्या हता. पछी चक्री पगे चाली आगळ गया, त्यां एक मोटुं सरोवर जोवामां आव्युं, तेमां न्हाइ, पाणी पी तेने कीनारे आसन कीधुं, त्यां एक सुंदर स्त्री जोवामां आवी हती. ते स्त्री वैताढ्य पर्वत उपर आवेला गगनवल्लभ नामना नगरना एक विद्याधर राजा सुलोचननी सुकेशा नामनी पुत्री हती, तेने जोतांज सगरराजाने मोह उत्पन्न थयो हतो. तेवामां कोइ सेवके आवी सगरराजाने जणाव्युं के आ सुकेशा आजथी तमारी स्त्री छे, तेनी रक्षा करो. रथनूपुर नगरना राजा पूर्णमेघे परणवाने माटे आ सुकेशानी मागणी करी हती. तेना पिताए पूर्णमेघने सुकेशाने आपी नहीं, एटले पूर्णमेघे सुलोचनने मारी नाख्यो, एटले आ स्त्रीनो भाइ सहस्रलोचन तेने लइने अहीं छुपी रीते रह्यो हतो. ते आजे तेने तमारो मेळाप थयो. पछी सहस्रलोचने आवी, ते सुकेशाने सगरराजानी साथे परणावी हती. त्यांथी सगरराजा वैताढ्य गिरि उपर आवेला गगनवल्लभ नगरमां आव्या हता, अने सहस्रलोचनने तेना राज्य उपर बेसारी विद्याधरोनो स्वामी कर्यो हतो, अने पछी पोते पाछा विनीतानगरीमां आव्या हता. ते वखते लोकोए मोटो उत्सव कर्यो हतो. ज्यारे सगर चक्रवर्त्ती

जंगलमां आवी चड्या हता ? जंगलमां सरोवरने कांठे शुं जोयुं हतुं ? सुकेशा कोण हती ? अने कोनी पुत्री हती ? तथा सुकेशाना पिता सुलोचनने शुं थयुं हतुं ? अने तेनो भाइ सहस्रनयन तेने जंगलमां शा माटे लाव्यो हतो ? १२ सगरचक्री ते सुकेशाने परणी क्यां गया हता ? १३ सुकेशाना भाइ सहस्रलोचनने चक्रीए शुं कर्युं हतुं ? चक्रवर्त्ति महाराणी सुकेशाने लइ विनीता नगरीमां आव्या, ते पछी देवताओए शुं कर्युं हतुं ? अने चक्रवर्त्तिपणाना अभिषेकनो महोत्सव क्यां सुधी चाल्यो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

उपासना, अवसर्पिणीकाल, नवनिधि, समृद्धि, अचळी शिक्षावाळा, अभिषेक.

पाठ ८४ मो.

सगर चक्रवर्त्ति—भाग ३ जो.

सगरराजाने वधी मळी चोसठ हजार स्त्रीओ हती. तेओनाथी साठ हजार पुत्रो थया हता. तेमां सौथी मोटो

भरते आ गिरिने आठ आठ पगथीयां करेलां छे, तेथी आ गिरिनुं नाम अष्टापद पडयुं छे. ए बधी हकीकत पोताना मंत्रिओ पासेथी जाणी लीधी. पछी तेमणे त्यां भरतना जेवुं बीजुं एक मोटुं चैत्य करावानी धारणा करी. सर्वे एकठा थइने दंडरत्न हाथमां लइ, चार हजार गाउ सुधी उंडी एक मोटी खाइ खोदवा मांडी. ज्यारे आवी उंडी खाइ खोदवा मांडी, एटले नीचे आवेला नागकुमार देवताना मंदिरो भांगवा लाग्यां. ते मोटो उपद्रव जोइ, नागलोकोमां भारे त्रास थइ गयो, एटले नागकुमारोनो राजा ज्वलनप्रभ बाहेर आव्यो, अने तेणे सगरना कुमारोने समजावी तेम करतां अटकाव्या. त्यारे जन्हुए कह्युं के, अमारा पूर्वजना आ जुना पर्वतने अचल करवा माटे अमारो प्रयत्न हतो, ते छतां आ दंडरत्ननी मोटी शक्तिथी तमने नुकशानी थइ होय तो क्षमा करो, अमे फरीथी तेम करीशुं नहीं. पछी नागराज शांत थइ पाछो गयो. पछवाडे ते खाइ पाणीथी पूरवानो विचार करी, तेओ गंगा नदीने त्यां लाव्या, अने तेनाथी ते खाइ पूरवा मांडी. जन्हुकुमार गंगा नदी खेंची त्यां आव्यो, तेथी गंगानुं " जान्हवी " एवुं नाम पडयुं. गंगाना जळथी पाछी नागकुमारोने मोटी हरकत थइ, एटले नागराज ज्वलनप्रभ कोपथी बाहेर आव्यो, अने पोतानी झेरवाळी द्रष्टिथी सगरना साठ हजार कुमारोने बाळी भस्म करी दीधा, तेथी चारे तरफ हाहाकार थइ रह्यो. आ

घरमांथी मने तेवो अग्नि मंगावी आपो, जेथी मारो पुत्र जीवतो थाय.

पछी सगरराजाए तेने समजाव्यो के, अरे भाइ! तेवुं घर कोइनुं पण होय नहीं. दरेक माणसने माथे काळ फरे छे, माटे तारे पुत्रनो शोक करवो न जोइए. पछी ब्राह्मणे सगरराजाने जणाव्युं के, राजा! तमे बीजाने बोध आपो छो, पण जो तमारे तेवो अनुभव थाय, तो आवो बोध याद राखजो. पछी तेणे कह्युं के, राजा! तमारा साठ हजार पुत्रो बळीने भस्म थइ गया छे, अने तमारा सामंत, मंत्रि विगेरे मरवाने तैयार थता हता, तेमने धीरज आपवानी खातर आ बधो देखाव करवामां आव्यो छे. राजा सगर ते सांभळी घणो खेद पाम्या हता. तेने ब्राह्मणरुपे थयेला ते इंद्रे राजानो मोह तोडवाने माटे केटलाएक दाखला आप्या हता, जेथी सगरराजानो शोक समाइ गयो हतो. पछी अष्टापद पर्वतनी आसपास रहेनारा लोकोए आवी फरीयाद करीके खाइने पूरतां बाहेर उछळेली गंगा नदी अमारा गामडानो नाश करे छे. पछी सगरे पोताना मोटा पुत्र जन्हुना भगीरथ नामना पुत्रने आज्ञा करी हतो के, पुत्र! तुं दंडरत्न लइने त्यां जा, अने तेवडे गंगाने खेंची पूर्व समुद्रमां मेळवी दे. पितामहनी आज्ञाथी भगीरथ अष्टापद गिरि पासे आव्यो अने अष्टम तप करी, तेणे नागकुमारोना राजा ज्वलनप्रभने प्रसन्न करी, तेनी रजा लइ गंगाने दंडरत्नथी

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यत्नकळा, निपुण, विहार, स्वेच्छा, भवितव्यता, पूर्वज, देह प्रमाणवाळी, उपद्रव, अचळ, सामंत, मंडलेश, अग्निहोत्री, मंगलिक, पितामह, प्रसन्न.

पाठ ८५ मो.

सगरचक्री भाग ४ थो.

भगीरथे पोताना बळी गयेला साठ हजार काकाओनां अस्थिने गंगाना जळमां नाखी पवित्र कर्यां हतां. ते रीवाज हजु सुधी लोकोमां चाले छे. ज्यारे भगीरथ त्यांथी पाछो फर्यो, त्यारे रस्तामां एक झाडनी नीचे रहेला केवळी तेना जोवामां आव्या हता. केवळीने नमस्कार करी भगीरथे पुछ्युं हतुं के, मारा काका एकी साथे केम मृत्यु पाम्या ? तेना उत्तरमां त्रण काळने जाणनारा केवळी भगवाने[1] कह्युं के, भगीरथ ! पूर्वे एक मोटो संघ तीर्थयात्रा करवाने नीकळ्यो हतो. ते नजीकना[2] कोइ गाममां कुंभारना घरनी पासे उतर्यो. संघनी साथे

---

[1] शत्रुंजय महात्म्यमां अजितनाथ प्रभुए सगर चक्रवर्त्तीने कह्यं छे, एम लखेल छे. [2] शत्रुंजय महात्म्यमां एक लुटारु टोळी हती, तेमां एक कुंभार हतो, इत्यादिक रीते लखेल छे.

करी, अने दीक्षा आपवानी प्रार्थना करी. प्रभुए ते वात मान्य करी, एटले भगीरथे पोताना पितामहनो नीकळवानो मोटो वरघोडो चडाव्यो, अने प्रभुनी पासे आवी, तेमने मुनिनो वेष अपाव्यो. सगरराजाए ज्यारे दीक्षा लीधी. त्यारे तेनी साथे सामंत अने बीजा मंत्रीओए पण दीक्षा लीधी हती. पछी प्रभुए देशना आपी सगरराजा विगेरेने साथे लइने त्यांथी विहार कर्यो हतो, अने भगीरथ विगेरे राजाओ अने देवताओ पोतपोताने ठेकाणे चालया गया हता.

सगर चक्रवर्त्ती प्रभुनी साथे रही बार अंग भण्या हता. तेमणे सारी रीते चारित्रने पाळ्युं हतुं. " हुं चक्रवर्त्ती अने तीर्थंकरनो भाइ छुं, " एवो तेमणे कदी पण गर्व राख्यो न हतो, अने भारे आकरा परीषह सहन कर्या हता. सगरराजाए पाछळथी दीक्षा लीधी हती, पण तपस्या अने भणतरना भारे गुणथी तेओ मोटेरा मुनिओथी पण अधिक थइ पड्या हता. छेवटे घातिकर्मनो क्षय थवाथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं.

सारांश प्रश्नो.

१ भगीरथे पोताना काकाओनां अस्थि शेमां नाख्यां हतां ? २ भगीरथ गंगा लावी पाछा फर्या, त्यारे रस्तामां तेमणे कोने जोया हता ? अने तेमने शुं पुछयुं

હતું ? ૩ નરોત્તમ અને મલ્હારરાવના બાપ હતા પૂર્વે તું કોણ હતા ? તેઓ શું કામે આવ્યા વળી શું હતા ? ૪ નરોત્તમ ગાયકવાડ વળી નવો હતો ? ૫ કેદમાં તેને નરોત્તમે કેમ રોકી રાખ્યો ન હતો ? ૬ નરોત્તમને સાકરામે શિવાજી ગાયકવાડને શું કર્યું હતું ? ૭ મલ્હારરાવનો બાપ કોણે કોણે કેદમાં નાખ્યા હતા ? ૮ મલ્હારરાવ વડોદરાને શું બોલ્યા હતા ? ૯ ગાયકવાડ કોણ ગાયકવાડનો વડ મદદ આવીને પડ્યા હતા ? ૧૦ ઇંગ્રેજ સરકારને શું થયું હતું ?

जैन धर्म पहेली चोपडी.

जैन धर्म वांचनमाळानी पहेली चोपडीना विद्वान मुनिराजो अने न्युसपेरवाळाओना अभिप्रायो मांहेना थोडा अभिप्रायो अहीं आपेला छे.

शिवाजी विजय   ता. १८-८-०६

जैन धर्मना तेम इतरने पण ए धर्मनुं शरुआतनुं सारुं ज्ञान मळे, एवुं प्राचीन सिद्धांतो साथेनुं वांचनमाळानी शैली उपर लखाएलुं आ उत्तम पुस्तक अमने पालीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी मळ्युं छे, ने तेनी सुंदर छाप उंचा कागळोना मोटा कदनां एकसो साठ पानां तथा पाकां कापडी पुंठां छतां छ आनानी कीमते एक अमूल्य पुस्तक छे. दरेक जैन घरमां, तेम बाळकना हाथमां राखवा जोग छे. पर्युसणना तहेवारोमां प्रभावना आपी, ज्ञान वस्तु बाळकने भेट अपाय, तो घणीज योग्य शरुआत अने सखावत थशे.

वाक्य रचनाथी मुश्केल करी नाखे छे, तेवुं आ पुस्तकमां थयेल नथी. बल्के बाळकोने तुरत समजाय, एवी व्यवहारमां वपराती भाषा राखवामां आवी छे. उपर दर्शावेल कारणोथी आ पुस्तकने अमे आवकार आपीए छीए. तेनी साथे तेना लेखकने तेमज प्रगटकर्त्ताने अभिनंदन आपीए छीए.

ली. सेवक,

CHUNILAL CHHAGANCHAND.

ओनररी मेनेजर,

श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाळा.

मुंबइ समाचार.

नवीन पद्धति उपर तैयार करवामां आवेली श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणा खातेना श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी श्री जैन धर्म पहेली चोपडी प्रगट करीने शाळामां शीखता विद्यार्थीओने धार्मिक ज्ञान जाणवा माटे ठीक सगवडता करवामां आवी छे. आ पुस्तकनी योजना एवी सुगम रीते करवामां आवी छे के, साधारण भाषाज्ञान धरावनारा गुजराती पांचमा धोरण सुधीना जैन विद्यार्थीओ पोताना धर्मनां प्राथमीक तत्वो

केळवणी पुस्तक १८ मुं, अंक ११ मो,

संवत १९६२ भादरवो.

श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी प्रसिद्ध थयेली छे. किम्मत रु. ०–६–० छे, ते पुस्तकना प्रमाणमां घणीज ओछी छे. लीपी बाळबोध छे, अने भाषा सुगम छे. बाळकोने अने अन्यने पण जैन धर्म संबंधी कांइ ज्ञान आपवानी तथा खास करीने नीति धर्म समजाववानी एमां व्यवस्था उत्तम छे. धर्मना प्रसार माटे बाळकोना हाथमां सहेलथी आपी शके, अने तेओ सहेलथी समजी शके, एवां पुस्तकोनी घणी अगत्य छे. जैन धर्मनी शाळाओमां चलाववाने आ पुस्तक उपयोगी थशे, एम लागे छे.

जैनोदय पुस्तक १ लुं अंक १२ मो आश्विन.

श्री जैन धर्म पहेली चोपडी—आ पुस्तक श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी तेमनी उच्च श्रेणीनी वांचनमाळाना प्रथम पुस्तक तरीके बाळबोध लिपिमां बहार पडेल छे. सदरहु पुस्तकनी प्रस्तावनामां लखेल छे के—" ग्रंथावळीनो मुख्य उद्देश जैनोना द्रव्यानुयोग, चरणकरणानुयोग, अने कथानुयोगना ग्रंथो अने जैन साहित्य वांचवा तरफ अभिरुची उपजाववी ते छे. " आ

जोवा खरीदवा खास आग्रहपूर्वक भलामण छे. इत्यलम्.

शांति.

आ वर्गनां कार्योने श्रीमंतोए सहायभूत थवुं जरुरनुं छे.

निरुपराधी मुनि नीतिविजयजीना धर्मलाभ.

वी. स. २४३३ मागशर वदी १० सोमवासरे.

जैन धर्म पहेली चोपडी—उपरोक्त पुस्तक पण उपरोक्त वर्ग द्वारा प्रसिद्ध थयेलुं अमने अभिप्रायार्थे मळेल छे, जे स्वीकारतां हर्ष थाय छे.

वर्गनो प्रयत्न योग्य छे. चालता समयनी खामी आ पुस्तकथी पुराइ छे. विद्वान मुनि महाराजो वि. नी. समातथी कार्य केवुं थाय छे, तेनो नमुनो आ पुस्तक छे.

आस्तिक जैन अभ्यासीने धर्मज्ञानना उत्तम साधन रुप छे. जैन शैलिथी विरुद्ध एक वाक्य पण अंदर नथी, जे वाचतनुं मान चारित्रविजयजी महाराजने आभारी छे. बीजा भागो जलदी वहार पाडी, जैन वर्गने आश्रय आपवानी उत्तम तक छे.

वधारेमां पुस्तक खंतथी छपायेल जेथी शुद्धि पत्रक नथी, ए पण वर्गनी चडती दशानुं कारण छे.

श्री पार्श्वजीन प्रणम्यः

पाटण खेतरवाशीपाडा,

आशो शुद ४ शनीवार.

श्री पाटणथी मुनि मोहनविजयजी तथा चारित्रविजयजी आदि ठाणाओ जोग. मु. पालीताणा मध्ये देवगुरु भक्तिकारक प्रभावक सुश्रावक शिवजीभाइ देवशी आदि वर्गना मेम्बरो जोग धर्मलाभ पहोंचे.

विशेषमां तमारा तरफथी श्री जैन धर्म पहेली चोपडी मळी छे, जेमांना दरेक पाठना विषयो एटला उपयोगी छे के, आ चोपडी दरेक पाठशाळामां ग्रहण करवामां आवे तो, हालना जमानाना उछरती वयना युवान वाळको घणुं सारुं शिक्षण प्राप्त करे, एम हुं खातरीथी कही शकुं छुं. मुंबइनी जैन कोन्फरन्स तरफथी जैन सीरीझ तैयार करवा माटे जे आर्टीकल प्रगट थयो छे, ते आर्टीकलना संबंधमां कोन्फरन्सना सेक्रेटरीओ जैन सीरीझ तैयार करवामां आवी चोपडीनो समावेश करशे, तो ते अति श्रेय गणाशे. आवी प्रथमनी पहेली चोपडी माफक धोरणोने अनुसार बीजी चोपडीओ बहार पाडवाने आ वर्ग शक्तिमान थाओ, एम हुं अंतःकरणथी इच्छुं छुं.

एज. देवदर्शने याद करशो, धर्म साधना विशेषे करता रहेशो. प्रीति सदर.